पुस्तक-प्राप्ति-स्थान—
श्री उपाध्याय आत्माराम जैन लायब्रेरी
जैन स्थानक, लुधियाना

प्रथमावृत्ति	श्री वीर संवत् २४७६	मूल्य
	श्री विक्रम सं० २००६	
१०००	ईस्वी सन् १९४९	१।।।)

मुद्रक:—
श्री आत्मसिंह के प्रबन्ध से
गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस,
ब्यावर में मुद्रित.

दो शब्द

जैनेन्द्र प्रवचन में स्वाध्याय का बड़ा मौलिक वर्णन उपलब्ध होता है। जैनेतर धर्म शास्त्रों में भी स्वाध्याय विशिष्ट स्थान को प्राप्त है किन्तु स्वतः प्रमाणभूत जैन आगमों में तो इसका इतना विलक्षण गौरव सन्निहित है कि इसके विशद वर्णन ने जैन-साहित्य के काफी भाग को रोक रक्खा है। स्वाध्याय स्वल्प अक्षरों का समुदाय होने पर भी महान् विस्तृत अथ च गंभीर अर्थ का द्योतक है। स्वाध्याय जीवन की वास्तविकता को उपलब्ध करने के लिये सर्व प्रथम अनुभूत साधन है। स्वाध्याय विद्यमान होते विचारे अज्ञान को तो दबे पांव भागना होता है। श्री उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है:—

सज्झाएणं भन्ते ! जीवे किं जणइ ?

सज्झाएणं जीवे, नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥

(उत्तराध्ययन २९, सूत्र १८)

इस आगामी पाठ का भावार्थ यह है:—

अनगार गौतम ने चरम तीर्थंकर भगवान् महावीर से पूछा:-

भदन्त ! स्वाध्याय से जीव किस फल को प्राप्त करता है ?

भगवान् बोले—गौतम ! स्वाध्याय से जीव ज्ञानावरणीय कर्म (अज्ञान) का क्षय कर लेता है।

प्रकृति के एक दृश्य से स्वाध्याय का स्वरूप अधिक स्पष्ट हो जाता है। वर्षाऋतु में सूर्य को मेघ घेर लेते हैं, सूर्य की किरणे मेघों के घेरे से आच्छादित हो जाती हैं। सूर्य के प्रकाशपुञ्ज होने पर भी संसार में अंधकार व्याप्त हो जाता है। संसार सूर्य के दर्शन के लिये व्याकुल हो उठता है। अकस्मात् उसी समय पवन का प्रचण्ड वेग आगमन करता है। सूर्य को ढकने वाले काले २ भीषण मेघों को तितर बितर कर डालता है। पवन से आहत मेघों के भाग जाने पर सूर्य अपनी दिव्य किरणों से पूर्व की भांति फिर संसार को प्रकाशमान करता हुआ अंधकार का ध्वंस कर डालता है और तब संसार में शांति का संचार करता है।

सूर्य आत्मा है, मेघ समूह है ज्ञानावरणीय कर्म (आत्मा की ज्ञान-ज्योति को आवरित करने वाला कर्म-मल) तथा पवन (वायु) है स्वाध्याय।

आगमों में स्वाध्याय के ५ भेद हैं। १ वाचना, २ प्रतिपृच्छना, ३ परिवर्तना, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा। शास्त्रों का पठन-पाठन वाचना है। सूत्रार्थ में सन्देह उत्पन्न होने पर उसकी निवृत्ति के लिये जो विनयपूर्वक शंका समाधान के रूप में चर्चा की जावे उसको प्रतिपृच्छना कहा जाता है। पढ़े हुए सूत्रार्थ या सूत्र पाठ का पुन: २ आवर्तन करना परिवर्तना

है। प्रवचन की प्रभावना करने वाली धार्मिक कथा का नाम धर्म-कथा है।

मनोगत अनुकूलता का नाम सुख है और मनोगत प्रतिकूलता का नाम दुःख। सुख सब को इष्ट है, प्रिय है, किंतु दुःख अनिष्ट है, हेय त्याज्य है। सुख को सभी चाहते हैं, और सुख प्राप्ति ही सब के जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

कार्य को सिद्ध करने से पूर्व कारण की विशिष्ट शोध आवश्यक होती है। कारण में यदि दूषण है तो कार्य निष्पन्न होना असंभव है। स्थानक (उपाश्रय) में जाने का इच्छुक यदि दुकान की तर्फ आ रहा है तो उस का स्थानक में उपस्थित होना कठिन है। इसी प्रकार आनंदनगर का पथिक यदि दुःखनगर की ओर चल दे तो वह उस अनुपम आनंद को कैसे उपलब्ध कर सकेगा? सारांश यह कि सुख भी एक कार्य है। उस की सिद्धि के लिये किसी विशिष्ट कारण की आवश्यकता है जो विशिष्ट कारण सुख का जनक होगा, उसका दुःख नाशक होना स्वाभाविक है।

दुःख नाश के अनेकानेक कारणों में से स्वाध्याय भी एक विशिष्ट कारण है। आगम इस की विशिष्ट कारणता के लिये साक्षी दे रहा है। उत्तराध्ययन में लिखा है—

॥ सज्झाए वा सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

(अध्यय० २६, गा० १०)

इस का भावार्थ यह है—कि स्वाध्याय सर्व दुःखों का

विमोचक है। अर्थात्—स्वाध्याय शील व्यक्ति सर्व दुःखों से छूट जाता है।

सारांश यह हुआ कि स्वाध्याय आत्म-विकास का तथा सुख का अनुपम सफल साधन है। अतः सुखाभिलाषी मानवीय प्राणी को यथाशक्ति स्वाध्याय करना चाहिये, और दूसरो को स्वाध्याय करने के लिये प्रेरित करना चाहिये।

स्वाध्याय को अग्नि के तुल्य भी माना गया है। जिस प्रकार अग्नि सुवर्णगत मल को विनष्ट कर डालती है, इसी भांति स्वाध्याय भी सुवर्ण रूप आत्मा के दुःखरूप मल को क्षीण कर डालना है। दूसरे शब्दों में स्वाध्याय सुखप्राप्ति का शिघ्रजन सम्मत सर्व प्रथम साधन है और दुःख—नाश के लिये अपूर्व अनुभूत दिव्य प्रयोग।

स्वाध्याय का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ सद् अध्ययन है। किन्तु आज इसका प्रयोग पठन, पाठन में ही किया जाने लगा है। स्वाध्याय का यह अर्थ, असंगत, अनुचित्त तथा आगमों से विरुद्ध है। आगमों का "स्वाध्याय सब दुःखों का विमोचक है" यह वाक्य ही उस अर्थ का स्पष्ट विरोध कर रहा है। कारण यदि पठन पाठन ही स्वाध्याय है तो दुर्गति में पहुँचाने वाला असद्ग्रन्थों का पठन-पाठन भी तो स्वाध्याय है। ऐसा स्वाध्याय भला सर्व दुःखों का विमोच कैसे हो सकता है? अतः स्वाध्याय का सद् (उत्तम पाठ्यसामग्री का) अध्ययन

यह अर्थ युक्तिसंगत तथा आगमानुमोदित प्रतीत होता है। अथवा स्व आत्मविषयक अध्ययन भी स्वाध्याय कहलाता है।

मेरा तो यह वैयक्तिक विश्वास है कि यदि समाज में स्वाध्याय का पर्याप्त प्रचार हो, और चतुर्विध संघ का प्रत्येक सदस्य प्रातः या सायं अथवा किसी भी निश्चित समय में सारे परिवार को एकत्रित कर स्वयं स्वाध्याय करे और परिवार से कराए या स्वयं परिवार को तत्त्वज्ञान सुनाए तो शीघ्र ही समाज में जीवन का संचार हो सकता है। स्वयं स्वाध्याय न करके दूसरों में स्वाध्याय प्रचार की भावना रखना व्यर्थ है। स्वाध्याय से तत्त्वज्ञान होगा, तत्त्वज्ञान से धर्म-प्रचार संभव है। आज समाज में यह भावना जोरों पर है-धर्म का प्रचार हो। किन्तु समाज 'दूसरे का शिक्षक बनने से पूर्व अपने को विद्यार्थी बनाना ही होता है।' इन विचारों का कम आदर करती है। जब तक स्वयं धर्म को अपनाया न जाए, तो दूसरों को कहने का क्या अधिकार है? समाज स्वयं तो स्वाध्याय से कोसों दूर रहे और आशा यह रक्खे कि हमारे धर्म का प्रचार हो! ऐसे काम कैसे चल सकता है?

हमारी समाज में स्वाध्याय का गला बहुत बुरी तरह से घोटा जाता है। इसी का कुपरिणाम है कि शास्त्रों में ज्ञान निधि सन्निहित होने पर भी समाज ज्ञानविभूति से हाथ धो बैठी। और अपना भविष्य अधकार पूर्ण कर बैठी है। गिर कर संभलना भी बुद्धिमत्ता है। यदि आज भी समाज उ[illegible]

चार मल का त्याग कर दे और अपने को स्वाध्याय जैसी महान् दिव्य अपूर्व विभूति से ओतप्रोत कर ले तो शीघ्र ही समाज को आशातीत लाभ की उपलब्धि हो सकती है।

जीव, अजीव, पुण्य, पाप आदि तत्वों का प्रतिपादक विशाल काय-ग्रन्थों के अध्ययन का नाम ही स्वाध्याय नहीं है। जहां आत्म-विकास का विवरण हो आत्मा सम्बन्धी चर्चा हो अथवा परमात्मा बनने वाली आत्माओं का वर्णन हो उन पुस्तकों का सम्यग् अध्ययन ही स्वाध्याय है। पुस्तक गत महानता या लघुता का स्वाध्याय में कोई स्थान नहीं।

स्तोत्रों का जाप करना-पाठ करना भी स्वाध्याय है। महापुरुषों की प्रशंसात्मक गुणराशि का गान स्तोत्र है। स्तोत्रों में महापुरुषों का गुण-कीर्तन होता है। महान् आत्माओं के गुणों का मनन भी स्वाध्याय की परिभाषा में अन्तर्हित हो जाता है। भावों की उत्कृष्टता से किया हुआ स्वाध्याय मोक्ष-दाता होता है।

हर्ष का स्थान है कि हमारी समाज में अभी तक स्तोत्र-पाठ की प्रणाली विनष्ट नहीं हो पाई है। पुरुष-समाज की अपेक्षा महिला-समाज में यह प्रथा विशेषरूप से प्रचलित है। किन्तु इसका (स्तोत्र-पाठ का) आदर दोनों में पर्याप्त है। होना भी चाहिये। महापुरुषों के नाम-संकीर्तन से आत्मविकास में सहायता मिलती है। दुर्बल मन सबल होता है। जीवन की कुछ घड़ियां सावद्य-प्रवृत्ति से पृथक् रहती हैं। समयान्तर में मन

की कालिमा भी नष्ट होनी आरंभ हो जाती है। मन का विशुद्ध होना ही मोक्षमंदिर के सोपान पर आरोहण करना है।

प्रस्तुत पुस्तक में स्तोत्रों का संग्रह है। यूं तो स्तोत्र-संग्रह अनेकों प्रकाशित हो चुके हैं, किंतु उन से स्वाध्यायशील सज्जनों की तृप्ति नहीं हो पाती है। सम्पादन आदि का सुंदर न होना ही इसमें महान् कारण रहता है। प्रस्तुत पुस्तक में यथामति इस त्रुटि को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

पुस्तक का नाम नित्य-पाठ-माला है। नाम अन्वर्थक है। अत नाम के अनुसार यदि इस का नित्य पाठ भी किया जाए तभी इस की सार्थकता है। प्रेमी पाठकों से पूरी २ आशा है कि वे मेरी इस भावना को अवश्य पूर्ण करने का अनुग्रह करेंगे।

नित्य-पाठमाला का संकलन अथ च सम्पादन औचित्य-पूर्ण हुआ है या नहीं? इस संकलन से भावुक, व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा या नहीं होगा? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर नित्यपाठ--माला का भविष्य देगा।

एक विनम्र निवेदन अवश्य करूंगा, कि नित्य-पाठमाला में जिन स्तोत्रों का संकलन है, भिन्न २ प्रान्तीय कवि-महानुभावों द्वारा उन का निर्माण होने से स्तोत्रों की भाषागत विभिन्नता स्वाभाविक है। भिन्न २ भाषाओं का पर्याप्त बोध न होने के कारण यदि कहीं भावों की अनभिज्ञता से दोषावह स्थान प्रतीत हो तो सहृदय गुणग्राही विचारशील पाठक उसे सुधार कर पढने का अनुग्रह करें और उस भूल से मुझे सूचित भी करें।

इस पुस्तक में तीन विभाग किये जा सकते है। आवश्यक प्रतिक्रमण, स्तोत्रसंग्रह, २५ बोलका थोकड़ा। आवश्यक प्रतिक्रमण प्रायः अनुपलब्ध है। अतः इस का नित्य-पाठमाला में संकलित करना उचित समझा गया। थोकड़ा भी शास्त्रीय-ज्ञान के लिये आवश्यक होने से साथ में दे दिया गया है।

अन्त में मै अपने ज्येष्ठ-गुरु-भ्राता संस्कृत-प्राकृत विशारद पण्डित श्री हेमचंद्रजी महाराज का, तथा बहुसूत्री परम-स्नेही श्री फूलचंदजी का अत्यन्त आभारी हूँ कि इन्होंने पुस्तक-सम्पादन में मेरा पूरा २ हाथ बँटवाया है।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

श्रावण कृष्णा तृतीया २००५
लुधियाना

ज्ञानमुनि
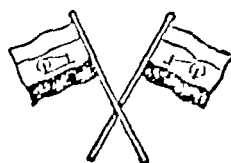
कृतज्ञता-प्रदर्शन

नित्य-पाठमाला के प्रकाशन में अधिकाधिक व्यय बहिनों की ओर से हुआ है। इन में लुधियाना की बहिनें भी हैं और लुधियाना से बाहर अमृतसर आदि की भी। बहिनों का यह धार्मिक कार्यों में प्रोत्साहन प्रशंसनीय है, अथ च आदरणीय है। अन्य महिलाओं तथा धनिकों को इन आदर्श महिलाओं का अनुसरण कर अपने में कर्त्तव्य-पालन की भावना का निर्माण करना चाहिये।

दात्री बहिनों का नाम प्रकाशन होना चाहिये। इस भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। नाम-प्रकाशन न करने का कारण हमारी विवशता है। हमने दात्री बहिनों से अत्यन्त आग्रह किया कि नाम अवश्य प्रकाशित होने चाहिये, किन्तु हमें जब भी इसका उत्तर मिला तो नकारोपन्यास में ही मिला। नाम-प्रकाशित का आग्रह होने पर भी आज्ञा न मिलने के कारण हम उन दात्री-बहिनों की पावन नामावली प्रकाशित करने से विवश हैं और बहिनों के इस उदार मानस के लिए हम धन्यवाद के साथ २ उनको बधाई भी देते हैं।

यह ठीक है कि नित्य पाठमाला के इस रूप में प्रकाशित होने का श्रेय हमारी बहिनों को है, किन्तु इनसे अधिक श्रेय गणावच्छेदिका परमपूज्या श्री चन्दाजी म० की परमसुविनीता शिष्यानुशिष्याएँ संस्कृत, प्राकृतज्ञा विदुषी श्री लज्जावतीजी म० तथा समयज्ञा श्री सौभाग्यवतीजी म० को हैं, क्योंकि इन्हीं के कृपा-पुञ्ज से तथा पावन सदुपदेशों से इन बहिनों को धार्मिक अनुष्ठानों में प्रोत्साहन मिला है। इन्हीं की कृपा से ये इतनी योग्य हो सकी हैं कि आज के आत्मश्लाघी जैसे युग में दान देकर भी अपने को गुप्त रक्खा जाए तथा नाम प्रकाशन से भी पूर्ण संकोचशील बना जाए अतः हम महासतियों के चरणों में भी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। जिनकी कृपा से हमारी बहिनें कुछ जागृति में आईं।

जैन महिला समाज की नायिका जैन गर्ल्स हाई स्कूल, लुधियाना की प्रिंसिपल बाल-ब्रह्मचारिणी बहिन देवकीदेवीजी जैन के भी हम कृतज्ञ हैं। इन्होंने भी नित्य पाठमाला के प्रकाशन में पर्याप्त सहायता दी है। सेठ बनसीलालजी अमरचन्दजी जैन शिमला निवासी ने 101) दान दिया है। इनका भी हम आभार मानते हैं।

नित्य पाठमाला के अन्त में एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। उसमें कुछ सांकेतिक पाठों का संग्रह है। इन को मंत्र भी कहा जाता है। मन्त्रों में शक्ति का सर्वथा अभाव है, ऐसा तो हमारा विश्वास नहीं है, किन्तु आजकल जो मंत्र हमारे सामने

आते हैं, उनका विधिविधान ठीकठाक न होने के कारण तथा मंत्र-वेत्ताओं का स्वाल्प्य हो जाने के कारण फल नहीं हो पाता है। फल की प्राप्ति साधना से ही है। साधना से मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं. फिर मनोरथों की स्वतः सिद्धि है।

इस परिशिष्ट में जो मंत्र दिये गये हैं इन का उद्धरण सुख-साधन से किया है। भाषागत आंशिक भिन्नता भले ही हो, शेष सब कुछ वहीं का है। अनेकों साथियों का आग्रह था कि ये मन्त्रादि पुस्तक में अवश्य मुद्रित हो जाने चाहिये, अतः आग्रहवश ये मंत्र दे दिये गए हैं। किंतु साथ में इतनी अभ्यर्थना अवश्य है कि इनका पाठ करने वालों को किसी सुयोग्य गुरु का विद्यार्थी बनना आवश्यक है। बिना गुरुसहायता से मनोवाञ्छित फल की कामना निष्फल है।

इस परिशिष्ट की कापी आदरणीय पण्डित श्री झण्डूलालजी शास्त्री ने करने का अनुग्रह किया। अत उनके भी हम कृतज्ञ हैं।

अन्त में-जैन-धर्म दिवाकर, साहित्यरत्न जैनागम रत्नाकर परम पूज्य श्री १००८ श्रीमज्जैनाचार्य श्री आत्मारामजी महाराज के शिष्य मुनि श्री ज्ञानचद्रजी के भी कृतज्ञ हैं कि जिन्होंने नित्य पाठमाला का संकलन तथा सम्पादन कर हमें अनुगृहीत किया है।

जैन स्थानक आश्विन कृष्णा नवमी २००४	प्रार्थी – मन्त्री–श्री वर्द्धमान प्रकाशन कार्यालय लुधियाना

महावीर-वाणी

जरामरणवेगेणं, बुज्झमाणाण पाणिणं ।

धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥१॥

जरा और मरण के वेग वाले प्रवाह में बहते हुए जीवों के लिए धर्म ही एक मात्र द्वीप है, प्रतिष्ठा है, गति है, और उत्तम शरण है ।

माणुसत्त भवे मूल, लाभो देवगई भवे ।

मूलच्छेएण जीवाण, नरग-तिरिक्खत्तण धुव ॥

मनुष्यत्व मूल है—अर्थात् मनुष्य से मनुष्य बनने वाला, मूल पूँजी को बचाने वाला है । देव-जन्म पाना, लाभ उठाना है । और जो मनुष्य नरक तथा तिर्यञ्च गति को प्राप्त होता है वह अपनी मूल पूँजी को भी गवां देने वाला मूर्ख है ।

उत्तराध्ययन सूत्र

नित्य-पाठमाला

विषय-सूची

नित्य-पाठमाला

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
आगामी	आगमीय	क	१३
विमोच कैसे ?	विमोचक कैसे	घ	२६
घोटा	घोंटा	ड	१६
विकाश	विकास	च	६
घड़ियों	घड़ियां	च	२२
फूलचन्दजी	फूलचन्दजी महाराज	ज	८
मूलपाठ	मूल–सूत्र	१	५
जावज्जीवाए	जावज्जीवं	२	१
सुगुरुणो	गुरुणो	२	१
निससिसएणं	नीससिसएणं	२	१७
उडुगएणं	उड्डुएणं	३	१
उझाणेणं	झाणेणं	३	५
महिश्रा	महिश्रा	३	१६
देसियाणं	देसयाणं	४	८
दीवोताणंसरण	दीवो-ताण सरण	४	६
वोहियाणं	बोहयाणं	४	११
पावडग्गो	पावगो	५	१२
वुप्य	बुप्य धातु के	८	८
देवसि	देवसिओ	६	२
मम्झ	मज्झ	११	६
की	को	१३	३
उ टंचचा	उर्ध्व–ऊंचा	१४	१७
पायाला	पयाला	१५	१३
जावज्जीवाए	जावज्जीव	१६	५
वट मारी कर	मार्ग में लूटना	१७	५
हुए	हुए उठाना	१७	५
तव	तथा स्पर्शना द्वारा	२१	६
वह भोगवा	उसे भोगना	२२	१
खमापना	खमापना	२४	२
स्पर्शन कर	स्पर्शन द्वारा	२४	१६
पौरूषी	पौरुषी	२८	१
पुरिमडढं	पुरिमड्ढं	२८	७
चउव्विहार	चउव्विहाहार	२६	१५
पोरिम	पोरिसिं	३०	२
किन्तु	साथ	३१	४
मोलि	मौलि	३२	१
वक्तु	वक्तुं	३२	१६
तच्चाहचाम्र	तच्चाम्रचारु	३३	८
दूरितानि	दुरितानि	३३	१८
नात्गद्भुतं	नात्यद्भुतं	३३	२१
रशितुं	रसितुं	३४	४
निद्धूम	निर्धूम	३४	२१
विकासिनोऽपि	विकाशिनोऽपि	३८	१२
जलघे ननु	जलधेर्ननु	४१	१६
प्रसन्ना.	प्रपन्ना	४४	६
वप्विक	विष्वक्	४४	१४

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पँ०
जगस्त्रयाय	जगत्त्रयाय	४५	११
उद्योत्त्रितेपु	उद्योतितेपु	४५	१३
-च्छ्वसित	-ल्लसित	४५	१५
प्रत्तिभुव	प्रतिभव	४६	१०
माक्रिया:	यस्मात्क्रिया:	४७	१६
दानम्	दातम्	४७	१६
वध्यो	वंध्यो	४७	२४
मुखा	सुखा	४८	११
विंशति.	विंशतिं	४६	६
विश्वाभिनंदन	श्री अभिनदन	२६	१०
कमले	कमल	४६	१६
-मायति	-मायाति	५५	६
-लसत्यादा	लमस्यादा	५७	६
स्यगो	स्वर्गी	५७	१०
-गतो	-गत	५७	१३
	भक्त्या	५८	८
कृच्छ्र	कृच्छ्र	५८	२०
निरंजनम्	निरूपकं	६०	१
अलंघतं	उलंघितं	६१	१
जपकार	जयकार	६६	१४
तत्रापि	तद्दपि	६६	७
कामा	काम	६७	५
वासूपृज्य	वासुपूज्य	७२	६
दिन	दिक	७२	१६
मेरो	मेरो	७२	१६

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पँ०
फेरी	फेरो	७२	१६
आंतरे	आंतरो	७५	२
मरयो	भरयो	७५	४
सुध	शुद्ध	७५	१
निवा	निवार	७५	३१
वघानी	वखानी	७६	२२
मस	भ्रम	८४	१
सरवरो	सुरवरो	८४	११
आजियां	आर्यका	८५	२२
चुरे	चूरे	८६	८
विज्मा	विज्जा	६२	८
आन	आग	१०४	१६
कामी	अकामी	१०५	४
चम्बर	चमर	१०६	१६
अदित्यो	आदित्यो	१०८	५
भार्तारा	भर्तारा	१०८	१२
कर्जी	अर्जी	१०८	२२
तीत्य	तीर्थ	१०६	२
पारश्व	पार्श्व	१०६	१४
गुणमद्ड	गुणसदनं	११०	७
मद्लील	मद्लोल	१११	६
मनोरथ	मनोरथ	११२	२१
मरदगं	मरदगा	११३	१७
जाप	जपे	११५	१०
रज	राज	११७	१६

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
कुस	कुल	११८	१३	जाये	जावे	१८८	४
शोभवान्	शोभावान्	११८	१४	निष्ट	निष्ठ	१८९	६
निद्र	निद्रा	१२२	४	फेले	फैले	१८९	७
भांहि	मांहि	१२२	१३	वरतु	वस्तु	१८९	१२
घन्य	धन्य	१२६	४	भ्रापे	न भ्रापे	१९३	१७
अवतारया	अवतरया	१२४	८	पालमे	पारने	२०५	१३
रूप	रस	१३०	३	कहत	कहत है	२०६	१३
तिमी	तम	१३०	५	वार	वाय	२०६	१७
चोवीश	चौवीश	१३०	११	काट के	काठ के	२०८	७
सांजोग	सजोग	१३१	२२	वासा	वाला	२०९	१९
यत्त	यज्ञ	१३३	१६	खाइ्य साइ्य	खाइमं साइमं	२१३	५
दशभी	दशमी	१३३	१९	शुतधर	श्रुतधर	२१५	१७
दिन	दीन	१३४	१	जिन	जिनवर	२१७	२
ग्रमयादिय	अभयादिक	१५०	११	दिगा	दया	२१९	२
शक्रेन्द्र	शक्रेन्द्र	१५८	१३	दिन	दीन	२१९	२
घन	धन	१५८	१७	अपने	आपने	२२०	१८
वाटे	घटे	१६२	१	धार	धारा	२२१	१
वयोग	वियोग	१६६	१७	किनार	किनारा	२२१	१
मव	भव	१६७	१३	तद	ज्ञान	२२१	३
भुंगम	भुजगम	१७५	११	में हो	के हो	२२१	७
लचग	लक्ष्य	१७६	१८	केर	करे	२२२	१०
राज	राज्	१८१	१९	कोनहु	कौन हु	२२३	१४
मही	नही	१८३	१७	सागर	सराग	२२३	१७
वेर	वरे	१८४	१९	निशेखिया	विशेखिया	२२३	२२
म्	म्	१८८	३	रत अध्धति	अति उध्धत	२२६	५

णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स !

नित्य पाठमाला

१

श्रावक प्रतिक्रमण

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंचणमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

मूल-पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥१॥

मूल-सूत्र

अरिहंतो मह देवो जावज्जीवाए सुसाहुणो सुगुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥
पंचिंदियसंवरणो, तह णवविह-बंभचेर-गुत्ति-धरो ।
चउविहकसायमुक्को इय अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥
पंचमहव्वयजुत्तो पंचविहायारपालण-समत्थो ॥
पंच-समइ-तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ ॥१॥

मूल-सूत्र

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणा-गमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा-उत्तिंग-पणग दग-मट्टी-मक्कड़ा-संताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभि-हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किला-मिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥२॥

मूल-सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउ-स्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं

जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥३।

मूल-सूत्र

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥१॥
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥
सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल-सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुन्थुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभित्थुआ विहूयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तियवंदियमहिया * जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥

* महिआ ऐसा भी पाठान्तर है ।

चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर-गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

मूल-सूत्र

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगइपइट्ठाणं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरा-वित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं ।*

मूल-सूत्र

आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवं ! देवसियं

* यह स्तुति-मंगल दो बार पढ़ना चाहिए। द्वितीय बार में 'ठाणं संपाविउ कामाणं नमो जिणाणं जियभयाणं' पढ़ना चाहिए।

पडिक्कमणं ठामि देवसी नाण-दंसण चरित्ताचरित्तं तव-अइयार चिन्तवणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

मूल-सूत्र

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।

करेमि भन्ते ! सामाइयं सावज्ज जोगं-पच्चक्खामि जाव-नियमं* पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

मूल-सूत्र

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उसुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगो-पाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावग-धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥६॥

*सामायिक करनेवाले को चाहिए कि जितनी सामायिक करनी हो उतने मुहूर्त कह डाले जैसे कि—'जावनियमं मुहूर्त १ या २ इत्यादि पज्जुवासामि ।'

अतिचार-सूत्र

आगमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-सुत्तागमे अत्थागमे तदु-भयागमे; ऐसे श्रुतज्ञान के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:-जंवाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीणक्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठुपडिच्छियं १० अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ १२ असज्झाइए सज्झायं १३ सज्झाइए न सज्झायं १४ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शन श्री सम्यक्त्व-रत्न पदार्थ के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूं:-जिन वचन में शंका की हो १ पर-दर्शन की वाञ्छा की हो २ फल प्रति संदेह किया हो ३ परपाखण्डी की प्रशंसा की हो ४ अन तीर्थों का संस्तव-परिचय किया हो ५ जो मे देवसिओ अइ-यारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

पहिले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूं:-क्रोध-वश गाढे बन्धन में बांधा हो १ गाढा घाव किया हो २ अवयवों का विच्छेद किया हो ३ अति भार डाला हो ४

भात-पानी का विच्छेद किया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण--व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:--सहसा किसी पर कलङ्क लगाया हो १ रहस्यमयी वार्ता प्रकट की हो २ स्त्री--पुरुष का मर्म प्रकाशित किया हो ३ किसी को वश करने के लिए मृषा उपदेश दिया हो ४ कूड़ा लेख लिखा हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तीसरे स्थूल अदत्तादान-विरमण--व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूं:--चोर की चुराई वस्तु ली हो १ चोर को सहायता दी हो २ राज्य-विरुद्ध कार्य किया हो ३ कूड़ा तोल, कूड़ा-माप किया हो ४ वस्तु में मिलावट की हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

चौथे स्थूल स्वदार-संतोष मैथुन-विरमण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:—अप्राप्त अवस्था की स्व-स्त्री से गमन किया हो १ अपरि-गृहीता से गमन किया हो २ अनंगक्रीडा की हो ३ पराये विवाह नाते का अपने मा'र संबन्ध किया हो ४ काम भोग

की तीव्र अभिलाषा से सेवन किया हो, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पांचवाँ स्थूल परिग्रह-परिमाण--व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:-- वास्तु के परिमाण का अतिक्रमण किया हो १ हिरण्य-सुवर्ण के परिमाण का अतिक्रमण किया हो २ धन--धान्य के परिमाण का अतिक्रमण किया हो ३ द्विपद चतुष्पद के परिमाण का अतिक्रमण किया हो ४ कुप्य परिमाण अतिक्रमण किया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

छट्ठा दिशि व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूं:--ऊर्ध्वदिशा परिमाण अतिक्रमण किया हो १ अधो दिशा-परिमाण अतिक्रमण किया हो २ तिर्यग् दिशा-परिमाण अतिक्रमण किया हो ३ क्षेत्र वृद्धि की हो ४ पथ--स्मृति अन्तर्धान होने पर गमन किया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सातवाँ उपभोग परिभोग परिमाण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूं:—पच्चक्खाण उपरान्त सचित्त का आहार किया हो १ सचित्त प्रतिबद्ध का आहार किया हो २ अपक्व आहार किया हो ३

दुष्पक्व आहार किया हो ४ तुच्छौषधी का आहार किया हो ५ जो मे देवसिअइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पन्द्रह कर्मादान के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँः-इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणिज्जे ७ रसवाणिज्जे ८ केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे१० जंतपीलणियाकम्मे ११ निल्लंछणियाकम्मे १२ दवग्गिदावणियाकम्मे १३ सरदहतलागसोसणियाकम्मे १४ असइजणपोसणियाकम्मे १५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

आठवाँ अनर्थदण्ड-विरमण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँः-कन्दर्प की कथा की हो १ भंडचेष्टा की हो २ मौखर्य वचन बोला हो ३ अधिकरण संग्रह किया हो ४ उपभोग-परिभोग अधिक बढाया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

नववाँ सामायिक व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूंः-मन, वचन, काया का दुष्प्रयोग किया हो ३ सामायिक में समता न की हो ४

पुरा पुरा समय हुए विना सामायिक पारी हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

दशवाँ देसावगासिक व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:—भूमि की बाहिर की वस्तु मंगाई हो १ भेजी हो २ शब्द से बतलाया हो ३ रूप से परिचय दिया हो ४ वस्तु फेंक कर अपना परिचय दिया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इग्यारहवाँ पडिपुण्ण पोसह व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:-अपडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारा १ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्जा-संथारा २ अप्पडिलेहिय–दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण भूमिका ३ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भूमिका ४ पोपध में विकथा–प्रमाद की हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

बारहवाँ अतिथि-संविभाग व्रत के विषय जो कोई अति-चार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:—वस्तु सचित्त ऊपर रक्खी हो १ सचित्त से ढाँकी हो २ काल अतिक्रमण किया हो ३ अपनी वस्तु को पराई बतलाई हो ४ मत्सर भाव

से दान दिया हो ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

संलेखना के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँः--इहलोगासंसप्पउग्गा १ परलोगासंसप्पउग्गा २ जीवियासंसप्पउग्गा ३ मरणासंसप्पउग्गा ४ कामभोगासंसप्पउग्गा ५ मा मज्झ हुज्ज मरणंते जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौदह ज्ञान के, पॉच सम्यक्त्व, के, बारह व्रत के पांच पांच एवं साठ बारह व्रतों के, पन्नरह कर्मादान के, पाँच संलेखना के, ९९ निन्यानवें अतिचारों के विषय जो कोई अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार सेवन किया हो, सेवन कराया हो, सेवन करने वालों को अनुमोदन किया हो, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अठारह पापस्थानक उसकी आलोचना करता हूँ। प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ परपरिवाद १५ रति-अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शनशल्य १८ अठारह पापस्थानक सेवन किया हो १ कराया हो २ सेवन करने वालों का अनुमोदन किया हो ३ जो मे देवसिओ अइयारो

कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥*

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचितिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावग्गो पावग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुएसामाइये तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं बारस्स विहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सव्वस्सवि देवसियं दुब्भासियं दुचिंतियं दुचिट्ठियं दुनिसियं अधिक कम अल्प पाठ पढ़ा हो। आगे का पीछे, पीछे का आगे किया हो। अक्षर अशुद्ध मात्रा बोला हो, बोलाया हो, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ प्रथम सामायिक आवश्यक सम्पूर्ण ॥

---

*—"ध्यान मे तस्स मिच्छामि दुकडं,, ऐसा न पढ कर "जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स चितवणा मात्र इतना ही पढना चाहिए और खुले अतिचारों में 'तस्स मिच्छामि दुकडं,, मात्र इतना ही कहना आवश्यक है तथा ध्यान अवस्था में इतने ही अतिचारों का चिन्तन करना आवश्यक है।

❀अथ वन्दन आवश्यक

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि--याए अणुजाणह मे मि उग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं

❀--ध्यान के अनन्तर "तिक्खुत्तो" के पाठ से गुरुदेव की वन्दना नमस्कार कर "लोगस्स उज्जोयगरे" इत्यादि पाठ पढ कर तथा पूर्ववत् वन्दना कर के पढना चाहिए।

'इच्छामि खमासमणो' इस पाठ में ६ आवर्त्तन होते हैं। 'अहो-काय' काय--इन पदों मे ३ आवर्त्तन हैं। जैसे--दोनों हाथ लम्बे करके दश अगुलियां गुरु के चरणों पर लगाकर भाव से 'अ' इस अक्षर का उच्चारण किया जावें, फिर दोनों हाथ मस्तक से लगाकर--'हो' यह कहा जावे तब प्रथम आवर्त्तन होती है। इसी प्रकार--'का' और 'य' अक्षरों के उच्चारण से द्वितीय आवर्त्तन और 'का' 'य' अक्षरों के उच्चा-रण से तृतीय आवर्त्तन होता है।

"जत्ता भे जवणिज्ज च भे" इन पदों में भी तीन आवर्त्तन होते हैं जैसे मन्द स्वर के साथ 'ज' का उच्चारण करना फिर मध्यम स्वर से 'त्ता' कहा जावे, पुनः ऊंचे स्वर के साथ (हाथ मस्तक को लगाकर) 'भे' का उच्चारण करने से प्रथम आवर्तन होता है। फिर 'ज' 'व' 'णि' ये तीन अक्षर पूर्वोक्त स्वर से उच्चारण किए जाने पर द्वितीय आवर्तन तथा--'ज' 'च' 'भे' इन तीनों के पूर्व की भांति उच्चारण करने से तृतीय आवर्त्तन होता है।

संकलन करने से ६ आवर्तन और इच्छामि खमासमणो, के दो बार पढ़ने से १२ आवर्त्तन होते हैं।

खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेणं भे देवसि वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवसियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तेत्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कड़ाए वयदुक्कड़ाए कायदुक्कड़ाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

अथ प्रतिक्रमण आवश्यक

×—चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहु मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंता सरणं पव्वज्जामि सिद्धा सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

×तिक्खुतो के पाठ से वन्दना करके बैठ कर दक्षिण जानु उंर्द्धवचा करके बायां जानु भूमि पर रख कर नमस्कार मंत्र पढ़े फिर 'करेमि भंते !' यह सूत्र पढ़ कर "चत्तारि" यह पाठ पढ़ना चाहिए ।

।। आगमे तिविहे पगणत्ते का पाठ ।।

*आगमे तिविहे पगणत्ते तंजहा-सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे; ऐसे श्री ज्ञान के विषय जो कोई अतिचार लगा हो उसकी आलोचना करता हूँ:-जंवाइद्धं वच्चामेलियं हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठुदिन्नं दुट्ठुपडिच्छियं अकाले कओ सज्झाओ काले न कओ सज्झाओ असज्झाइए सज्झायं सज्झाइए न सज्झायं पढ़ते हुए, विचारते हुए, करते हुए और विचार करते हुए ज्ञान और ज्ञानवान् की आशातना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

।। दर्शन का पाठ ।।

दंसण समत्त-परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ-परमत्थ सेवणा वावि वावणं कुदंसण वज्जणा य ऐसी सम्यक्त्व श्रद्धणा ऐसी सम्यक्त्व के समणोवासयाणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पायाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूं:-संका कंखा वितिगिच्छा परपासंडीपरसंसा परपासंडीसंथवो एवं पांच अतिचार मध्ये जे कोई अतिचार लगा हो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

*'इच्छामि ठामि इस सूत्र को पढ़कर तथा फिर इच्छाकारेण यह सूत्र तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना कर अतिचारों की आज्ञा लेवे 'आगमे तिविहे' यह पाठ पढ़ना चाहिए।

॥ प्रथम अणुव्रत ॥

पहिला अणुव्रत थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं त्रस जीव बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय जानते हुए देखते हुए संकल्प से उसमें सगे सम्बन्धियों के शरीर को पीड़ा देने वाले स-अपराधी उसके उपरान्त निरपराधी को जानकर मारने की बुद्धि से मारने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसे पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत का पंच अइयारा पायाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँ:-बंधे १ वहे २ छविच्छेए ३ अइभारे ४ भत्तपाणवोच्छेए ५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

॥ द्वितीय अणुव्रत ॥

दूसरा अणुव्रत थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं कन्नालिए गोवालिए भोमालिए थापण मोसा स्थूल कुट साक्षी इत्यादि स्थूल झूठ बोलने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसा दूसरा स्थूल मृषावाद विरमण व्रत का पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता

हूँ:--रहस्साभक्खाणे रहस्साभक्खाणे सदारमंतभेए मोसोवएसे कूड़लेहकरणे तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥२॥

॥ तृतीय अणुव्रत ॥

तीसरा अणुव्रत थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं खात लगाकर१ गांठ कतर कर२ ताले पर कुन्जी लगा कर३ वट मारी कर४ पड़ी हुई वस्तु को मालिक को जानते हुए५ इत्यादिक स्थूल अदत्तादान का पच्चक्खाण सगा। सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी तथा बिना स्वामी के पड़ी हुई वस्तु, उसके उपरान्त स्थूल अदत्तादान लेने का पच्चक्खाण जाव-ज्जीवाए, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसा तीसरा स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोऊं--तेणाहडे १ तक्करप्पउगे २ विरुद्धरज्जाइक्कमे ३ कूड़ तोले कूड़ मापे ४ तप्पडिरूवगववहारे ५ जो मे देव-सिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥३॥

॥ चतुर्थ अणुव्रत ॥

चौथा अणुव्रत थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं सदारसंतो-सिए अवसेसं मेहुण सेवन का पच्चक्खाण (यह पुरुष को) और (स्त्री को सभत्तारसंतोसिए अवसेसं मेहुण सेवन का पच्चक्खाण,)

और जो स्त्री पुरुष को सर्वथा ही काया से मैथुन सेवन का पच्चक्खाण हो उसको देवता मनुष्य-तिर्यंच सम्बन्धी मैथुन का पच्चक्खाण जावज्जीवाए देवता-देवी सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा ऐसा चौथा स्थूल मैथुन विरमण व्रत का पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँ:—इत्तरियपरिग्गहियागमणे १ अपरिग्गहियागमणे २ अणंगकीड़ा ३ परविवाहकरणे४ कामभोगेसु तिव्वाभिलासा५ जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥४॥

॥ पंचम अणुव्रत ॥

पांचवाँ अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं खेतवत्थु का यथापरिमाण, हिरण्ण—सुवण्ण का यथापरिमाण, धन—धाण्ण का यथापरिमाण, दुप्पद—चउप्पद का यथा परिमाण, कुविय धातु का यथापरिमाण यह यथापरिमाण किया है उसके उपरान्त अपना करके परिग्रह रखने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ऐसा पांचवाँ स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूं:-खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे १ हिरण्ण-

सुवरणप्पमाणाइक्कमे, धन-धरणप्पमाणाइक्कमे, दुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे, कुवियधातुप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।५।।

।। षष्ठ व्रत ।।

छठा दिशी व्रत ऊर्ध्वदिशा का यथापरिमाण, अधोदिशा का यथापरिमाण, तिर्यग्दिशा का यथापरिमाण, यह यथा परिमाण किया है उपरान्त स्वेच्छा काया से जाकर पंच आस्त्रव सेवन का पच्चक्खाण जावज्जीवं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसे छट्ठे दिशिव्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँ:-उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढिसइअन्तरद्धाय जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।६।

।। सप्तम व्रत ।।

सातवां व्रत उवभोग परिभोगविहं-पच्चक्खायमाणे उल्लणियाविहं १ दंतणविहं २ फलविहं ३ अब्भंगणविहं ४ उवट्टणविहं ५ मंजणविहं ६ वत्थविहं ७ विलेवणविहं ८ पुप्फविहं ९ आभरणविहं १० धूपविहं ११ पेज्जविहं १२ भक्खणविहं १३ ओदणविहं १४ सूपविह १५ विगयविहं १६ सागविह १७ महुरविहं १८ जिमणविहं १९ पाणीविहं २० मुखवासविहं २१ वाहणविहं २२ उवाहणविहं २३ मयणविह २४ सचित्तविहं २५ दव्वविहं २६ इत्यादिक का यथापरिमाण किया है उसके उपरान्त उवभोग परिभोग भोग-

निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जावज्जीवं एगविहं तिवि-हेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ऐसा सातवाँ उपभोग परिभोग दुविहे पण्णत्ते तंजहा भोयणाउ य कम्मउ य भोय-णाओ समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समा-यरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूं:—सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिओसहिभक्खणिया, दुप्पोलि-ओसहिभक्खणिया, तुच्छोसहिभक्खणिया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तत्थ णं जे ते कम्मउ णं समणोवासयाणं पन्नरस कम्म-दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं तं जहा ते आलोउं इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवा-णिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे केसवाणिज्जेविसवाणिज्जे जंतपिलणियाकम्मे निल्लंछणियाकम्मे दवग्गि-दावणिया कम्मे सरदहतलाय-परिसोसणियाकम्मे असईजणपोसणिया-कम्मे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अष्टम व्रत ॥

आठवाँ अनर्थदण्ड वेरमण व्रत चउविहे अणत्थदंडे पण्णत्ते तंजहा अवज्झाणाचरियं पमायाचरियं हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ऐसा अनर्थदण्ड सेवन का पच्चक्खाण जाव-ज्जीव दुविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसे आठवें अनर्थदण्ड विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना

करता हूँ:-कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उपभोग परिभोग-अइरत्ते जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥८॥

॥ नवम व्रत ॥

नववाँ सामायिक व्रत सावज्जजोग का विरमणं जाव नियम पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसी श्रद्धा प्ररूपणा करना तब शुद्ध ऐसे नववें सामायिक व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँ:-मण-दुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणयाए सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥९॥

॥ दशम व्रत ॥

दशवाँ देसावगासिक व्रत दिन प्रति प्रभात से दिशाओं में प्रारम्भ कर पूर्वादिक छः दिशाओं में जितनी भूमि उन्मुक्त रक्खी है उसके उपरान्त स्वेच्छा से काया से जाकर पाच आस्रव सेवन का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तथा जितनी भूमि उन्मुक्त रक्खी है उसमें जिन द्रव्यादिकों

निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जावज्जीवं एगविहं तिवि-हेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ऐसा सातवां उपभोग परिभोग दुविहे पएणत्ते तंजहा भोयणाउ य कम्मउ य भोय-णाओ समणोवासयाणं पंच अइयार जाणियव्वा न समा-यरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूं:—सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिओसहिभक्खणिया, दुप्पोलि-ओसहिभक्खणिया, तुच्छोसहिभक्खणिया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

तत्थ णं जे ते कम्मउ णं समणोवासयाणं पन्नरस कम्म-दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं तं जहा ते आलोउं इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवा-णिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे जंतपिलणियाकम्मे निल्लंछणियाकम्मे दवग्गि-दावणिया कम्मे सरदहतलाय-परिसोसणियाकम्मे असईजणपोसणिया-कम्मे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अष्टम व्रत ॥

आठवाँ अनर्थदण्ड वेरमण व्रत चउविहे अणत्थदंडे पएणत्ते तंजहा अवज्झाणाचरियं पमायाचरियं हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ऐसा अनर्थदण्ड सेवन का पच्चक्खाण जाव-ज्जीवं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसे आठवें अनर्थदण्ड विरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना

करता हूँ:-कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उपभोग परिभोग-अइरत्ते जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥८॥

॥ नवम व्रत ॥

नववाँ सामायिक व्रत सावज्जजोग का विरमणं जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसी श्रद्धा प्ररूपणा करना तब शुद्ध ऐसे नववें सामायिक व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँ:-मण-दुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणाए सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥९॥

॥ दशम व्रत ॥

दशवाँ देसावगासिक व्रत दिन प्रति प्रभात से दिशाओं में प्रारम्भ कर पूर्वादिक छः दिशाओं में जितनी भूमि उन्मुक्त रक्खी है उसके उपरान्त स्वेच्छा से काया से जाकर पांच आस्रव सेवन का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तथा जितनी भूमि उन्मुक्त रक्खी है उसमें जिन द्रव्यादिकों

की मर्यादा की है वह भोगवा उसके उपरान्त उपभोग परि-भोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एग-विहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ऐसे दशवाँ देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरि-यव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँः—आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाए रूवाणुवाए बहियापुग्गलपक्खेवे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१०॥

॥ एकादश व्रत ॥

इग्यारहवाँ पडिपुण्णं पौषध व्रत असणं पाणं खाइमं साइमं चार आहार का पच्चक्खाण, अबंभ सेवन का पच्चक्खाण, अमुक मणि सुवर्ण का पच्चक्खाण, माला वन्नग विलेवण का पच्चक्खाण, सत्थ मूसलादिक सावज्जजोग का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ऐसी श्रद्धा परुपणा करें तो उस समय स्पर्शन कर शुद्ध होऊं ऐसा इग्यारहवाँ पडिपुण्ण पौषधव्रत का पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूँः—अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सेज्जा संथारए, अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए सेज्जा संथारए, अप्पडिले-हिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए उच्चारपासवणभूमि, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणिया जो मे

देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥११॥

॥ द्वादश व्रत ॥

बारहवाँ अतिथि संविभाग व्रत समणे निग्गंथे फासुयं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थपडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पाडिहारिय-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि ऐसी श्रद्धा परूपणा स्पर्शन कर शुद्ध होऊं ऐसे बारहवें अतिथिसंविभाग व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसकी आलोचना करता हूं:-सचित्तनिक्खेवणिया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्कमे, परोवएसे, मच्छरियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१२॥

॥ संलेखना विषय ॥

अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणा पौषधशाला प्रमार्जनकर उच्चारपासवण-भूमिका प्रतिलेखनकर गमणागमण अतिक्रमण कर दर्भादिक संथारा संस्तार कर दर्भादिक संथारा दुरूह करके पूर्व तथा उत्तर दिशा में पर्यङ्कादि आसन ले बैठ कर करयल-संपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अञ्जलिं तिकट्टु एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं ऐसे अनन्त सिद्धों को

नमस्कार कर अपने धर्माचार्य को नमस्कार कर साधु प्रमुख चार तीर्थों को खमापना कर, सर्व जीव राशि से खमापना कर पूर्व जो व्रत आचरण किया है उनमें जो अतिचार दोष लगा हो उन सब की आलोचना प्रतिक्रमण निन्दा कर निशल्य होकर सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं कोहं-माणं जाव मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि न अणुजाणामि मणसा वयसा कायसा ऐसे अठारह पापस्थानका पच्चक्खाण कर सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जाव-ज्जीवाए ऐसे चारों आहार का पच्चक्खाण कर जं पियं इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं धिज्जं विसासियं सम्मयं अणुमयं बहुमयं भंडकरंडसमाणं रयणकरंडगभूयं मा णं सियं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसगा मा णं मसगा मा णं वाइयं पित्तियं कप्फियं संभियं सन्निवाहियं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंति एवं पि णं चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु ऐसे शरीर वोसिरा कर कालं अणवकंखमाणे विहरामि ऐसी श्रद्धा प्ररूपणा है करते समय स्पर्शन कर शुद्ध ऐसे अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा भूसणा आराहणा का पंच अइयारा पायाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उसको

आलोचना करता हूँ:-इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंस-प्पओगे जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगा-संसप्पओगे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

ऐसे सम्यक्त्व पूर्वक बारह व्रत संलेखणा सहित इन में जो कोई अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जानते अजानते मन वचन काया से किया हो, कराया हो, सेवन करते हुए का अनुमोदन किया हो वह अनन्त सिद्ध केवल-ज्ञानी की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अठारह पापस्थानक-प्राणातिपात १ मृषावाद २ अद-त्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ परपरिवाद १५ रति-अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन १८ एवं अठारह पापस्थानक में से जो कोई पापस्थानक मेरे जीवने मन वचन काया कर सेवन किया हो, सेवन कराया हो, सेवन करते हुए का अनुमोदन किया हो वह अनन्त केवल ज्ञानी की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराह-णाए विरओमि, विराहणाए सव्वं तिविहेण पडि-क्कंतो वंदामि जिण चउवीसं।

अनन्त चौवीसी जिन नमूं, सिद्ध अनन्ता कोड।
केवल ज्ञानी गणधरा, वन्दूं दो कर जोड ॥ १ ॥
दोय कोड केवल धरा, विहरमान जिन वीस।
सहस्त्र युगल कोड़ी नमूँ, साधु नमू निश दिन ॥ २ ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेऊकाय, सात लाख वायु काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदह लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख बे इन्द्रिय, दो लाख ते इंद्रिय, दो लाख चउरिंदिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यञ्च-पंचेन्द्रिय, और चौदह लाख मनुष्य; ऐसे चार गति चोरासी लाख जीवयोनि के किसी भी जीव को हना हो हनाया हो, हनते को भला जाना हो, तो १८२४१२०[1] बार तस्स मिच्छामि दुक्कडं। इन जीवों में से किसी भी जीव को पीड़ा पहुँचाई हो तो मन वचन और शरीर से उन सब जीवों से क्षमा मांगता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा प्रदान करें।

१ जीवतत्व के ५६३ भेदों को अभिहयादि दस के साथ गुणा करने से ५६३० भेद होते हैं। फिर इनको राग और द्वेष के साथ द्विगुणाकार करने से ११२६० भेद बनते हैं। फिर राग और द्वेष के साथ इन्हीं को मन वचन और काया के साथ गुणा करने से ३३७८० भेद होते हैं, और इनको तीन करणों के साथ गुणाकार करने से १०१३४० भेद बन जाते हैं। इनको भी फिर तीन काल के साथ गुणाकार करने से ३०४०२० भेद हो जाते हैं। फिर इनको अर्हन्, सिद्ध, साधु, देव, गुरु और आत्मा इस प्रकार के छ से गुणाकार करने से १८२४१२० भेद बनते हैं।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे,

मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥१॥

एवमहं आलोइयं, निंदियं गरिहिय दुगंछिअं सम्मं

तिविहेण पडिक्कंतो, वन्दामि जिण चउवीसं ॥२॥

आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवं! देवसि ज्ञान-दर्शन-चरित्ताचरित्त-तप-अतिचार--पायच्छित-विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं।[1]

॥ षष्ठ प्रत्याख्यान-आवश्यक ॥

॥ मुहूर्त्त के प्रत्याख्यान का पाठ ॥

उग्गयसूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि।

---

१ 'नवकार" का पाठ "करेमि भंते समाइयं" का पाठ "इच्छामि ठामि' का पाठ 'तस्सोत्तरी करणेण' का पाठ इनको पढ़कर ध्यान करें। देवसिय में चार और राइसि में दो 'लोगस्स का ध्यान करें। पक्खी प्रतिक्रमण में आठ लोगस्स का ध्यान करें और चातुर्मासी प्रतिक्रमण में बारह लोगस्स का ध्यान तथा सम्वत्सरी प्रतिक्रमण में बीस लोगस्स का ध्यान करें। फिर नमोकार पढ़कर ध्यान पारें और एक लोगस्स का पाठ पढ़कर दो बार इच्छामिखमासमणे' का पाठ पढ़कर फिर षष्ठ पच्चक्खाण आवश्यक करें।

यदि गुरुजी हो तो उन्हीं से करा लेवें, नहीं तो स्वयं कर लेवें।

॥ एक प्रहर वा सार्द्ध पौरूषी का प्रत्याख्यान ॥

[1]उग्गयसूरे पोरिसं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं [2]पच्छन्नकालेणं [3]दिसामोहेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि २. एवं सड्ढपोरसियं पच्चक्खामि जाव वोसिरामि।

॥ तृतीय पुरिमड्ड (दोप्रहर) का प्रत्याख्यान ॥

उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं [4]दिसामोहेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि।

॥ विगइ निविगइ का प्रत्याख्यान ॥

विगइओ निवियइओ पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं[5] सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि।

॥ विगय का एकासन युक्त प्रत्याख्यान का पाठ ॥

उग्गयसूरे निविगइ एकासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं [5]सहसागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि।

---

१ इन सब प्रत्याख्यानों के पाठों में जो मुनियों के लिए आगारों के पाठ हैं वे सब दे दिये गए हैं। २ साहुवयणेणं। ३ महत्तरागारेणं। ४ साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं। ५ लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं।

॥ एकासन (द्विआसन) करने का प्रत्याख्यान ॥

उग्गयसूरे एगासणं (बियासणं वा) पच्चक्खामि दुविहं तिविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं [1]सहसागारेणं आउट्टणपसारेणं [2]गुरुअब्भुट्ठाणेणं सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरामि ।

॥ एगलठाण करने का पाठ ॥

उग्गयसूरे एगलठाणं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं [1]सहसागारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं[2] सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ।

॥ आम्बिल करने का पाठ ॥

उग्गयसूरे आंबिलं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं [3]सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरामि।

॥ चउव्विहार उपवास का पाठ ॥

उग्गयसूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं [2]सहसागारेणं सव्वसमा हिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ।

॥ तिव्विहार उपवास करने का पाठ ॥

उग्गयसूरे अभत्तट्ठ पच्चक्खामि, तिविहंपि आहारं असणं

---

१ सागारियागारेण । २ परिठावणियागारेणं, महत्तरागारेण । ३ लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेण उक्खित्तविवेगेण, परिठावणियागारेणं, महत्तरागारेण ।

खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणां सहसागारेणां सव्वसमाहिवत्तिआगारेणां (पाणाहार पोरिसि पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणां [1]महसागारेणां पच्छन्नकालेणां दिसामोहेणां सव्वसमाहिवत्तिआगारेणां पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा) वोसिरामि ।

|| रात्रि चउव्विहार प्रत्याख्यान करने का पाठ ||

दिवस चरिम[3] पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणां [4]सहसागारेणां सव्वसमाहिवत्तिआगारेणां वोसिरामि ।

|| गंठिसह मुट्ठिसह अभिग्रह करने का पाठ ||

उग्गयसूरे गंठिसहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणां सहसागारेणां सव्वसमाहिवत्तिआगारेणां वोसिरामि ।

|| देसावकाशिक अभिग्रह करने का पाठ ||

देसावगासिअं उपभोगं परिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणां सहसागारेणां वोसिरामि ।

---

१ परिठावणियागारेणां, महत्तरागारेणां। २ महत्तरागारेणां । ३ यदि किसी ने पानी का त्याग वा दो प्रहर पर्यन्त कर दिया हो तो उसको अन्तभाव प्रदर्शक चिह्न ( ) के अन्तर्गत पाठ को बोलना चहिए। ४ जिस में दिन के साथ ही चार आहार का प्रत्याख्यान किया जाता है उसको दिवसचरम कहते हैं। जब तक सूर्योदय न हो तब तक चारों आहार का त्याग भवचरम कहलाता है। जिसको भवचरम प्रत्याख्यान करना हो उसे 'दिवसचरिम' के स्थान पर 'भवचरिमं' कहना चाहिए।

॥ आवश्यक सूचना ॥

उपरोक्त किसी भी प्रत्याख्यान को पारने के समय यह पाठ अवश्य ही पढ़ना चाहिए—समकायेणं न फासियं न पालयं, न तिरियं, न किट्टिय, न सोहिय, न आराहियं, आणाए अणुपालित्ता न भवइ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं। किन्तु जिस प्रत्याख्यान का समय पूर्ण हो उसका नाम अवश्य ही लेना चाहिए।

जब प्रत्याख्यान हो जावे तब निम्न लिखित पाठ भी पढ़े-सामायिक १ चउवीसत्थो २ वन्दना ३ पडिक्कमण ४ काउसग्ग ५ पच्चक्खाण ६। अतीत काल की आलोयणा वर्तमान काल का संवर अनागत काल का पच्चक्खाण, भगवान् और गुरुजनों की आज्ञा सहित हियाय, सुहाय, खमाय, निस्सेसाय आणुगामित्ताय भविस्सइ थय थुई मंगलं।

२
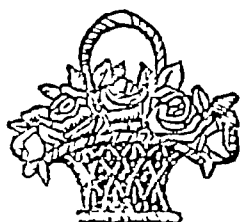
॥ भक्तामरस्तोत्रम् ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा—
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब—
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद—
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप !
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि—
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव.,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रै ॥ १९ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्यसुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति-भानु-सहस्ररश्मिः,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस—
मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै—
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख—
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपु कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त—
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं—
प्रख्यापयत्त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

[गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग—
स्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात—
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोद्बिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसङ्ख्या,
दीप्त्याजयत्यपि निशामपि सोमसौम्या· ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्ट—
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्य ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकांति,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल—
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि—
सङ्ग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम ।
तस्याशुनाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

ॐ
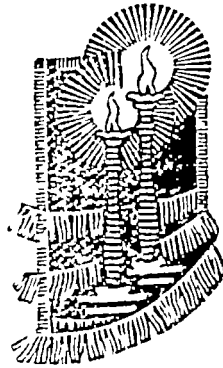
कल्याणमंदिरस्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु—
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो—
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप—
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवंत्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥४॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जंतोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यंत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून—
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना—
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
च्चिन्त्यो न हन्त ! महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप—
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य—
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा—
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? ।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गंभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गंभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न—
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै—
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम्॥ २३॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव।
सांन्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥ २४॥

भो भो! प्रमादमवधूय भजध्वमेन—
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥ २५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥ २६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन!
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥ २७॥

दिव्यस्रजो जिन! नमस्त्रिदशाधिपाना—
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्!
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव॥ २८॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदुर्जितघनौघमदभ्रमीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य—
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदानम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचंद्र-प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥
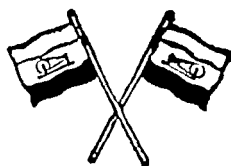
अथ श्री चतुर्विंशति जिन स्तोत्रम् ।

आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा ।
धर्मनाथं महादेवं, शान्तिं शान्तिकरं सदा ॥१॥
अनन्तं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमम् ।
अजितं जितकन्दर्पं चन्द्रं चन्द्रसमप्रभम् ॥२॥
आदिनाथं तथादेवं, सुपार्श्वं विमलं जिनम् ।
मल्लिनाथं गुणोपेतं, धनुषां पंचविंशतिः ॥३॥
अरनाथ महावीरं सुमतिं च जगद्गुरुम् ।
श्रीपद्मप्रभुनामानं, वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥४॥
शीतलं शीतलं लोके श्रेयांसं श्रेयसे सदा ।
कुन्थुनाथं च वामेयं, विश्वाभिनन्दनं विभुम् ॥५॥
जिनानां नामभिर्बद्धः, पंचषष्ठि समुद्भवः ।
यन्त्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरन्तरम् ॥६॥
यस्मिन्गृहे महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः ।
भूतप्रेतपिशाचादि, भयं तत्र न विद्यते ॥७॥
सकलं गुणनिधानं यंत्रमेनं विशुद्धं ।
हृदयकमले कोषे धीमतां ध्येयरूपम् ॥८॥
जयतिलक गुरु श्री सूरिराजस्य शिष्यो ।
वदति सुखनिदानं मोक्षलक्ष्मी-निवासम् ॥९॥

अथ सिद्धाष्टकम् ।

अखंड चिदानन्द देवाधिदेवं, फणीन्द्रादि-इन्द्रादि-रुद्रादि सेवं ।
मुनीन्द्रा कविन्द्रादि चंद्रादिमित्रम्, नमस्ते नमस्ते २ पवित्रं १
धराभंजलगं निभरंस्तवं न ?स्तवं, घटत्वं-पटत्वं अणुत्व महत्वं
मनस्त्वं क्वस्तवं द्रिगत्वं दृशत्वं, नमस्ते नमस्ते २ समस्त्वं २
अडोलं अतोलं अमोलं अम नं, अदेहं अठेहं अनेहं निधानं ।
अजापं अथापं अथापं अपापं, नमस्ते नमस्ते नमस्ते अगाथं ३
न आमं न धामं न शीतं न ऊष्णं, न रक्तं न पीतं न श्वेतं न कृष्णं ।
अगेपं अशेपं नरेशं न रूपं, नमस्ते नमस्ते नमस्ते अनुपम् ४
न छाया न माया न देशो न कालो.न जाग्रं न सुतं न वृद्धो न वालो
न ह्रस्वं न दीर्घं न रम्य अरम्यं, नमस्ते नमस्ते २ अगम्यं ५
न वन्धं न मुक्तं न मोनं न वक्त्रं, न धूम्रं तेजो न धामीनं न मत ।
न रक्तं विरक्तं न युक्तं अयुक्तं, नमस्ते नमस्ते नमस्ते असक्तं ६
न रुष्ट न तुष्टं न इष्टं अनिष्टं, न ज्येष्टं कनिष्टं न मिष्टं अमिष्टं ।
न अंगं न पिष्टं न तुष्टं न गूढं, नमस्ते नमस्ते नमस्ते अदृष्टं ७
न वक्त्रं न प्राणं न कर्णं न अन्नं, न हस्तं न पादं न शीर्षं अलक्षं ।
कथं सुन्दरं सुन्दरं नामधेयं, नमस्ते नमस्ते नमस्ते अशेषं ॥८॥

जिन सहस्त्र नाम स्तोत्रम्

नमस्त्रिलोकनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १॥
निर्मलः शाश्वतः शुद्धः निर्विकल्पो निरामय ः।
निःशरीरो निरातंकः सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः॥ २॥
निष्कलङ्को निरालम्बो निर्मोहो निर्मलोत्तमः।
निर्भवो निरहङ्कारो निर्विकारोऽथ निष्क्रियः॥ ३॥
निर्दोषो नीरजः शान्तः निर्भिद्यो निर्ममः शिवः।
निस्तरंगो निराकारो निष्कर्मो निष्फलः प्रभुः॥ ४॥
निर्वादो निरुपमज्ञानी नीरागी निरघो जिनः।
निश्शब्दोऽप्रतिमोऽश्लेषः उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः॥ ५॥
निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो नैष्ठिक शब्दवर्जितः।
अनिंद्यः परिपुतात्मा जगत्शिखरशेखरः॥ ६॥
निःशब्दो गुण-सम्पन्नः पापतापप्रनाशनः।
सोऽपि योगान् शुभं प्राप्तः कर्म-ज्योति वलावहः॥ ७॥
अजरो अमरो सिद्धो अर्चितो अक्षयो विभुः।
अमूर्त्तः अच्युतो ब्रह्म विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८॥
अनिंद्यो विश्वनाथश्च अजो अनुपमो भवः।
अप्रमेयो जगन्नाथः बोधरूपो जिनात्मकः॥ ९॥

अव्ययः सफलाराध्यो निष्पन्नो ज्ञानलोचन ।
अच्छेद्यो निर्मलो नित्य सर्वस्वविवर्जित. ॥ १० ॥
अजेय· सर्वतोभद्रः निष्कपायो भवान्तक ।
विश्वनाथः स्वयं-बुद्ध· वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥
अन्तकः सहजानन्दः अवाङ्मनसो गोचरः ।
असाध्यः शुद्ध-चैतन्य. कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥
अनन्तो-विमल-ज्ञानी निस्पृहश्च प्रकाशकः ।
कर्मारिजितः महानात्मा लोकत्रय-शिरोमणिः ॥ १३॥
अव्यवाधोवरः शंभु· विश्ववेदी पितामहः ।
सर्व- भूत- हितो देव सर्वलोकशरण्यक ॥ १४ ॥
आनन्द-रूप-चैतन्यो भगवांस्त्रिजगद्गुरुः ।
अनन्ताऽनन्तधीशक्तिः सत्यवक्ताऽग्ग्यात्मक ॥ १५ ॥
अष्टकर्म-विनिर्मुक्त· सप्तधातुविवर्जितः ।
गौरवादित्रयदूरः सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥
अभय· प्राप्तकैवल्यः निर्माणो निरपेक्षकः ।
निष्कलङ्कः पूर्ण-ज्ञानी मुक्ति-सौख्यप्रदायक ॥ १७ ॥
अनामयो महाराध्यो वरदो ज्ञानपावकः ।
सर्वेशः सत्सुखावासो जिनेन्द्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥
अन्यून—परमज्ञानी विश्वतत्त्वप्रकाशकः ।
प्रबुद्धभगवन्नाथः प्रस्तुत पुण्यकारकः ॥ १९ ॥
शंकरः सुगतो रौद्र सर्वज्ञो मदनान्तकः ।
ईश्वरो भुवनाधीशः सचेताः पुरुषोत्तम ॥ २० ॥

सदाऽजातो महानात्मा विमुक्तो—मुक्तिवल्लभः ।
योगीन्द्रो नागसंसिद्धो निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥

सदा शिवश्चतुर्वक्त्रः सत्य सौख्य स्त्रि पुरांतक. ।
त्रिनेत्र त्रिजगत्पूज्यः कल्याणकोऽप्रमूर्तिक. ॥ २२ ॥

सर्व—साधुजनैर्वन्द्यः सर्व-पाप-विवर्जित. ।
सर्व—देवाधिको देवः सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥

स्वयंविद्यो महानात्मा प्रसिद्धशापनाशन. ।
तनुमात्र-चिदानन्द' चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥

सकलातिशयो देव मुक्तिस्थो महतांमहः ।
मुक्तिकार्याय सन्तुष्टो नीरागः परमेश्वरः ।॥ २५ ॥

महादेवो महावीरो महामोहो विनाशकः ।
महाभावो महादर्शी' महामुक्ति-प्रदायक ॥ २६ ॥

महाज्ञानी महायोगी महातेजा महात्मक. ।
महर्द्धिको महावीर्यो महासौख्यप्रदः स्थितः ॥ २७ ॥

महापूज्यो महावन्द्यो महाविघ्न—विनाशक. ।
महासौख्यो महापुंसो महामहिमा अच्युतः ॥ २८ ॥

मुक्तो मुक्तिजसंबोधः एकान्तेन विनिश्चलः ।
सर्वबन्ध-विनिर्मुक्तो सर्व-लोक-प्रधानक' ॥ २९ ॥

महाशूरो महाधीरो महादुःख—विनाशक, ।
प्रदाता च महामुक्ति महाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥

निर्मारो मारविध्वंसो निष्कामो विषयाच्च्युत ।
भगवांश्च महात्राता शान्ति-कल्याण-कारकः ॥ ३१ ॥

---

१ नग एव नाग , तेषु संसिद्धः मुक्ति प्राप्तः ।

परमात्मा परंज्योतिः परमेष्ठी परमेश्वरः ।
परमात्मा परानन्दः परः परमात्मिकः ॥ ३२ ॥
स्तुतोऽनन्तश्च विज्ञानी सांख्यनिर्वाणसंयुतः ।
नाकृतिः नाक्षरोऽवर्णो व्योमरूपो जितात्मक ॥ ३३ ॥
व्यक्ताव्यक्तः विसंबोधः संसारछेदकारण ।
निरवद्यो महाराध्यः कर्मजित धर्मनायकः ॥ ३४ ॥
बोधसत्को जगद्वन्द्यो विश्वात्मा नरकान्तकः ।
स्वयम्भू पापहृत् पूज्यः पुनीतो विभवस्तुतः ॥ ३५ ॥
वर्णातीतो महातीतो रूपातीतो निरंजन. ।
अनन्तज्ञान-सम्पूर्णो देवो देवेशनायक. ॥ ३६ ॥
वरेण्यो भवविध्वंसो योगिनां ज्ञानगोचरः ।
जन्म-मृत्यु-जरातीतोः सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥
विश्वदृक् भव्यसंबंधः पवित्रो गुणसागरः ।
प्रसन्नः परमाराध्य लोकालोक प्रकाशकः ॥ ३८ ॥
रत्नगर्भो जगत्स्वामी इन्द्रवन्द्यः सुराऽर्चितः ।
निष्प्रपंचो निरातंको निःशेषक्लेशभंजकः ॥ ३९ ॥
लोकेशो लोक—सेव्यो लोकालोकविलोकनः ।
लोकोत्तमो त्रिलोकेशो लोकाग्रशिखरस्थितः ॥ ४० ॥
नामाष्टक सहस्राणि ये पठन्ति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपदं यान्ति मुच्यन्ते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥

श्री भद्रबाहुस्वामिना विरचितं स्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीशान्तिनाथाष्टकम् ।

नाना-विचित्रं वहुदुःख-राशिं
नाना-समारम्भ-मोहस्य पाशं ।
पापाणि दोषाणि हरन्ति देवा,
इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥१॥

संसार-मध्ये मिथ्यात्वचिन्ता,
मिथ्यात्वमध्ये कर्माणि वन्धं ।
ते वन्धं छेदन्ति देवाधिदेवं,
इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥२॥

कामं च क्रोधमायति लोभं,
चतुर्कषायो इह जीववन्धं ।
ते वन्धं छेदन्ति देवाधिदेवं,
इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥३॥

जातस्य मरणं ध्रुवं तस्य वचनं,
वहति जीवं वहु जन्म दुःखं ।
ते वन्धं छेदन्ति देवाधिदेवं,
इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥४॥

चरित्रहीनो नर-जन्मवन्धो,
सम्यक्त्वरत्नं प्रति पालयन्ति ।

ते जीव सिद्धन्ति देवाधिदेव,

इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥५॥

मृदुवाक्यहीनो कठिनस्य चित्तो,

परजीवनिन्दा मनसा च वंधं।

ते वंधं छेदन्ति देवाधिदेवं,

इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥६॥

परद्रव्यचोरी, परदारसेवा,

हिंसाधिकारी अनुवृत्तिवंधं।

ते वंध छेदन्ति देवाधिदेवं,

इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥७॥

पुत्राणि मित्राणि कलत्र-वंधु,

वहु वन्धमध्ये इह जीववन्ध।

ते वन्ध छेदन्ति देवाधिदेवं,

इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथम् ॥८॥

॥ अथ महावीराष्टकम् स्तोत्रम् ॥

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित्त',

समं भान्ति ध्रौव्य-व्ययजनि-लसन्तोऽन्तरहिता।

जगत्साक्षी-मार्ग-प्रकटनयनो भानुरिव यो,

महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु नः॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमलं युगलं स्पन्दरहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तरमपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयन-पथगामी-भवतु नः ॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणिभा-जालजटिलं,
लसत्पादाम्भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्वाला, शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु नः॥३॥
यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध- सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ता शिवसुखसमाजं किमु तदा ?
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु नः ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगतो-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनय. ।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत-भवरागो ऽद्भुतगतिः
महावीरस्वामी नयन-पथगामी भवतु नः ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुधजन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु नः ॥६॥
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी-काम-सुभटः
कुमारावस्थायामपि निजबलाद् येन विजितः ।

स्फुरन्नित्यानंद-प्रशमपदराज्याय स जिनः ॥
महावीरस्वामी नयन पथगामी भवतु नः ॥७॥
महामोहान्तक-प्रशमनपराऽऽकस्मिक-भिषग्,
निरपेक्षो बन्धुर्विदितमहिमा मङ्गल-करः ।
शरण्यः साधूनां भव-भय-भृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु नः ॥८॥

उपसंहार

महावीराष्टकं स्तोत्रम्, भक्त्या भागेन्दुना कृतम् ।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥

वीर-वंदन

त्रिशलासुत श्री-वर-वीर जिनं, जिन-जन्म-जरार्णवदूरीकरणम् ।
करुणा-समता-रस-सिन्धुवरं, वरवीर-विभुं प्रणमाम्यनघम् ॥१॥
मघवोघविपूजित-पादयुगं, युगलाखिलज्ञानसमानचित्तम् ।
चित्तमत्त-मतंगजवश्यकरं, वर-वीर-विभुं प्रणमामि मुदम् ॥२॥
मुदिताऽमर-मानव-देव-गणं, गणनायक-नाशितकर्मदलम् ।
दलिताऽखिल कोप-कृशानुवरं, वर-वीर-विभुं प्रणमामि मुदम् ३.
मुदितेन्दुनिभं सुयशोपमलं, मलहीन-सुहाटक-देव शुभम् ।
शुभ-गर्जित-सर्व जगत्नुवरं, वर-वीर-विभुं प्रणमामि मुदम् ॥४॥
मुदिते तर तुंग-भुजंगकरं, क्रूरता-विरह-क्षमबोध-करम् ।
करणे किल कृच्छ सहिष्णुवरं, वर-वीर-विभुं प्रणमामि मुदम् ५.

मुदितामृतावाएयवजेपवनं, जननी जठराजितज्ञानत्रयम् ।
त्रयशत्रुदलं दलनप्रवरं, वर-वीर-विभुं प्रणमामि मुदम् ॥६॥
मुदिते न गतं गमनागमनं मकर-ध्वज-भारण-वीर-भटम् ।
भट-भूप-प्रमोह-प्रमाणवरं, वर-वीर-विभु प्रणमामि मुदम् ॥७॥
मुदितेन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रपरं, परिमर्दित-मानव-मान-धनम् ।
धन केवलज्ञानं तमोऽरि वरं, वर-वीर विभुं प्रणमामि मुदम् ॥८॥

श्री सिद्ध-स्तोत्र (क)

सकल करम टाल, वश कर लियो काल ।
मुकति में रह्या माल, आत्मा को तारी है ॥१॥
देखत सकल भाव हुआ, है जगत राव ।
सदा हि क्षायिक भाव, भये अविकारी हैं ॥२॥
अचल अटल रूप, आवे नहीं भवकूप ।
अनूप, सरूप ऊप, ऐसे ऋद्धि धारी हैं ॥३॥
कहत तिलोकरिख, बताओ ए वास प्रभु ।
सदाही उगंते सूर, वंदना हमारी है ॥४॥

श्री सिद्ध-स्तोत्र (ख)

(हरिगीत छन्द)

तुम तरण तारण दुःख निवारण भविक[1] जीव आराधनं ।
श्रीनाभिनन्दन जगत वन्दन नमो सिद्ध निरंजनम् ॥१॥

---

1 भविक = भव सम्बन्धी, समार सम्बन्धी ।

जगत भूषण विगत दूषण प्रणव प्राण-निरंजनम् ।
ध्यान-रूप अनूप उपमं नमो सिद्ध-निरंजनम् ॥२॥
गगन-मण्डल मुक्ति पदवी सर्व ऊर्ध्व निवासिनं ।
ज्ञान ज्योति अनन्त राजे नमो सिद्ध निरंजनम् ॥३॥
अज्ञान-निद्रा विगत वेदन दलित मोह निरायुषं ।
नाम गोत्र निरन्तरायं नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ४ ॥
विकट क्रोधा मान योद्धा माया लोभ विसर्जनम् ।
राग द्वेष विमर्द अंकुर नमो सिद्ध निरंजनम् ॥५॥
विमल केवलज्ञान लोचन ध्यान शुक्ल समीरितं ।
योगिनातिगम्यरूपं नमो सिद्ध निरंजनम् ॥ ६ ॥
योग ने समोसरण मुद्रा परिपल्यंकासनं ।
सर्व दीशे तेज रूपं नमो सिद्ध निरंजनम् ॥७॥
जगत जिन के दास दासी तास आश निरासनं ।
चन्द्र पे परमानन्द रूपं नमो सिद्ध निरंजनम् ॥८॥
स्व-समय समकित दृष्टि जिनकी सोए योगी अयोगिकं ।
देखते मन लीन होवे नमो सिद्ध निरंजनम् ॥९॥
तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा भेद पंच-दशादिकं ।
सर्व कर्म विमुक्त चेतन्य नमो सिद्ध निरंजनम् ॥१०॥

---

१ विगत = नष्ट, अतीत । २ विकट = भयानक, डरावना ।
३ विसर्जनम् = त्याग, छोड देना । ४ विमल = निर्मल, निष्पाप पवित्र
५ योगिनातिगम्यरूपम् = योगियो के न अतिक्रम करने योग्य रूप ।

चन्द्र सूर्य-दीप मणि की ज्योति येन अलंघितं ।
ते ज्योति थी अपरं-ज्योति नमो सिद्ध निरंजनम् ॥११॥
एक मांहि अनेक राजे, अनेक मांहि एककं ।
एक अनेक की नांहि संख्या नमो सिद्ध निरंजनम् ॥१२॥
अजर अमर अलक्ष्य अनन्तर, निराकार निरंजनं ।
परिब्रह्म ज्ञान अनन्त दर्शन नमो सिद्ध निरंजनम् ॥१३॥
अतुल[1] सुख की लहर मे प्रभू लीन रहे निरन्तरं[2] ।
धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन नमो सिद्ध निरंजनम् ॥१४॥
ध्यान धूपं मनपुष्पं पंचेन्द्रियहुताशनं[3] ।
क्षमा जाप सन्तोष पूजा पूजो देव निरंजनम् ॥१५॥
तुम मुक्तिदाता कर्मघाता दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन महावीर जिनेश्वरम् ॥१६॥

श्री सिद्ध-स्तोत्र (ग)

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जांसे होवे मंगलाचार ।

अज अविनाशी अगम अगोचर,
अमल अचल अविकार ।
अन्तर्यामी त्रिभुवन-स्वामी,
अमित शक्ति भण्डार ॥ १ ॥
कर पण्ड कमट्ठ अट्ठ गुण,
युक्त मुक्त संसार ।

---

१ अतुल = अगाध, अत्यन्त अधिक । २ निरन्तरम् = सर्वदा, हमेशा ।
३ हुताशनम् = अग्नि, आग ।

पायो पद परमिष्ट तास पद,
वन्दो वारम्वार ॥ २ ॥

सिद्ध प्रभु का स्मरण जग में,
सकल सिद्ध दातार ।
मन वाञ्छित पूरण सुरतरु सम,
चिन्ता चूरण हार ॥ ३ ॥

जपे जाप योगीश रात-दिन,
ध्यावे हृदय मंझार ।
तीर्थङ्कर हू प्रणमे उनको,
जब होवे अणगार ॥ ४ ॥

सूर्योदय के समय भक्तियुत,
स्थिर-चित्त दृढता धार ।
जपे "सिद्ध" यह जाप तास वर,
होवे ऋद्धि अपार ॥ ५ ॥

सिद्ध स्तुति पढे भाव से,
प्रति दिन जो नर नार ।
सो दिव शिव सुख पावे,
निश्चय बना रहे सरदार ॥ ६ ॥

'माधवमुनि' कहे सकल संघमें,
वढ़े हमेशा प्यार ।
विद्या विवेक विनय सुमनचित,
पावे प्रचुर प्रचार ॥ ७ ॥

श्री विनयचन्द—चौवीसी ।

१—श्रीऋषभजिन—स्तवन

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमूं सिरनामी तुम भणी ।
प्रभु अंतरजामी आप, मोपर म्हर करीजे हो ।
मेटीजे चिन्ता मनतणी ॥
म्हारा काटो पुराकृत पाप, श्री आदीश्वर स्वामी ॥१॥
आदि धरम की कीधी हो, भरतक्षेत्र सर्पणी काल में ।
प्रभु जुगला धरम निवार, पहिला नरवर मुनिवर हो ॥
तीर्थंकर जिन हुआ केवली, प्रभु तीरथ थाप्या चार ॥२॥
मा "मरुदेवी" थारी हो, गज हौदे मुक्ति पधारिया ।
तुम जनम्या ही प्रमाण, पिता 'नाभिमहाराजा' हो ॥
भव देव तणो करी नर थया, प्रभु पाम्यां पद निरवाण ॥३॥
भरतादिक सो-नंदन हो, बे पुत्री 'ब्राह्मी' 'सुन्दरी' ।
प्रभु ए थारां अंगजात, सबला केवल पाया हो ॥
समाया अविचल जोत में, कांइ त्रिभुवन में विख्यात ॥४॥
इत्यादिक तारया हो, जिन कुल प्रभु तुम ऊपन्या ।
कांइ आगम में अधिकार, और असंख्य तारया हो ॥
उद्धारया सेवक आपरा, प्रभु सरणा ई आधार ॥५॥
अशरण शरण कहीजे जो, प्रभु बिरद विचारो साहिबा ।

कांइ कहो गरीब निवाज, शरण तुम्हारी आयो हो।
हूँ चाकर जिन चरना तणो, म्हारी सुणिये अरज अवाज ॥६॥
तू करुणाकर ठाकुर हो, प्रभु धरम दिवाकर जग गुरु।
कांइ भव दुःख दुष्कृत टाल, 'विनयचंद' ने आपो हो॥
प्रभु निजगुण संपत शाश्वती, प्रभु दीनानाथ दयाल ॥७॥

२-श्री अजितजिन-स्तवन

(कुविसन मारग माथे रे धिग-यह देशी)

श्री जिन अजित नमुं जयकारी, तुम देवन को देवजी।
जयशत्रु राजा ने विजया राणी को, आतमजात तुमेव जी॥
श्री जिन अजित नमुं जयकारी ॥टेर ॥१॥

दूजो देव अनेरा जग में, ते मुझ दाय न आवेजी।
तह मन तह चित्त हमने, तूहिज अधिक सुहावेजी ॥२॥
सेव्या देव घणा भव भव में, तो पिण गर्ज न सारी जी।
अब के श्री जिनराज मिल्यो तू, पूरण उपकारीजी ॥३॥
त्रिभुवन में जस उज्जवल तेरो, फैल रह्यो जग जाने जी।
वंदनीक पुजनीक सकल को, आगम एक बखाने जी ॥४॥
तू जग जीवन अतरजामी, प्राण अधार पियारो जी।
सब विधि लायक संतसहायक, भक्त वत्सल व्रत थारोजी ५
अष्ट सिद्धि नवनिधि को दाता, तो सम और न कोईजी।
वधे तेज सेवक को दिन-दिन, जेथतेथ जय होयजी ॥६॥
अनन्त-ज्ञान-दर्शन संपति ले, ईश भयो अविकारी जी।
अविचलभक्ति 'विनयचन्द' को दो, जाणुं रीझ तुम्हारी जी ७

३—श्री संभवजिन–स्तवन

(आज म्हारा पारसजीने चालो वंदन जइए–यह देशी)

आज म्हारा संभव जिनका, हित चितसुं गुण–गास्यां ।
मधुर-मधुर स्वर राग अलापी, गहरे शब्द गुजास्यां राज ।
आज म्हारा संभव जिनका, हित चित्तसुँ गुण गास्यां ॥ १ ॥
नृप "जीतारथ" "सेना' रागी, तासुत सेवक थास्यां ।
नवधा भक्तिभाव सों करने, प्रेम मगन हुइ जास्यां राज ॥ २ ॥
मन वच काय लाय प्रभु सेती, निसदिन सांस उसास्यां ।
संभव जिनकी मोहिनी मूरति, हिये निरंतर ध्यास्यां राज ॥३॥
दीन दयाल दीन बंधु के, खाना याद कहास्यां ।
तन-धन प्राण समरपी प्रभु को, इनपर वेग रिझास्यां राज ॥४॥
अष्ट कर्म दल अति जोरावर, ते जीत्या सुख पास्यां ।
जालम मोह मार को जालें, साहस करी भगास्यां राज ॥५॥
ऊवट पंथ तजी दुर्गति को, शुभगति पंथ समास्यां ।
आगम अरथ तणे अनुसारे, अनुभव दशा जगास्यां राज ॥६॥
काम क्रोध मद लोभ-कपट तजि, निज गुणसुं लवलास्यां ।
'विनयचंद' संभव जिम तूठ्यॉ, आवागमन मिटास्यां राज ॥७॥

४—श्री अभिनन्दनजिन स्तवन

(आदर जीव क्षमागुण आदर–यह देशी)

श्री अभिनन्दन दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन योग जी ।
आशा पूरो चिन्ता चूरो, आपो सुख आरोग जी ॥ १ ॥

'संवर' राय 'सिधारथ' राणी, तेहनो आतम जानजी।
प्राण पियारो साहिब सांचो, तूही मात ने तातजी ॥श्री०॥२॥
कइयक सेव करें शंकर को, कइयक भजें मुरार जी।
गणपति सूर्य उमा कइ सुमरें, हूँ सुमरूँ अविकारजी ॥ ३ ॥
देव कृपा सुँ पामें लक्ष्मी, सो इण भव को सुख जी।
तो तूठाँ इन भव परभव में, कदी न व्यापे दुःखजी ॥ ४ ॥
यद्यपि इन्द्र नरेन्द्र निवाजे, तद्यपि करण निहालजी।
तू पूजनीक नरेन्द्र इन्द्र को, दीन दयाल कृपाल जी ॥ ५ ॥
जब लग आवागमन न छूटे, तब लग ए अरदासजी।
सम्पति सहित ज्ञान समकित गुण, पाऊँ दृढ़ विश्वासजी ॥६॥
अधम उधारण विरुद तिहारो, जोवो इण संसारजी।
लाज 'विनयचन्द' की अब तो ने, भवनिधि पार उतारजी ॥७॥

५—श्री सुमतिजिन-स्तवन

(श्री शितल जिन साहिबाजी—यह देशी)

सुमति जिणेसर साहिबाजी 'मेघरथ' नृप नो नन्द।
'सुमंगला' माता तणो जी, तनय सदा सुखकंद ॥
प्रभु त्रिभुवन तिलोकजी ॥ १ ॥

सुमति सुमति दातार, महा महिमानिलोजी।
प्रणमुँ वार हजार, प्रभु त्रिभुवन तिलोजी ॥प्रभु०॥२॥
मधुकर जो मन मोहियोजी, मालती कुसुम सुवास।
त्यूँ मुज मन मोह्यो सही, जिन महिमा सुविमास ॥३॥

ज्यूँ पङ्कज सूरजमुखीजी, विकसे सूर्य प्रकाश ।
त्यूँ मुज मनड़ो गह्योजी, सुनि जिन चरित हुलास ।
पपइयो पीउ-पीउ करेजी, जान वर्षाॠतु मेह ।
त्यूँ मो मन निसदिन रहै, जिन सुमरन सूँ नेह ॥ ५ ॥
कामा भोगनी लालसाजी, थिरता न धरे मन्न ।
पिण तुम भजन प्रतापथी, दाझै दुरमत्ति वन्न ॥ ६ ॥
भवनिधि पार उतारियेजी, भक्त वच्छल भगवान् ।
'विनयचन्द' वीनती, थें मानो कृपानिधान ॥ ७ ॥

६—श्री पद्मप्रभुजिन—स्तवन

(श्याम कैसे गज को वन्द छुडायो—यह देशी)

पदम प्रभु पावन नाम तिहारो, पतित उद्धारन हारो ॥टेर॥
जदपि धीवर भील कसाई, अति पापिष्ट जमारो ।
तदपि जीव हिंसा तज प्रभु भज, पावे भवनिधि पारो ॥१॥
गौ ब्राह्मण प्रमदा बालक की, मोटी हत्या च्यारो ।
तेहनो करणहार प्रभु भजने, होत हत्यासूँ न्यारो ॥ २ ॥
वेश्या चुगल छिनार जुआरी, चोर महा वटमारो ।
जो इत्यादि भजें प्रभु तोने, तो निवृते संसारो ॥ पदम०॥३॥
पाप पराल को पुंज बन्यो, अति मानों मेरु आकारो ।
ते तुम नाम हुताशन सेती, सहजे प्रज्ज्वलत सारो ॥ ४ ॥
परम धर्म को मरम महारस, सो तुम नाम उचारो ।
या सम मंत्र नहीं कोई दूजो, त्रिभुवन मोहन गारो ॥ ५ ॥

तो सुमरण विन इण कलयुग में, अवर न कोइ अधारो।
मै वारी जाउं तो तो सुमरण पर, दिन दिन प्रीत वधारो ॥६॥
'सुषमा राणी' को अगजात तू, 'श्रीधर' राय कुमारो।
'विनयचन्द' कहे नाथ निरंजन जीवन प्राण हमारो ॥ ७ ॥

७—श्री सुपार्श्वजिन—स्तवन

(प्रभुजी दीनदयाल सेवक सरणे आयो—यह देशी)
श्री जिनराज सुपार्श्व, पूरो आस हमारी ॥ टेर ॥
"प्रतिष्ठसेन" नरेश्वर को सुत, "पृथ्वी" तुम महतारी।
सुगुण सनेही साहिब सांचो, सेवक ने सुखकारी ॥ १ ॥
धर्म काम धन मोक्ष इत्यादिक, मन वांछित सुख पूरो।
वार—वार मुझ यही वीनती, भव-भव चिंता चूरो॥ २ ॥
जगत् शिरोमणि भक्ति तिहारी, कल्पवृक्ष सम जाणूं।
पूरणब्रह्म प्रभु परमेश्वर भव—भव तुम्हें पिछाणूं॥ ३ ॥
हूँ सेवक तू साहिब मेरो, पावन पुरुष विज्ञानी।
जनम जनम जित-तित जाऊं तो, पालो प्रीति पुरानी॥४॥
तारण-तरण सरण असरण को, विरुद इसो तुम सोहे।
तो सम दीनदयाल जगत में, इन्द्र नरेन्द्रन को है।५॥
स्वयंभू रमण वड़ो समुद्र में, शैल सुमेर विराजे।
तू ठाकुर त्रिभुवनमें मोटो, भक्ति किया दुःख भाजे ॥६॥
अगम अगोचर तू अविनाशी, अलख अखंड अरूपी।
चाहत दरस 'विनयचंद' तेरो, सच्चिदानंद स्वरूपी ॥७॥

८--श्री चन्द्रप्रभजिन--स्तवन

(चौकनी-देशी)

जय जय जगत शिरोमणी, हूँ सेवक ने तू धणी ।
अब तोसूँ गाढी बागी, प्रभु आश पूरो हम तणी ॥
मुझ म्हेर करो, चन्द्र प्रभु जग जीवन अन्तरजामी ।।टेर।।
भव दुःख हरो, सुणिये अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी॥१॥

"चन्द्रपुरी" नगरी होती, "महासेन" नामा नरपति ।
राणी 'श्रीलखमा' सती, तस नन्दन तू चढ़ती रती ।।२॥

तू सर्वज्ञ महाज्ञाता, आतम अनुभव को दाता ।
तो तूठां लहिये साता, धन्य जगत में तुम ध्याता ।।३॥

शिव सुख प्रार्थना करसूँ, उज्ज्वल ध्यान हिये धरसूँ ।
रसना तुम महिमा करसूँ, प्रभु इण विध भवसागर तिरसूँ ४

चंद्र चकोरन के मन में, गाज अवाज होवे घनमें ।
पिय अभिलाषा ज्यों त्रियतनमें,त्यो वसियो तू मो चितवनमें५

जो सुनजर साहिब तेरी, तो मानो विनति मेरी ।
काटो परम भरम बेरी, प्रभु पुनरपि नहिं करूँ भव फेरी ॥६॥

आतम-ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती लवलागी ।
अन्य देव भ्रमना भागी, 'विनयचंद' तिहारो अनुरागी ।।७।।

९--श्री सुविधिजिन--स्तवन

(बुढापो वेरी आवियो हो-यह देशी)

'काकंदी' नगरी भली हो, 'श्रीसुग्रीव नृपाल ।
'रामा' तस पटराणी हो, तस सुत परम कृपाल ।।
श्री सुविधि जिणेसर वंदिये हो ।।टेर॥१।।

प्रभुता त्यागी राजनी हो, लीधो संजम भार ।
निज आतम हो अनुभव थकी, पाम्या पद अधिकार ॥ २ ॥
अष्ट कर्म नो राजवी हो, मोह प्रथम क्षय कीन ।
सुध समकित चारित्रनो हो, परम जायक गुणलीन ॥ ३ ॥
ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो, अन्तराय कियो अन्त ।
ज्ञान दरशन बल ये तिहुँ हो, प्रकट्या अनन्तानन्त ॥ ४ ॥
अव्याबाध सुख पामिया हो- वेदनी करम खपाय ।
अवगाहना अटल लही हो, आयु क्षय कर जिनराय ॥ ५ ॥
नाम करम नो क्षय करी हो, अमूर्त्तिक कहाय ।
अगुरु लघुपणो अनुभव्यो हो, गोत्र करम मुकाय ॥ ६ ॥
अष्ट गुणाकर ओलख्यो हो, जोति रूप भगवन्त ।
'विनयचन्द' के उर वसो हो, अहोनिश प्रभु पुष्पदंत ॥ ७ ॥

१०--श्री शीतलजिन--स्तवन

'श्रीदृढरथ' नृप तो पिता, 'नन्दा' थारी माय ।
रोम-रोम प्रभु मो मणी, सीतल नाम सुहाय ॥
जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥टेर॥१॥

करुणानिधि किरतार, सेव्या सुरतरु जेहवो ।
वांछित सुख दातार, जय जय त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥
प्राण पियारा तुम प्रभु, पतिव्रता पति जेम ।
लगन निरंतर लग रही, दिन-दिन अधिको प्रेम ॥ ३ ॥

शीतल चन्दन नी परे, जपता निस-दिन जाप।
विषय कषाय थी ऊपनी, मेटो भव-दुःख ताप॥ ४॥
आर्त्त रौद्र परिणाम थी, उपजे चिन्ता अनेक।
ते दुःख कापो मानसिक, आपो अचल विवेक॥ ५॥
रोगादिक क्षुधा तृषा, शस्त्र अशस्त्र प्रहार।
सकल शरीरी दुःख हरो, दिलसूं विरुद्ध विचार॥ ६॥
सुप्रसन्न होय शीतल प्रभु, तू आशा विसराम।
'विनयचन्द' कहे मो भणी, दीजे मुक्ति मुकाम॥ ७॥

११--श्री श्रेयांसजिन--स्तवन

(राग-काफी-देसी-होरी नी)

चेतन जाण कल्याण करन को, आन मिल्यो अवसररे।
शास्त्र प्रमाण पिछान प्रभु गुण, मन चंचल थिर कररे॥
श्रेयांस जिनन्द सुमररे॥ १॥
सास उसास विलास भजन को, दृढ़ विश्वास पकररे।
अजपाभ्यास प्रकाश हिये विच, सो सुमरन जिनवररे॥२॥
कंदर्प क्रोध लोभ मद माया, ये सबही परहररे।
सम्यक्‌दृष्टि सहज सुख प्रगटे, ज्ञान दशा अनुसररे॥ ३॥
झूठ प्रपंच जीवन तन धन अरु, सजन सनेही घररे।
छिनमे छोड़ चले पर भव को, बांध शुभाशुभ थररे॥ ४॥
मानुष जनम पदारथ जाकी, आसा करत अमररे।
ते पूरब सुकृत कर पायो, धरम-मरम दिल धररे॥ ५॥

'विश्वसेन' नृप 'विष्णाराणी' को, नंदन तू न विसररे।
सहज मिटे अज्ञान अविद्या, मुक्ति पंथ पग भररे॥ ६॥
तू अविकार विचार आतम गुन, भव-जंजाल न पररे।
पुद्गल चाह मिटाय 'विनयचन्द', ते जिन तू न अवररे॥७॥

१२—श्री वासुपूज्यजिन-स्तवन

(तेरी फुलसी देह पलक में पलटे—यह देशी)

प्रणमुं वासुपूज्य जिन नायक, सदा सहायक तू मेरो।
विषम वाट घाट भयथानक, परमेश्वर शरनो तेरो॥ १॥
खलदल प्रबल दुष्ट अति दारुण, जो चौ तरफ दिये घेरो।
तो पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी, अरियन होय प्रकटे चेरो॥२॥
विकट पहाड़ उजाड़ बीच कोई, चोर कुपात्र करे हेरो।
तिण विरियां करिया तो सुमरन, कोइ न छीन सके डेरो ३
राजा बादशाह जो कोइ कोपे, अति तकरार करे छेरो।
तदपि तू अनुकूल होय तो, छिन में छूट जाय सब केरो ४.
राक्षस भूत पिशाच डाकिनी, शाकिनी भय न आवे नेरो।
दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागे, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो ५
विस्फोटक कुष्टादिन संकट, रोग असाध्य मिटे सगरो।
विष प्यालो अमृत होय प्रगमें, जो विश्वास जिनन्द केरो ६.
मात 'जया' 'वसु' नृप के नन्दन, तत्व जथारथ बुध मेरो।
वे कर जोड़ी 'विनयचंद' विनवे, वेग मिटे मुझ भव फेरो ७.

१३--श्रीविमलनाथजिन--स्तवन

(अहो शिवपुर नगर सुहामणो-यह देशी)

विमल जिनेश्वर सेविये, थारी बुध निर्मल हो जायरे जीवा।
विषय-विकार विसार ने, तू मोहनी करम खपाय रे।
जीवा, विमल जिनेश्वर सेविये॥ १॥
सूक्ष्म साधारण पणे, प्रत्येक वनस्पती मांयरे, जीवा।
छेदन भेदन तैं सहे, मर-मर उपज्यो तिण कायरे॥ २॥
काल अनत तिहां भम्यो, तेहना दुःख आगमथी संभालरे जीवा।
पृथ्वी अप तेउ वायु में, रह्यो संख्यातासंख्यातो कालरे॥३॥
एकेन्द्री सूं बेन्द्री थयो, पुन्याई अनंती वृद्धिरे, जीवा।
सन्नीपचेंन्द्री लगें पुन्य वध्या, अनंतानंत प्रसिद्ध रे॥ ४॥
देव नरक तिर्यंच में, अथवा मानव भव वीचरे, जीवा।
दीन पणे दुःख भोगव्या, इण चारों ही गति बीचरे॥ ५॥
अवके उत्तम कुल मिल्यो, भेटया उत्तम गुरु साधरे, जीवा।
सुण जिन वचन सनेह से, समकित व्रत शुद्ध आराधरे॥ ६॥
पृथ्वीपति 'कृतभानु' ओ, 'सामाराणी' को कुमाररे, जीवा।
"विनयचंद" कहे ते प्रभु, सिर सेहरो हिवड़ारो हाररे॥ ७॥

१४--श्री अनन्तजिन--स्तवन

(वेगे पधारोरे महलथी-यह देशी)

अनंत जिनेश्वर नित नमूं, अद्भुत जोत अलेख।
ना कहिये ना देखिये, जाके रूप न रेख॥ अनंत॥ १॥

सूक्ष्म थी सूक्ष्म प्रभु, चिदानंद चिद्रूप ।
पवन शब्द आकाशथी, सूक्ष्म ज्ञान स्वरूप ॥अनंत ॥२॥
सकल पदारथ चिन्तवू जे-जे सूक्ष्म होय ।
तिणथी तू सूक्ष्म महा, तो सम अवर न कोय ॥अनंत॥३॥
कवि पंडित-कही कही थके, आगम अर्थ विचार ।
तो पण तुम अनुभव तिको, न सके रसना उच्चार ॥अ०॥४॥
आप भणे मुख सरस्वती, देवी आपो आप ।
कही न सके प्रभु तुम स्तवा, अलख अजप्पा जाप ॥अ०॥५॥
मन बुध वाणी तो विषे, पहुंचे नहीं लगार ।
साक्षी लोकालोकनो, निर्विकल्प निर्विकार ॥ अनंत ॥६॥
मा 'सुजसा' 'सिंहरथ' पिता, तस सुत 'अनंत' जिनंद ।
"विनयचंद" अब ओलख्यो, साहिब सहजानंद ॥अनंत॥७॥

१५--धर्मजिन--स्तवन

(आज नहेजोरे दीसै नाहलो-यह देशी)

धरम जिनेश्वर मुझ हिवडे वसो, प्यारो प्राण समान ।
कबहूँ न विसरूं हो चितारूं नहीं, सदा अखंडित ध्यान ॥१॥
ज्यों पनिहारी कुम्भ न विसरे नटवो नृत्य निदान ।
पलक न विसरे हो पदमनि पियुभणी, चकवी न विसरे भान
ज्यूं लोभी मन धनकी लालसा, भोगी के मन भोग ।
रोगी के मन माने औषधी, जोगी के मन जोग ॥ ३ ॥

इण पर लागी हो पूरण प्रीतड़ी, जाव जीव पर्यन्त ।
भव-भव चाहूँ हो न पड़े आंतरे, भव भजन भगवंत ॥४॥
काम क्रोध मद मत्सर लोभथी, कपटी कुटिल कठोर ।
इत्यादिक अवगुण कर हूँ मर्यो, उदय कर्मके जोर ॥ ५ ॥
तेज प्रताप तुम्हारो प्रगटे, मुज हिवड़ा में आय ।
तो हूं आतम निज गुण संभालने, अनंत बलि कहिवाय ॥६॥
'भानु' नृप 'सुव्रता' जननी तणो, अगज त अभिराम ।
'विनयचन्द' ने वल्लभ तू प्रभु, सुध चेतन गुण धाम ॥ ७ ॥

१५--श्रीशांतिजिन--स्तवन (क)

(प्रभुजी पधारो हो नगरी हमतणी-यह देशी)

'विश्वसेन' नृप 'अचला' पटरानी,
तस सुत कुल सिणगार सौभागी ।
जनमत शांति करी निज देश में,
मरी मार निवा हो सौभागी ॥शांति०॥१॥
शांतिदायक तुम नाम हो सौभागी,
तन मन वचन सुध कर ध्यावतां ।
पूरे सघली आस हो सौभागी,
शांति जिनेश्वर साहिब सोलमा ॥ २ ॥
विघन न व्यापे तुम सुमरन कियां,
नासे दारिद्र दुःख हो सौभागी ।

अष्ट सिद्धि नवनिधि पग पग मिले,
प्रगटे सगला सुख हो, सौभागी ॥ ३ ॥
जेहने सहायक शांति जिनन्द तू,
तेहने कमीय न कांइ हो, सौभागी ।
जे जे कारज मन में तेवड़,
ते-ते सफला थाय हो, सौभागी ॥ ४ ॥
दूर दिसावर देश प्रदेश मे,
भटके भोला लोग हो, सौभागी ।
सानिधिकारी सुमरन आपरो,
सहज मिटे सहू शोक हो, सौभागी ॥५॥
आगम-साख सुणी छे एहवी,
जिण-सेवक होय हो, सौभागी ।
तेहनी आशा पूरे देवता,
चौसठ इन्द्रादिक सोय हो सौभागी ॥६॥
भव-भव अन्तरयामि तुम प्रभु,
हमने छे आधार हो, सौभागी ।
बे कर जोड़ 'विनयचन्द' विनवे,
आपो सुख श्री कार हो, सौभागी ॥७॥

श्री शान्तिजिन स्तवन (ख)

(त्रिभंगी छन्द)

उवसग्ग हरणं शान्ति करणं, जिनपद शरणं हितकारी ।
चौवीस जिंनद अतिआनंद, जाप जपंतं उपकारी ॥ १ ॥
काया कंचन सारी रोग निवारी, उग्र विहारी उज्जुमती ।
जय जय जिन वाणी बोध जगानी, पुण्य बखानी सरस्वती ॥२॥

सब चौसठ इन्द्र सेवे जिनेन्द्रं, इन्द्रं चन्द्रं सेव करे।
पाय प्रणमत पूरा सुर असुरा, हाजिर हजुरा कोटिवरे॥३॥
राजन पति राया हर्ष भराया शीष नमाया छत्रपति।
उवसग्ग हरणं शान्ति करणं जिन पद शरणं हितकारी॥४॥

श्री शान्तिजिन स्तवन (ग)

श्रीशान्ति जिनेश्वर शान्ति करें,
सब पाप पटल दुःख दूर हरें।
केवल कमला वेगवरे,
श्रीशान्ति जिनेश्वर शान्ति करें॥ १ ॥
राज काज दरबार घरे यश-
कीर्ति क्रोड़ कलोल करें,
दुश्मन द्वेषी पांव परे,
श्रीशान्ति जिनेश्वर शान्ति करें॥ २ ॥
विपद विकट दुःख दूर हरे,
वलि लक्ष्मी लब्धि भण्डार भरे।
विषम पन्थ नर जे न डरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करे॥ ३ ॥
पुत्र परिवारे लीला करे,
आवे परदेशी लाभ घरे।
विमल सुमन होय प्रीति धरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करे॥ ४ ॥

ध्यान तुम्हारे चित्त धरे,
डायण सायण नहीं दखल करे।
यक्ष ओटिंगण भूत डरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करें॥ ५॥
ठग फांसीगर दूर फिरे,
नर भूल्योई भरम्यो संग फुरे।
चमकती दामन से उवरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करें॥ ६॥
रोग शोक दुःख दूर हरे,
फोड़ा फुन्सी नहीं पीड़ करें।
ज्वर दाह तुम्हारे नाम टरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करें॥ ७॥
जन वत्सल तू विरुद धरे,
वलि तू वाहा वेली छे माहरे।
तू भव भवना पाप हरे,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करें॥ ८॥
विपम पन्थ दुखमी आरे,
मानो वलि नवला क्षेम तरे।
चरण आये को शरण धरे,
श्रीशांति जिनेश्वर शांति करें॥ ९॥
चाकर में चूक परे न परे,
धीरा ठाकुर निर्वाह करे।

जिन वाणी तो एक संत उच्चरे,
श्रीशांति जिनेश्वर शांति करें ॥ १० ॥
ऋषिक्षेम शरणे थारे,
तुम सांचा मात पिता म्हारे ।
शरण तुम्हारी संसार तरे,
श्रीशांति जिनेश्वर शांति करें ॥ ११ ॥

श्री शांतिजिन स्तवन (घ)

शांतिनाथ प्रभु सोलमांजी, जग तारण जगदीश ।
विनती सुन जो साहबा मैं अर्ज करूं धर शीष ॥
प्रभुजी मारा प्राण आधारोरे सर्व जीव हितकारोरे।।टेक॥१॥
साता हुई सब देश में प्रभु पेट में पौढ्या छो आय ।
जनम्या सेती साहिबा थें तो आया वणारी दाय ॥ २ ॥
चक्रवर्त्ती पदवी थी लीवी प्रभु कीनो भरत मांहे राज ।
सुख विलासी संयम लियो, पंथे साध्या छे आतम काज ॥३॥
सुर नर क्रोड़ सेवा करे प्रभु करवे अमृत धार ।
अमी झरंता साहिबा थाने देखता हर्ष अपार ॥ ४ ॥
तीर्थनाथ त्रिभूवन धणी प्रभु तीर्थ थाप्या चार ।
समोसरण मेरा सुनों कांई सिद्धव करी एक सार ॥ ५ ॥
लख चौरासी जीव योनि में, प्रभु भटक्यो अनन्ती वार ।
अब सेवक शरणे आवियो माने भव सागर थी पार ॥ ६ ॥
देव गण हम ध्याइया, प्रभु गरज सरी नहीं लगार ।
तुम छो सांचा साहबा मैं तो आराध्य मन्झारजी ॥ ७ ॥

साताकारी संतजी प्रभु त्रिभुवन तारण हार ।
विनती सुनजो साहबा मारी आवागमन निवार ॥ ८ ॥
ऋषि चोथमल की विनती प्रभु सुणियो हितिया चंद ।
अविचल पदवी पायने माने आपोनी अचला का चन्द ॥९॥

श्री शांतिजिन--स्तवन (ङ)

शांतिनाथ कीजे को जाप, क्रोड़ भवनां कापे पाप ।
शांतिनाथजी म्होटा देव, सुरनर सारे जेहनी सेव ॥१॥
दुःखदारिद्र जावे दूर, सुख संपत्ति होवे भरपुर ।
ठग फांसीगर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग ॥२॥
राजलोकमां कीर्ति घणी शांति जिनेश्वर माथे धणी ।
जो ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधीकुं मान ॥३॥
गडगुंबड पीडा मटी जाय, देखी दुश्मन लागे पाय ।
सघलो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकित काटयां कर्म ॥४॥
सुणी प्रभु मोरी अरदास, हुं सेवक तमे पुरो आश ।
मुज मन चिंतित कारज करो, चिंता आरति विघ्न ज हरो ५
मेटो म्हारां आल जंजाल, प्रभु मुजने तुं नयण निहाल ।
आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु म्हारा काम ॥ ६ ॥
जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोती वंधा-फूला कटे ।
चेप लावण दोनुं जल जाय, त्रिण औषध कठ जावे छांय ॥७॥
शांतिनाथनः नामथी थाय, आंखे दुष्ट पडल कट जाय ।
फमलो पीलो जल जल झरे, शांति जिनेश्वर शाता करे ॥८॥

गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मित्रको मले संयोग ।
एहवा देव न दीसे और, नहीं चाले दुश्मन को जोर ॥ ६ ॥
लुंटारा सब जावे नाश, दुर्जन फीटो होवे दास ।
शांतिनाथकी कीर्ति घणी, कृपा करो तुमे त्रिभुवन धणी ॥१०॥
अरज करुं छुं जोड़ी हाथ, आप शुं नहीं कोई छानी वात ।
देखी रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥११॥
मुज मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ।
तुम सम जग मांहि नहीं कोय, तुम भजवाथी साता होय १२
तुम पास चले नहीं मिरगी रोग, ताव तेजरो नांखे तोड़ ।
मारी मिटाइ कीधी प्रभु संत. तुज गुणनो नहीं आवे अंत १३
तुमने सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जती ।
काटो संकट राखो मान, अविचल पदनुं आपो स्थान ॥१४॥
संवत अढार चोराणुं जाण, देश मालवो अधिक वखाण ।
शहर जावरा चैतर मास, हुं प्रभु तुम चरणोंको दास ॥१५॥
ऋषि रघुनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभुजी म्हारा फंद ।
हुं जोउं प्रभुजीनी वाट, मुज आरती चिंता सभी काट ॥१६॥

श्री शान्तिजिन-स्तवन (च)

अद्भुत शांतिजी वारिये, प्रभु शांति तणां करतारोजी ।
अद्भुत महिमा प्रभु तणी, कांई अद्भुत फल दातारोजी ॥१॥
स्वार्थ सिद्ध थकी चव्या कांई हस्तिनापुर अवतारोजी ।
अश्वसेन अचला उर धरे प्रभु मंगल हर्ष अपारोजी ॥२॥

मृग लंछन कागी शोभना, कंचन वरण शरीरो जी।
समता रस के साहिबा, प्रभु गुणकर गहरे गंभीरो जी ॥३॥
चक्रवर्त्ती प्रभु पांचवां, कांई सोलहवां जिन देवोजी।
सुरनर इन्द्र खगपति, प्रभु सारे चरणांगी सेवा जी ॥४॥
चोसठ सहस्र अंतेवरी. प्रभु नवनिधि चवदा रतनोजी।
ए सहुं परिहरि संयम लियो, प्रभु कीना जीव जतनोजी ॥५॥
कर्म हणी केवल लई, प्रभु पाम्या पद निर्वाण जी।
शिवपुर जाई विराजया, कांई वरत्या जय जय कारोजी ॥६॥
शांति नामे चिंता टले, प्रभु शांति नामे ऋद्धि गाजो जी।
शांति नामे सुख अति घणो, प्रभु शांति नामे सीजे काजोजी ७
शांति नामे शिव पामिये, प्रभु शांति नामे सीजे कोड़ो जी।
शांति नामे साता होवे, शांति नमु कर जोड़ो जी ॥८॥
संवत सतरे से गुणसट्ठ, प्रभु भेह्या भल मण्डाणो जी।
गुण सागर प्रभु शांतिजी, मुज संघ करो कल्याणो जी ॥९॥

श्री शान्तिजिन-स्तवन (छ)

प्रात उठ श्री शांति जिणंद को,
स्मरण कीजो घड़ी घड़ी।
संकट कोट कटे भव संचित,
जो ध्यावे मन भाव धरी ॥ १ ॥
जनमत काल जगत दुःख टलियो,
गलियो रोग असाध्य मरी।

घट घट अन्तर आनन्द प्रगटियो,
हुलस्यो हिवड़ो हर्ष धरी ॥ २ ॥
आपद व्यन्तर विघन भय भांजे,
जैसे पेखत मृग हरी ।
एकण चित्तसु शुद्ध बुद्ध,
ध्याता प्रगटे परिचय परम सिरी ॥ ३ ॥
गये विरलाय भरम के बादल,
परमार्थ पद पवन करी,
अवर देव एरण्ड कुण गोपे,
जो निज मन्दिर केल फली ॥ ४ ॥
प्रभु तुम नाम जग्यो घट,
अन्तर तो शु करीयो कर्म अरि ।
रतनचन्द्र शीतलता व्यापी,
पापी लाय कषाय टली ॥ ५ ॥

श्री शान्तिजिन--स्तवन (ज)

तू धन तू धन तू धन तू धन शांति जिनेश्वर स्वामी ।
मृगी मार निवार कियो, प्रभु सर्व भणी सुख गामी ॥ १ ॥
अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी ।
शांति शांति जगत वरताई, सर्व कहे सिर नामी ॥ २ ॥
तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ़ हरामी ।
भोले कंचन डार कांच चित्त देवो, वाकि बुद्धि में स्वामी ३

अलख निरंजन मुनि मन, रंजन भय भंजन विश्रामी।
शिव दायक नायक गुण गायक, पावक है शिव गामी ॥४॥
रतनचन्द प्रभु कछुअ न मांगे सुण तु अन्तरयामी।
हम रहेवानी ठोड बताओ तो हूँ सहूं वर पामी ॥ ५ ॥

श्री शांतिजिन-स्तवन (भ)

नगर हस्तिनापुर अति रे भलो,
जिहां जन्म्या तीर्थंकर त्रिभुवन तिलो ॥
गाह परुप्यी जैन खरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ १ ॥
सर्वार्थसिद्ध थकीरे चवी,
नव देश नगरमां शांति हवी ॥
शातिजी नाम दियो सरवरो.
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ २ ॥
विश्वसेन पिता अचला रे माता,
जेणे चौद सुपन महोटां रे पाया ॥
जनम्या तीर्थंकर अमिय भरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ ३ ॥
छप्पन कुमारिका उल्लास घणो,
जेणे जनम महोच्छव कर्यो कुमर तणो ॥
चोसठ इंद्र आवी कळश भरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ ४ ॥

भणावी बहोतेर कला जेणे,
चोसठ सहस्र परणी महिला॥
छ खंड साध्या एणीय परो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो॥ ५॥
सहस्र पच्चोतेर वरस कह्या,
चक्रवर्तीपणे घर वास रह्या॥
पछे मिटाइ दियो सघळो झगडो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो॥ ६॥
एक सहस्र पुरुष साथे शिक्षा,
श्री जिनवरजीए लीधी दीक्षा॥
पीछे सुर नर आवी पाय पड़ो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो॥ ७॥
एक मास लगे छद्मस्थ रह्या,
शुदि पोष नोमे दिन केवळ लह्या॥
भरणी नक्षत्र प्रभात खरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो॥ ८॥
प्रभुए मोहजाल सवी कापी
चतुर्विध संघ तीरथ थापी॥
चोथो दुषम सुषम आरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो॥ ९॥
बासठ सहस्र मुनिराज थया,
वळी सहस्र नव्यासी हुइ आजियां॥

प्रभु तारो ने वली आप तरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१०॥

दोय लाख नेवु सहस्र श्रावक गुणी,
त्रण लाख त्याणी सहस्र श्राविका सुणी ॥
और चतुर्विध संघ खरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥११॥

चार हजार ओहिनाणि जति,
वली त्रणशे हुवा विपुलमति ॥
नेवु गणधरनो पाप हरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१२॥

चार हजार त्रणशे रे कह्या,
मुनि केवल लहीने मुक्ति गया ॥
छ हजार मुनि वैक्रिय—धरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१३॥

चोवीशे वादी भारी,
वली आठशे चौद पूरवधारी ।
आठ करमशुं जाई लडो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१४॥

नवपदवी मोटी रे कही,
जेणे एकज भवमां छए लही ।
ऐसे भरियो पुण्य घड़ो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१५॥

पा पा लाख कुमर साधपणे,
वलि अर्धलाख वरस रह्या राज्यपणे ।
एक लाख वरसनो सर्व धडो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१६॥

चालीस धनुष ऊंची रे देही,
वली हेमवरणी उपमारे कही ।
दीठे दील दरियाव ठरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१७।

जो नाम धरावो श्रावक यति,
तो अनाचार सेवो रे मति ।
परभव सेंती कांइ डरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१८॥

त्रिविधे त्रिविधे जीव मति रे हणो,
ए उपदेश छे जिनराज तणो ।
मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥१९॥

आ जीव राय ने रंक थयो,
वली नरक निगोदमां बहु रे रह्यो ।
रडवडियो जेम गेडि—दडो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२०॥

चार गतिनां रे दुःख कह्यां,
जीवे अनंति अनंति वार लह्यां।

पची रह्यो जेम तेल वडो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२१॥
श्रद्धा सहित तुमे तप तपो,
भव्य जीवो सो तुमे जाप जपो।
मार्ग मल्यो छे निपट खरो।
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२२॥
संथारो एक मास तणो,
सम्मेतशिखर सिद्ध ठाण भणो।
नवशे मुनिशुं मुगति वरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२३॥
मृग लंछन सेति ध्यान रह्या,
श्री शांति जिनेश्वर मुक्ति गया।
पछे मेट दियो सब जन्म मरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२४॥
तुज नाम लिया सभी काज सरे,
तुम नाम मुक्ति महल मिले।
तुम नामे शुभ भण्डार भरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२५॥
ऋषि जैमल एह विनती कही,
प्रभु तोरा गुणनो पार नहीं।
मुझ भव भवना दुःख दूर हरो,
श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥२६॥

———

श्री शांतिजिन--स्तवन (ज)

शारद माय नमुं शिरनामी, हूं गुण गाउं त्रिभुवन के स्वामी ।
शांतिनाथ जपे सब कोई, ते घर शांते सदा सुख होई ॥१॥
शांति जपीजे कीजे काम, सोही काम होवे अभिराम ।
शांति जपी परदेश सीधावे, ते कुशले कमला लेइ आवे ॥२॥
गर्भ थकी प्रभु मारी निवारी, शांति नाम दियो हितकारी ।
जो नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥३॥
जे नरकुं प्रभु शांति सहाई, ते नरकुं कया आरती भाई ।
जो कुछ वंछे सोही पूरे, दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥४॥
अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी, घटघट के प्रभु अंतर वासी ।
स्वामी स्वरूप कह्या नवि जाय, कहेतां मुज मन अचरज थाय ५
डार दीये सबही हथियारा, जित्या मोह तणा दल सारा ।
नारी तजी शिवशुं रंग राचो, राज तज्यो पण साहिब साचो ६
महा बलवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ।
ऋद्धि सबल प्रभु दान लहीजे, भिक्षा आहारी नाम कहीजे ॥७॥
निंदक पूजककुं सम भायक, पण सेवककुं है सुखदायक ।
तजी परिग्रह हुवा जगनायक, नाम अतिथि सर्व सिद्धि लायक ८
शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे, नाम देव अरिहंत भणीजे ।
सकल जीव हितवंत कहीजे, सेवक जाणी महापद दीजे ॥९॥
सायर जैसा होत गंभीरा, दूषण एक न मांहे शरीरा ।
मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी १०

लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे।
रीस विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥११॥
मान विना जग आण मनाइ, माया विना शिव शुं लय लाइ।
लोभ विना गुण राशि ग्रहीजे, भिक्षु भावे त्रिगडो सेविजे ॥१२॥
निर्ग्रन्थपणे शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे।
अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चाले अरिदारण १३
श्री जिनराज दयाल भणिजे, कर्म सर्वे को मूल खणीजे।
चउविह संघह तिरथ थापे, लच्छी घणी देखे नवि आपे ॥१४॥
विनयन्वत भगवंत कहावे, नांहि कीसीकुं शीश नमावे।
अकंचनको विरुद धरावे, पण सोवन पद पंकज ठावे ॥१५॥
राग नहि पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे।
तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे १६
तेरो महिमा अद्भुत कहिए, तेरा गुणको पार न लहीए।
तुं प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मन मोहन सेवक तेरा ॥१७॥
तुं रे त्रिलोक तणो प्रतिपाल, हुं रे अनाथ ने तु रे दयाल।
तुं शरणागत राखन धीरा, तुं प्रभु तारक छे वड़वीरा ॥१८॥
तुं समो ही वडभागज पायो, तो मेरो काज चडयो सवायो।
करजोडी प्रभु वीनवुं तमशुं, करो कृपा जिनवरजी अमशुं ॥१९॥
जनम मरणना भय निवारो, भव-सागरथी पार उतारो।
श्री हस्थीणापुर मण्डल सोहे, त्यां श्री शांति सदा मन मोहे २०
पद्म सागर गुरुराय पसाया, श्री 'गुण सागर' कहे मन भाया।
जे नर नारी एक चित्त गावे, ते मनवांछित निश्चे पावे ॥२१॥

इय नित्थ रक्खणरया अन्नवि सुरासुरीय ।
चउहा विंवतर जोइणि पमुहा कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥
एवं सुदिट्ठि सुरगण सहिउ संघस्स संति जिणचंदो ।
मज्झवि करेऊं रक्खं मुणि सुन्दरसूरि थुअ महिमा ॥१२॥
इह संतिनाह सम्मदिट्ठि रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ स लहइ सुह संपयं परमं ॥ १३ ॥
तव गच्छ गयण दिणयर जुगवर सिरि सोमसुंदर गुरूणं।
सुपसाय लद्ध गणहर विज्जा सिद्धि भणइ सीसो ॥१४॥

१७—श्री कुन्थुनाथजिन—स्तवन

कुंथु जिनराज तू ऐसो, नहीं कोइ देव तो जैसो ।
त्रिलोकीनाथ तू कहिये, हमारी बांह दृढ गहिये ॥ १ ॥

भवोदधि डूवतो तारो, कृपानिधि आसरो थारो ।
भरोसा आपका भारी, विचारो विरुद उपकारी ॥ २ ॥

उमाहो मिलन को तोसे, न राखो आंतरो मोसे ।
जैसी सिद्ध अवस्था तेरी, तसी चैतन्यता मेरी ॥ ३ ॥

करम-भ्रम जाल को दपट्यो, विषय सुख ममत में लपट्यो ।
भ्रम्यो हुं चहूं गति माहीं, उदयकर्म भ्रम की छांही ॥ ४ ॥

उदय को जोर हैं जौलों, न छूटे विषय सुख तौलों ।
कृपा गुरुदेव की पाई, निजातम भावना भाई ॥ ५ ॥

अजब अनुभूति उर जागी, सुरत निज रूप में लागी ।
तुम्हीं हम एकता जाणू, द्वैत भ्रम-कल्पना मानूं ॥ ६ ॥

"श्रीदेवी" 'सूर' नृप नन्दा, अहो सर्वज्ञ सुख कंदा ।
"विनयचंद" लीन तुम गुन में, न व्यापे अविद्या मन में ॥७॥
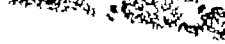
तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो, त्रिभुवन प्रिय कारी।
अद्भुत चरित तुम्हारो प्रभुजी, वेद धरयो नारी ॥२॥
परणन काज जान सज आए, भूपति छः भारी।
मिथिला पुर घेरी चौतरफा, सेना विस्तारी ॥३॥
राजा कुम्भ प्रकाशी तुमपे, बीती विधि सारी।
छहुं नृप जान सजी तो परणन, आया अहंकारी ॥४॥
श्रीमुख धीरज दीधी पिताने, राखो हुशियारी।
पुतली एक रची निज आकृति, थें थो ढकवारी ॥५॥
भोजन सरस भरी सा पुतली, श्री जिन सिणगारी।
भूपति छः बुलवाया मंदिर, बिच बहु दिन टारी ॥६॥
पुतली देख छहुँ नृप मोह्या, अवसर विचारी।
ढंक उघार दियो पुतली को, भवक्यो अन्न भारी ॥७॥
दुसह दुर्गन्ध सही ना जावे, उठया नृपहारी।
तब उपदेश दियो श्रीमुख से, मोह दशा टारी ॥८॥
महा असार उदारिक देही, पुतली इव प्यारी।
संग किया भटके भव-दुःख में, नारी नरक बारी ॥९॥
भूपति छः प्रतिबोध मुनि हो, सिद्धगति संभारी।
विनयचन्द चाहत भव-भव में, भक्ति प्रभू थारी ॥१०॥

२०—श्री मुनिसुव्रतजिन—स्तवन

(चेतरे चेतरे मानवी-यह देशी)

श्री मुनिसुव्रत साहिबा, दीनदयाल देवाँ तणा देव के।
तारण तरण प्रभु मो भणी, उज्ज्वल चित्त सुमरुं नितमेवके ॥१॥

हूं अपराधी अनादि को, जनम-जनम गुना किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छः कायना, सेविया पाप अठार करूरके ॥ २ ॥
पूर्व अशुभ कर्त्तव्यता, तेहने प्रभू तुम न विचारके।
अधम उधारण विरुद है, सरण आयो अब कीजिये सारके ॥३॥
किंचित् पुन्य प्रभावथी, इण भव ओलख्यो श्रीजिन धर्मके।
निवर्तूं नरक निगोदथी, एहवो अनुग्रह करो परिब्रह्म के ॥ ४ ॥
साधुपणो नहिं संग्रह्यो, श्रावक व्रत न किया अंगीकारके।
आदरया तो न आराधिया, तेहथी रुलियो हूँ अनंत संसारके ५.
अब समकित व्रत आदरयो, तेने आराधी उतरूँ भवपारके।
जनम जीव नो सफलो हुवो, इण पर विनवूँ वार हजारके ॥६॥
सुपति नराधिप तुम पिता, धन धन श्री पद्मावती मायके।
तस सुत त्रिभुवन तिलक तूं, वंदत विनयचंद सीष नवाय के ७

२१-श्री नमिजिन-स्तवन

(सुणियोरे ढाला कुटिल मंझारी तोता ले गया-यह देशी)
सुज्ञानी जीवा भजलो जिन इक्कीसवाँ।
विजयसेन नृप विप्रा राणी, नमिनाथ जिन जायो।
चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव, सुर नर आनंद पायोरे ॥१॥
भजन किया भव-भवना दुष्कृत, दुःख दुर्भाग्य मिट जावे।
काम, क्रोध, मद मत्सर तृष्णा, दुर्मति निकट न आवेरे ॥२॥
जीवादिक नव तत्त्व हिये धर, हेय ज्ञेय समझीजे।
तीजी उपादेय ओलखीने, समकित निरमल कीजेरे ॥ ३ ॥

जीवा अजीव बंध, ये तीनों, ज्ञेय जथारथ जानो ।
पुन्य पाप आस्रव परहरिये, हेय पदारथ मानो रे ॥ ४ ॥
संवर मोक्ष निर्जरा निज गुण, उपादेय आदरिये ।
कारण कारज जाण भलि विध, भिनभिन निर्णय करियेरे ॥ ५ ॥
कारण ज्ञान स्वरूप जीवकी, कारज क्रिया पसारो ।
दोनुंको साखी शुद्ध अनुभव, आपो खोज निहारो रे ॥ ६ ॥
तू सो प्रभू सो तू है, द्वैत कल्पना मेटो ।
सत् चित् आनन्द 'विनयचन्द' परमातम पद भेटोरे ॥ ७ ॥

२२–श्री नेमिजिन–स्तवन

(नगरी खुब वणी छे जी-यह देशी)

श्रीजिन मोहनगारो छे, जीवन प्राण हमारो छे ।
समुद्रविजय सुत श्री नेमीश्वर, जादव कुल को टीको ।
रत्न कुक्ष धारिणी शिवादे, तेहनो नंदन नीको ॥ १ ॥
सुनि पुकार पशु की करुणा कर, जानी जगत् सुख फीको ।
नव भव नेह तज्यो जोवन में, उग्रसेन नृप धी को ॥ २ ॥
सहस्र पुरुष संग संजम लीधो, प्रभुजी पर उपकारी ।
धन-धन नेम राजुलकी जोड़ी, महा बालब्रह्मचारी ॥ ३ ॥
बोधानंद सरूपानंद में, चित एकाग्र लगायो ।
आतम-अनुभव दशा अभ्यासी, शुक्लध्यान जिनध्यायो ॥ ४ ॥
पूर्णानंद केवली प्रगटे, परमानंद पद पायो ।
अष्टकर्म छेदी अलवेसर, सहजानंद समायो ॥ ५ ॥

नित्यानंद निराशय निश्चल, निर्विकार निर्वाणी ।
निरांतक निर्लेप निराश्रय, निराकार वरनाणी ॥ ६ ॥
एवो ज्ञान समाधि संयुत, श्री नेमीश्वर स्वामी ।
पूरण कृपा विनयचंद प्रभु की, अब तो ओलख पामी ॥ ७ ॥

२३–श्री पार्श्वजिन–स्तवन (क)

(जीवरे तू शीयल तणो कर संग–यह देशी)
अश्वसेन नृप कुल–तिलोरे, वामा देवी नो नन्द ।
चिंतामणि चित्त में वसे तो, दूर टले दुःख द्वंद ॥
जीवरे, तू पार्श्व जिनेश्वर वन्द ॥ १ ॥
जड़ चेतन निश्चित पणेरे, करम शुभाशुभ थाय ।
ते विभ्रम जग कल्पनारे, आतम अनुभव न्याय ॥ २ ॥
वेहमी भय माने जथारे, सूने घर वैताल ।
त्यूँ मूरख आतम विषेरे, मान्यो जग भ्रम जाल ॥ ३ ॥
सर्प अंधारे रासड़ीरे, रूपो छीप मंझार ।
मृगतृष्णा अंबु मृषारे, त्यूँ आतम में संसार ॥ ४ ॥
अग्नि विषे ज्यूँ मणि नहीं रे, मणि में अग्नि न होय ।
सुपने की संपत्ति नहीं ज्यूँ, आतम में जग जोय ॥ ५ ॥
वांझ पुत्र जनमे नहीं रे, सींग ससे शिर नाय ।
कुसुम न लागे व्योम में रे, ज्यूँ जग आतम मांय ॥ ६ ॥
अमर अजोनि आत्मारे, है निश्चे तिहुं काल ।
विनयचंद अनुभव थकीरे, तू निज रूप सम्हाल ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वजिन-स्तवन (ख)

[तोटक वृत्तनी देशीमां]

जय जय जगनायक पार्श्वजिनं,
प्रणताखिल मानव देवगणं ।
जिन शासन मंडन स्वामी जयो,
तुम दर्शन देखी आनंद भयो ॥ १ ॥
अश्वसेन कुलांबर भानुनिभं,
नव हस्त शरीर हरित प्रतिभं ।
धरणेंद्र सुसेवित पाद-युगं,
भरभासुर कांति सदा सुभगं ॥ २ ॥
निज रूप विनिर्जित रंभ-पति,
वदनो द्युति शारद सोमतति ।
नयनांबुज दीप्त विशाल तरा,
तिलकुसुम सन्निभ नासा-प्रवरा ॥ ३ ॥
रसनामृत कन्द समान सदा,
दशनावलि अनारकलि सुखदा ।
अधरारुण विद्रुम रंग घनं,
जय पुरुषादाणी पार्श्वजिनं ॥ ४ ॥
अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे,
काने कुंडल रवि शशि दीपे ।
तुज महिमा महिमण्डल गाजे,
नित पंच शब्द वाजा वाजे ॥ ५ ॥

सुरकिन्नर विद्याधर आवे,
नर नारी तोरा गुण गावे ।
तुज सेवे चोसठ इन्द्र सदा,
तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥
जे सेवे तुजने भाव घणे,
नव निधि थाय घर तेह तणे ।
अडवडिआ तुं आधार कह्यो,
समरथ साहिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥
दुखियाने सुखदायक तुं दाखे,
अशरण ने शरणे तुं राखे ।
तुज नामे संकट विकट टले,
विछडीयां व्हालां आवी मले ॥ ८ ॥
नटविट लंपट दूरे नासे,
तुम नामे चोर चरड त्रासे ।
रण राउल जय तुम नाम थकी,
सघले आगल तुज सेव थकी ॥ ६ ॥
यक्ष राक्षस किन्नर सभी उरगा,
करी केसरि दावानल विहगा ।
वध बंधन भय सवला जावे,
जे एक मने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥
भूत प्रेत पिशाच छली न शके,
जगदीश तवाभिध जाप थके ।

महोटा जोटींग रहे दूरे,
देत्यादिकना तुं मद चूरे ॥ ११ ॥
डायणि सायणि जाय हटकी,
भगवन्त थाय तुज भजन थप्पे ।
कपटी तुज नाम लिया कम्पे,
दुरजन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥
मानी मच्छराला मुह मोडे,
ते पण आगलथी कर जोड़े ।
दुर मुख दुष्टादिक तुंहि दमे,
तुज नामे म्होटा म्लेच्छ नमे ॥ १३ ॥
तुज नामे माने नृप सबला,
तुज जश उज्ज्वल जेम चन्द्रकला ।
तुज नामे पामे रुद्धि घणी,
जय जय जगदीश्वर त्रिजगधणी ॥१४॥
चिंतामणी काम सवी पामे,
हयगय रथ पायक तुम नामे ।
जनपद ठकुराइ तु आपे,
दुर्जन जननां दारिद्र कापे ॥ १५ ॥
निर्धनने तुं धनवन्त करे,
तुठयो कोठार भण्डार भरे ।
घर पुत्र कलत्र परिवार घणो,
ते सहु महिमा तुज नाम तणो ॥ १६ ॥

मणि माणेक मोती रत्न जड्यां,
सोवन भूषण बहु सुघड घडयां।
वली पहेरण नवरंग वेष घणां,
तुम नामे नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥
वैरी विरुआ नवि ताकि शके,
वली चोर चुगल मनथी चमके।
छल छिद्र कदा केहनो न लगे,
जिनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥१८॥
ठग ठाकुर सवि थरहर कंपे,
पाखंडी पण को नवि फरके।
लुंटारादिक सहु नासी जाये,
मारग तुज जपतां जय थाये ॥ १९ ॥
जड मूरख जे मति हीन वली,
अज्ञान तिमिर तस जाय टली।
तुज समरणथी डाह्या थाय,
पंडित पद पामी पूजाय ॥२०॥
खस खांसी खयन पीडा नासे,
दुरबल मुख दीनपणुं त्रासे।
गड गुंबड कुष्ट जिके सबला,
तुज जापे रोग समे सघला ॥ २१ ॥
गहिला गुंगा बहिराय जिके,
तुज ध्याने गत दुःख थाय तिके।

तनु कांति कला सुविशेष वधे,
तुज समरण से नवनिधि सधे ॥ २२ ॥
करि केसरी अहिरण बंध सया,
जल जलण जलोदर अष्ट भया ।
रोगण पमुहा सवी जाय टली,
तुज नामे पामे रंगरली ॥ २३ ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्व नमो,
नमिउण जपंता दुष्ट दमो ।
चिंतामणी मन्त्र जो ध्यावे,
उस पर दिनदिन दोलत थाये ॥ २४ ॥
त्रिकरण शुद्ध जे आराधे,
तस जस कीर्ति जगमां वांधे ।
वली कामित काम सभी साधे,
समीहित चिंतामणी तुज लाधे ॥२५॥
मद मच्छर मनथी दूर तजे,
भगवन्त भली परे जेह भजे ।
तस घर कमला किल्लोल करे,
वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥२६॥
भय वारक तारक तूं त्राता,
सज्जन मन गति मतिनो दाता ।
मात तात सहोदर तूं स्वामी,
शिव दायक नायक हित कामी ॥ २७ ॥

करुणाकर ठाकुर तूं म्हारो,
निशि वासर नाम जपूं तुमारो।
सेवक पर परम कृपा करज्यो,
वालेशर वंछित फल देज्यो ॥ २८ ॥
जिनराज सदा तूं जयकारी,
तुज मूर्ति अति मोहनगारी।
मुक्ति महेल मांहि तुंही बीराजे,
त्रिभुवन ठकुराइ तुज छाजे ॥ २६ ॥
इम भाव भले जिनवर गायो,
वामासुत देख बहु सुख पायो।
रवि शशि भुवि संवच्छर रंगे,
जयदेव सूरमा सुख संगे ॥ ३० ॥
जय पुरुसादाणी पार्श्व प्रभो,
सकलार्थ समीहित देहि विभो।
बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा,
तव लब्धि रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥

कलश (वसंततिलका वृत्तम्.)

इत्थं स्तुतः सकल कामित सिद्धिदाता,
यक्षाधिराज नत पार्श्वप्रभोऽधिराज।
स्वस्ति श्री हर्षरुचि पंकज-सुप्रसादात्,
शिष्येण लब्धिरुचिनेऽतिमुदा प्रसन्नः ॥१॥

श्री पार्श्वजिन–स्तवन (ग)

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्र अधीश,
सतेन्द्र सपूज्यं भज नाथ शीशं ।
मुनीन्द्रं गणीन्द्रं नमो जोरहाथं,
नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं ग्रहयो तू छुड़ावे,
महा आगते नागते तू बचावे ।
महा रोग ते बंध ते तूं खुलावे,
महारण ते युद्ध ते तू जितावे ॥ २ ॥
दुखी दुःख हरता सुखी सुख करता,
सभी सेवकों में सदानंद भरता।
हरे यक्ष राक्षस भूतपिशाच,
विघ्न डाकनी के भय अवाचं ॥ ३ ॥
दरिद्री को द्रव्यके दान दीने,
अपुत्रिन को तू भले पुत्र कीने ।
ग्रह सर्व सेती निकाले विधाना,
सर्व संपदा सर्व को देह दाना ॥ ४ ॥
महाचोर को वज्र को भय निवारे,
महा पवन के पुंज से तू उभारे ।
महा क्रोध की आन को मेघधारा,
महालोभ शैलं तू ही वज्र भारा ॥ ५ ॥

महा मोहान्धकार को ज्ञानभानु,
    महा कर्म कांतार की देह प्रदाहं।
किये नाग नागिनी अधो लोक स्वामी,
    हरो मान ते दैत्य का भव गामी ॥६॥
तूं ही कल्पवृक्षं तुम्ही कामधेनु,
    तूं ही देव चिंतामणि नाथ एनं।
पशु नर्क के दुःख से तूं छुड़ावे,
    महा स्वर्ग में मोक्ष में तूं वसावे ॥ ७ ॥
करे लोह से हेम पाषाण नामी,
    रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करें सेव तांकी करे देव सेवा,
    सुने वैन सो ही लहे ज्ञान मेवा ॥ ८ ॥
जपे जाप तांको कहां पाप लागे,
    धरें ध्यान तांका सभी दुख भागे।
विना तोहि जाने धरे भव घनेरे,
    तुम्हारी कृपा से सरे काज मेरे ॥ ९ ॥

श्री पार्श्वजिन-स्तवन (घ)

आपण घर बैठा लील करो,
    निज पुत्र कलत्र शुं प्रेम धरो।
तुम देश देशान्तर कांइ दोड़ो,
    नित्य पाल जपो श्री जिन मड़ो ॥ १ ॥

मन वंछित सघलां काज सरे,
शीर उपर छत्र चम्मर धरे।
फलमल आगल चाले घोडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ २ ॥

भूत प्रेत पिशाच वली,
सायणि ने डायणी जाय टली।
छल छिद्र न कोइ लागे जुडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ३ ॥

एकांतर ताव रियो दाह,
औषध विण जाय क्षण मांह।
नहीं दुःखे माथुं पग गुडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ४ ॥

कंठमाल गड गुंवड सघला,
तम उदर रोग टले सघला।
पीडा न करे फुन गल फोडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ५ ॥

जागतो तीर्थंकर पास वहु,
एम जाणे सघलो जगत सहु।
तत्क्षण अशुभ कर्म तोडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ६ ॥

पाल वाणारसीपुरी नगरी,
तिहां उदयो जिनवर उदय करी।
'समयसुन्दर' कहे कर जोडो,
नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वजिन--स्तवन (ङ)

अचिंत चितामणी श्री पार्श्वनाथ जग मांहे भणिये ।
जग रक्षक जग सारथवाह जग बंधव थुणिये ॥१॥
जिनवर जग गुरु जगन्नाथ जिन त्रिभुवन स्वामी ।
काम कुंभ कलि-काल हुवा प्रणमूं शिरनामी ॥२॥
त्रिभुवन तारण दिनबंधु ए श्री परमेश्वर पास ।
चरण कमल प्रभु भेटतां प्रभु मुज पुरोजी आश ॥३॥
अनन्त ज्ञान अनन्त गुण जिनेश्वर भणिये,
लक्ष जिभ्या पर पावे नहीं पकरण किम थुणिये ॥४॥
सब वालुकण मेघ छाते अलप अपारा ।
तिण थी अधिका अनन्त गुण किम पऊं पारा ॥५॥
तारा गणता सुगम अछे सब सायांर नो नीर ।
श्रीमुख सरस्वती वर्णवे तो हीन पावे जी तीर ॥६॥
ज्ञान रहित हूं मानवी तुम गुण किम जाणूं ।
मति पाके वर्णन संक्षिप्त वखाणूं ॥ ७ ॥
कोयल सुरतरु अम्बडाल अम्बा बहु संगते ।
तिण हर्षाने तुम प्रसाद गुण बोल सुभगते ॥८॥
रोम रायतन हुलसियो ए हृदय हर्ष न माय ।
अति आनन्दे ऊचरूं तिरू जिम तुज सुपसाय ॥९॥
चम्मर सिंहासन छत्र तीन शिर ऊपर सोहे ।
वाणी दुंदुभी तणो नाद सुणी नर मन मोहे ॥१०॥

पूठे भामण्डल भलो जग कीरति कारण ।
फल्यो फूल्यो अशोक वृक्ष सहु दुःख निवारण ॥११॥
वाणी पैंतीस अरू एक वली अतिशय चौंतीस ।
समोसरण करी शोभता ते प्रणमूं जगदीश ॥१२॥
रूपे जीत्यो मदन राय तेजे आदित्यो ।
लक्ष्मी जीति ऋद्धि वृद्धि जग मांहे वन्दितो ॥१३॥
सोमपणा में चन्द्रमा श्री प्रभु अधिक अपार ।
तिण थी अधिका अनन्त गुण किम पाऊँ पार ॥१४॥
सागर जिम गंभीर वरुण श्री जोगीश्वर नाथ ।
कृपा करो स्वामी मुझ मणी तारे त्रिभुवन नाथ ॥१५॥
हस्ती सिमरे कुंजवन कोयल सहकार ।
चकवी समरे दिवसनाथ सतियां भरतार ॥१६॥
सायर समरे चन्द्रमा पपीहा मेहा ।
हंस सरोवर गऊ वच्छ जिम अधिक स्नेहा ॥१७॥
मधुकर समरे मालती एक बालक समरे मांय ।
तिम हूं समरूँ दीनानाथने दर्शन दो जिनराज ॥१८॥
आभाने कागज करे मेरू जिम लेखन ।
क्षीर समुद्र स्याही करे लिखे इन्द्र विचक्षण ॥१९॥
लिखतां पार पावे नहीं मैं गुण किम जाणूं ।
मति पाखयां कर वर्णन उणमान वखाणूं ॥२०॥
संक्षेपे गुण मैं थुणिया एक श्री अरिहंत भगवंत देव ।
कर जोड़ी कजी भणे प्रभु मुज आपोजी सेव ॥२१॥

श्री पार्श्व जिन-स्तवन (च)

(त्रोटक वृत्तम्)

प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्व जिन, जिननायक दायक सुखधनं।
घनसार मनोहर देहधरं, धरणीपति नित्य सुसेवकरं ॥ १ ॥
करुणारस रंजित भव्यफणी, फणी सप्त सुशोभित मौलमणि।
मणिकंचन रूप त्रिकोट घटं, घटिता सुर किन्नर पार्श्वतटं ॥ २ ॥
तटनीपति घोष गभीर स्वरं, शरणागत विश्व अशेषनरं।
नरनारी नमस्कृत नित्य मुदा, पद्मावती गावती गीत सदा ॥३॥
सततेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारण मुक्तहठं।
हठ हेलित कर्म कृतांत बलं, बलधाम दरंदल पंकजलं ॥ ४ ॥
जलजद्वय पत्र प्रभानयनं, नयनं दिन भव्यतरी शमनं।
मन्मथ महीरुह वन्हिसमं, शमना गुण रत्नमयं परमं ॥ ५ ॥
परमार्थ विचार सदा कुशलं, कुशलं कुरु मे जिननाथ अलं।
अलिनी नलिनी नल नीलतनं, तनुता प्रभु पार्श्व जिनं सुघनं ॥६॥
सुधन धन्य करं करुणापरं, परमसिद्धिकरं ददद्य धरं।
वरतरं अश्वसेनं कुलोद्भवं, भवभृता पार्श्वजिनं शिवं ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वजिन-स्तवन (छ)

चिति मंगलमुकुट धर्मक निकट विश्व प्रकटं चारु भटं।
नव रेणु समीरं नील शरीरं सुर गुरु धीरं गभीरं ॥
जगति जगशरणं दुर्मति हरणं दुद्धर चरणं सुखकरणं।
श्री पार्श्व जिनेन्द्रं नित नागेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रं ॥१॥

देह द्युति सारं सुभगाकारं विश्वाधारं गुणधारं ।
शिवरमणी रक्तं रागविरक्तं संकट मुक्तं गुणयुक्तं ॥
कमठे सम दलनं गजगति चलनं केवल कमलं श्रीविमलं ।
श्री पार्श्व जिनेन्द्रं नित नागेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रं ॥२॥
महिमा दिनकारं भव निस्तारं निर्जित सारं दातारं ।
प्रतिभवनेतारं गतदैभारं जैनेतारं त्रातारं ॥
कुसुमे जलरदनं दुर्मति दलनं संप्रतिमदनं गुणसदनं ।
श्री पार्श्व जिनेन्द्रं नित नागेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रं ॥३॥
पासश्री यक्षं निर्मल पक्षं कृति जिन रक्ष जिन मोक्षं ।
शिव ललना हारं रूफलविहारं मुकुटविहारं सुखकारं ॥
धरणीधर रम्यं जगत्यगम्यं रम्यारम्यं शब्दरम्यं ।
श्री पार्श्व जिनेन्द्रं नित नागेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रं ॥४॥

श्री पार्श्वजिन-स्तवन (ज)

सुगुरू चिंतामणि देव सदा,
मुझ मकल मनोरथ पूर मुदा ।
कमलाकर दूर न होय कदा,
जपता प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥ १ ॥
जल अनल मतंगज भय जावे,
अरि चोर निकट पण नहीं आवे ।
सिंह सर्प रोग न सतावे,
धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जिन ध्यावे ॥२॥

मच्छ कच्छ मगर जल मांही भमे,
वड़वानल नीर अथाह गमे ।
प्रवहण बेठा नर पार पमे,
नित्य प्रभु पार्श्व जिनन्द नमे ॥ ३ ॥
विकराल दावानल विश्व दहे ।
अह वस्ती धन्य आस आकाश अहे,
तुम नाम लिया उपशान्ति लहै,
वन नीर सरोवर जेम वहे ॥ ४ ॥
झरतो मदलील कलोल करे,
भ्रमरा गुंजावर भररोस भरें ।
करी दुष्ट भयंकर दूरि करे,
श्री पार्श्वनाथ जी के समरै ॥ ५ ॥
छाना छल छिद्र विनाय छलै,
यशवास खुणी मन मांही जलै ।
ते पिशून पड़े नित्य पाय तले,
जपता प्रभु वैरी जाय टलै ॥ ६ ॥
धन देखी निशाचर करोड़ धसै,
मुझ मंदिर पैशक देन सुखे ।
अति उच्छव तास आवास अखे,
परमेश्वर पार्श्व जास पखे ॥ ७ ॥
अमराल विदारण हाथ हटे,
गल लोल जिहां गज कुंभ घटे ।

मृगराज महाभय भ्रांति मिटै,
रसना जिन नायक जेह रटे ॥ ८ ॥
फरतो चिहुँ फेर फूंकार फणी,
धरणेन्द्र धसैं धरी रीस घणी।
भय त्रास न व्यापे तेह तणी.
धरतां चित्त पार्श्वनाथ धणी ॥ ९ ॥

कफ कुष्ठ जलोदर रोग कसे,
गड़ गुंबड़ देह अनेक ग्रसे।
विन भेषज व्याधि सब विनसे,
वामासुत पार्श्व जे स्तवसे ॥१०।

धरणेन्द्र धराधिप सुर ध्यायो,
प्रभु पार्श्व पार्श्व कर पायो।
छवि रूप अनुपम जग छायो,
जननी धन्य वामासुत जायो ॥ ११ ॥

करतां जिन जाप संताप कटे,
दुःख दारिद्र दोहग शोक घटे।
हठ छोड़ो जिहां रिपु जोर हठें,
पद्मावती पार्श्व जिहां प्रगटे ॥ १२ ॥

(ॐ नमो पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय। विषहर कुल्यंग मंगलाय ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय मम मनोरथ पूरय स्वाहा)

मंत्राक्षर गाथा गूढ पढ्यो,
चिन्तामणि जाणे हाथ चढ्यो।
वली मान महातम तेज वढ्यो,
श्री पार्श्व जिन स्तवन जेह पढ्यो ॥१३॥
तीर्थपति पार्श्वनाथ तिलो भणांना,
जस वास निवास फलो।
मणि मंत्र सकोमल होय मिलो,
अमचि प्रभु पार्श्व आस फलो ॥ १४ ॥
लुंका गच्छ नायक लाभ लिये,
हित क्षेम करण गुरुनाम हिये।
दिन दिन गच्छ नायक सुख दिये,
कीर्ति प्रभु पार्श्व मुख किये ॥ १५ ॥

श्री पार्श्वजिन-स्तवन (भ)

सकल सार सुर तरू जग जाणां, जग जस वास जगत प्रमाणं।
सकल देव सिर मुकुट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥१॥
जय जिन पति मनरंगं, अकल अभंगं, तेज तुरंगं नीलंगं।
सुरंभा संगं, दग्ध अनगं, शशि भुजंगं चतुरंगं ॥ २ ॥
वहु पुण्य प्रसंगं, नित उछरंगं, नवनव रंगं सरदगं।
कीर्त्ति जलगंगं, देश दुरंगं, सुरनर संगं सारंगं ॥ ३ ॥
सारगां चक्रं परम पवित्रं, रुचिर चरित्रं जितीत्रं।
जग जीवन मंत्रं, पंकज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ ४ ॥

सावित्र चरणं, मुकुट भरणं, त्रिभुवने शरणं आचरणं।
सुर अर्चित चरणं, दारिद्र हरणं,शिव मुक्त करणं महाचरणं॥
जय जिनवर मंत्रं, नाशत शत्रं. मंत्री मन्त्रं ।
विश्व जयवन्तं, चामर छत्रं, शीश धरत्रं, पवित्रं ॥ ६ ॥
गोअमृत करणं, भव जल तरणं, जन मन मरणं, उद्धरणं।
सुख सम्पत्ति करणं, अघसचहरणं, वरणाचरणं आदरणं ७
आदरण पालं, झाक झमालं, निन भूपाल उजियालं ।
अष्टम शशिभालं, देव दयालं, चित्रय चालं, सुकुमालं ॥८॥
शृणगार रसालं, महिके भालं, रति सुविशालं, भूपालं ।
रिपु दुर्मद गालं, क्षमा कुदालं, मोह करालं भयटालं ॥९॥
त्रिभुवने रखवालं, काल दुकालं, महाविकरालं, दुरदालं ।
महागुणधारं, भविकाधारं, जगदाधारं निर्धारं ॥ १० ॥
तुम विरुद विचारी, अरज हमारी, वारी वारी अवधारी ।
तुम दर्शन पाऊं,अवर न चाऊं,इण भव परभव सुखकारी ११.
आनन्द रस पूरे, संकट चूरे, मंगलमालं सुविशालं ।
इस छन्द को गावे, आनंद पावे, संकट जावे, तत्कालं १२.

छप्पय

सकल स्वरूप उदार सार सम्पत्ति सुखदायक ।
रोग शोक संताप पाप सब दूर निवारक ॥
चहुं दिशि आप अखंड तपे जिन तेज दिनन्दो ।
नमें सम्यक्त्व कोड़ जस गावे सुर इन्द्रो ॥

तेविसमो जिनवर भलो। अधिक र मंगल निलो।
मुनि अेघराज इम विनवे प्रभु पार्श्वनाथ त्रिभुवन तिलो।

दोहा

कल्पवेल चिंतामणि, कामधेनु गुण खान।
अलख अगोचर अगम गति चिदानंद भगवान॥ १॥
परमज्योति परमात्मा निराकार करतार।
निर्भय रूप ज्योति स्वरूप पूरण ब्रह्म अपार॥ २॥
अविनाशी साहिब धणी चिंतामणि श्रीपास।
अरज करूं कर जोड़ कर पुरो वंछित आश॥ ३॥
मन चिंतित आशा फले सकल सिद्धवे काम,
चिन्तामणि को जाप, जाप चिंता हरे ए नाम॥ ४॥
तुम सम मेरो को नहीं चिंतामणि भगवान्।
चेतन की यह विनती दीजे अनुभवज्ञान॥ ५॥

(चौपाइ)

प्राणत देव लोक थी आये,
जन्म बनारसी नगरी पाये।
अश्वसेन कुल मंडन स्वामी,
त्रिहुजगके प्रभु अंतरयामी॥ ६॥
वामा देवी माता के जाये,
लंछन नाग फणि मणि पाये।

शुभ काया नव हाथ वखाणो,
नील वरण तन निर्मल जानो ॥ ७ ॥
मानव यक्ष सेवे प्रभु पाय,
पद्मावती देवी सुखदाय ।
इन्द्र चन्द्र पारस गुण गाये,
कल्पवृक्ष चिन्तामणि पाये ॥ ८ ॥
नित सिमरो चिन्तामणि स्वामी,
आशा पूरे अन्तरयामी ।
धन धन पार्श्व पुरिसादाणी-
तुम सम जगमें को नहीं नाणी ॥ ९ ॥
तुमरो नाम सदा सुखकारी,
सुख उपजे दुःख जाय विसारी ।
चेतन को नव तुमरे पास,
मन वंछित पुरो प्रभु आस ॥ १० ॥

(दोहा)

ॐ भगवंत चिंतामणि, पार्श्व प्रभु जिनराय ।
नमो नमो तुम नाम से रोग शोक मिट जाय ॥ ११ ॥
वात पित दूरे टले, कफ नहीं आवे पास ।
चिन्तामणि के नाम से मिटे श्वास और खास ॥ १२ ॥
प्रथम दूसरो तीसरो, ताव चौथियो जाय ।
शूल वहोतेर दूरे रहे, दादर खाज न रहाय ॥ १३ ॥

विस्फोटक गडगुंबड़ां, कोढ़ अढ़ारे दूर ।
नेत्र रोग सब परिहरे, कंठमाल चकचूर ॥ १४ ॥
चिन्तामणि के जाप से, रोग शोक मिट जाय ।
चेतन पार्श्वनाथ को. सिमरो मन चित्त लाय ॥ १५ ॥

(चौपाई)

मन शुद्ध सिमरो भगवान्, भय-भंजन चिंतामणि ध्यान ।
भूत प्रेत भय जावे दूर, जाप जपे सुख संपत्ति पूर ॥ १६ ॥
डाकण शाकण व्यन्तर देव, भय नहीं लागे पारस सेव ।
जलचर थलचर उरपर जीव, इनको भय नहीं सिमरो पीव १७
वाघ सिंह को भय नहीं होय, सर्प गोह नहीं आवे कोय ।
वाट घाट में रक्षा करे, चिंतामणि चिंता सब हरे ॥ १८ ॥
टोणां टामण जादू करे, तुमारे नाम लेता सब डरे ।
ठग फासीगर तस्कर होय, द्वेषी दुश्मन नावे कोय ॥ १६ ॥
भय सब भागे तुमारे नाम, मनवांछित पुरो सब काम ।
भय निवारण पुरे आश, चेतन जप चिंतामणि पास ॥ २० ॥

(दोहा)

चिंतामणि के नाम से सकल सिद्ध वे काम ।
र ज ऋद्धि रमणी भले सुख संपत्ति बहु दाम ॥२१॥
हय गय रथ पायक भले, लच्मी को नहीं पार ।
पुत्र कलत्र मंगल सदा, पावे शिव दरबार ॥ २२ ॥

चेतन चिंता-हरण को, जाप जपो तिन काल।
कर आंबिल पट मास को, उपजे मंगल माल ॥ २३॥
पारस नाम प्रभाव थी, वांधे वल वहु ज्ञान।
मनवांछित सुख उपजे, नित समरो भगवान् ॥ २४ ॥
संवत् अटारा उपरे, साटत्रिशको परिमाण ।
पोप शुक्ल दिन पंचमी, वार शनिश्चर जाण ॥ २५ ॥
भणे गुणे जो भावशुं, सुने सदा चित्त लाय।
चेतन सम्पत्ति वहु मिले, सिमरो मन वच काय ॥२६॥

(दोहा)

गणधर छन्द न कर सके, तुम विनती भगवान्।
ज्ञान प्रतीत निहालिये, कीजे आप समान ॥ १ ॥
सुख दीजिए दुःख मेटिये, यही तुम्हारी वान।
मुझ दास गरीव की, अरज सुनो भगवान् ॥ २ ॥

२४—श्री महावीर स्तोत्र (क)

श्री सिद्धारथ कुल श्रृंगार, त्रिशला देवी सुत जग आधार।
शोभे सुन्दर शोभवान्, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥
तुम नामे लहिये सम्पदा, तुम नामे मन वांछित मुदा।
तुम नामे लहिये सन्मान, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ॥२॥
दुर्जन दुष्ट वैरी विकराल, तुम नामे नाशे तत्काल।
तुम नामे दिन दिन कल्याण, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ३

तुम नामे नावे आपदा, भूत प्रेत व्यन्तर नहीं कदा।
रोग शोक चिन्ता नहीं जाए, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ४
ग्रहादिक पीड़ा नहीं करें, नाम तुम्हारो जो अनुसरे।
धर्मसिंह मुनिवर भाव प्रधान, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ५

श्री महावीर स्तोत्र (ख)

श्री सिद्धारथ कुल दीपक चन्द,
त्रिशलादेवी रानी नो नन्द।
कोमल कंचन वरण शरीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ १ ॥
कृपानाथ करी करुणा घणी,
मुझ सामुं जुओ शासन-धणी।
त्रिभुवन नाथ आयो अवतीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ २ ॥
अनन्त वलि तप दुक्कर किया,
सभी कर्मकुं दावानल दिया।
खम दम समधिमान ने धीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ३ ॥
चुमालिंग चेला किया,
एकज दिन में महाव्रत दिया।
गौतम सरीखा हुआ वजीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ४ ॥

समवसरणमां सुन्यो अधिकार,
अमृत वाणी रूप दीदार ।
दीठे हर्षे हैडुं हीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ५ ॥

एक पल धरे जो प्रभुजी का ध्यान,
पग पग प्रगटे पूज्य निधान ।
वचन मीठा ज्यों मिसरी खीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ६ ॥

चैन पामें चिंता चकचूर,
वैरी दुश्मन नाशे दूर ।
दिन दिन वधे संपत्ति शील,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ७ ॥

तुम नामे भवसागर तरे,
तुम नामे सभी कारज सरे ।
ऋद्धि सिद्धि पावे हीर चीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ८ ॥

चिंतामणि जिम जिनवर जाप,
क्रोड़ भव का काटे पाप ।
रोग शोक नासे पर पीड़,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ९ ॥

वैशाख सुदी दशम दिन जाण,
प्रभुजी पाया केवल ज्ञान ।

सागर जैसे होत गम्भीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ १० ॥
सम्वत् अठारह तेतीस मे [illegible]म,
मेड़त नगर किया गुणग्राम ।
पट कायाना प्रभुजी पीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ ११ ॥
प्रभु पावा पुरी मां मुक्ति गया,
ऋषि रामचन्द्र कहे करिजो मया ।
पहुँचाओ मुझे भव जल तीर,
मनवांछित पूर्ण महावीर ॥ १२ ॥

श्री महावीर स्तोत्र (ग)

चौविसमां महावीर शूरवीर महाधीर,
वाणी मीठी खांड खीर सिद्धारथ नंद है ॥
नागिनी सी नारी जाणी घटमां वैराग्य आणी,
योग लियो जग भाग, टाल्यो मोह फन्द है ॥ १ ॥
चौदह हजार संत, तार दियो भगवन्त,
कर्म को कियो अंत, पाम्यो सुख कन्द है ।
कहे कवि चन्द्र-भाण सुन हो विवेक वान,
महावीर किया ध्यान, उपजे आनन्द है ॥ २ ॥

श्री महावीर स्तोत्र (घ)

जिन शासन स्वामी, अन्तर्यामी शिव गति गामी सुखकारी।
जग में यशवंता श्री भगवंता सुगुण अनन्ता उपकारी ॥
सिद्धार्थ कुल आया, जगत सुहाया शुभफल जाया गुणधारी।
धन्य त्रिशला नंदन कुलध्वज स्यंदन जिन चरण की वलिहारी १.
आसन कंपाया सुरपति आया, शीश नमाया शुभ भावे।
वैक्रिय की पासे मेली हुलासे ले जिन तासें गिरि आवे ॥
तिहां प्रभु जीनो महोच्छव कीनो फिर मूक दीनो ज्यां महतारी।
धन्य त्रिशला-नंदन कुलध्वज स्यंदन जिनचरण की वलिहारी २.
युग-वन्दना करके निद्र हरके स्तवन उचरके घर जावे।
भई रवि उगाइ भूध्रुव ताई दासी वधाई दरसावे ॥
नृप महोच्छव कीनो दान जो दीनो हर्षित हियो निहारी ॥
धन्य त्रिशला नंदन कुलध्वज स्यंदन जिनचरण की वलिहारी ३.
यौवन वय मांही नारी व्याही अवसर पाही जोग ग्रहे।
तपस्या तन तावे समदमभावे ध्यान सुध्यावे कष्ट सहे ॥
प्रभु क्षमा सागर ज्ञान उजागर गुणरत्नाकर अघवारी।
धन्य त्रिशला नंदन कुलध्वज स्यंदन जिनचरण की वलिहारी ४
शुद्ध संयम पाले दूषण टाले शिव मग चाले जग त्राता।
क्रोध मान ने माया लोभ हटाया मोह भगाया अरिघाता ॥
शुक्लमन ध्याया कर्म खपाया केवल पाया जिनवारी।
धन्य त्रिशला नंदन कुलध्वज स्यंदन जिनचरण की वलिहारी ५

सुनी नाथ बड़ाई मन अकड़ाई आया चलाई प्रभु पासे।
विस्मय अति पाया चित्त लजाया गर्व गंवाया वानी से॥
प्रभु भ्रम मिटाया जिन मग आया संयम ठाया तीन सारी।
धन्य त्रिशलानन्दन कुल ध्वज स्यंदन जिन चरण की वलिहारी६

प्रथम इन्द्रभूति पूर्वधर श्रुति त्रिपदी संयुति फर्माया।
गणधर पद लीना परम प्रवीना समदम भीना तन ताया॥
चवाली से लारां गणधर प्यारां भये अणगारा व्रतधारी।
धन्य त्रिशलानंदन कुल ध्वज स्यंदन जिन चरण की वलिहारी ७

चार तीर्थ थाप्यां, पाप उथाप्यां सुव्रत आप्या नरनारी।
कई स्वर्ग सिधाया, कई शिव पाया श्री जिनराया हितकारी॥
शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे जग में नावे अविकारी।
धन्य त्रिशलानंदन कुल ध्वज स्यंदन जिन चरण की वलिहारी ८.

प्रभु अलख निरंजन भव-दुःख भंजन भविजन रंजन कृपाला।
जो शुद्ध मन ध्यावे दुःख भुलावे सुख उपावे प्रति पाला॥
कहे 'ऋषि तिलोका' निरंतर धोका देजो शिव थोका भवमारी।
धन त्रिशलानंदन कुल ध्वज स्यंदन जिन चरण की वलिहारी ९.

महावीर स्तोत्र (ङ)

श्री महावीर शासन धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी।
चरण कमल नित चित्त धरूँ प्रणमूं शिरनामी॥

सुरस्थिति नगरी पिता मात लक्षण अवगाहन ।
वरण आऊखो कुंवर पदे तपस्या परिमाण ।।
चारित्र तप प्रभु गुण भणूं ए छद्मस्थ केवल नाण ।
तीर्थ गणधर केवली जिन शासन परिमाण ।। १ ।।
देव लोक दशमें बीस सागर पूर्ण स्थिति पाया ।
कुंडन पुरी नगरी चौवीसवां श्री जिनवर आया ।।
पिता सिद्धार्थ—नृप मात त्रिशलादेवी नन्दा ।
जिसकी कुखें अवतारया श्री वीर जिनन्दा ।।
जिनके चरण लांछन सिंहनो यह अवगाहना कर सात ।
तन कंचन सम शोभते ते प्रणमूं जगन्नाथ ।। २ ।।
बहत्तर वर्ष नो आऊखो पाया सुखकारी ।
तीस वर्ष प्रभु कुंवर पदे, रह्या अभिग्रह धारी ।।
सुमेरु गिरि पर इन्द्र चौसठ ने महोत्सव करियो ।
अनंत बली अरिहन्त नाम जान श्री वीर प्रभु धरियो ।।
जब मात पिता सुरगति लईए पीछे लीनो संयम भार ।
तपस्या किनी निर्मली प्रभु साढ़ी बारे वर्ष मंझार ।।३ ।
नव चौमासी तप कियो प्रभु एक कियो छे मासी ।
पांच दिन ऊण अभिग्रह एक छे मास विमासी ।।
एक एक मासी तप किया, प्रभु द्वादश विरिया ।
बहत्तर पक्ष और दो दो मास छे विरिया किया ।।
दोए अढाइ और तीन दोय ए इम डेढ मासी दोय ।
भद्र महाभद्र शिवभद्र तप तप्या इम सोलह दिन होय ।।४।।

भिक्षुनी पड़िमा अष्ट भगतनी द्वादश कीनी ।
दोयसो ने गुणतीस छट्ठम तप गिनती लीनी ॥
इग्यारे वर्ष छे मास पच्चीस दिन तपस्या केरा ।
इग्यारे मास उगणीस दिवस पारण भलेरा ।
इण विधि स्वामी जी तप तपियाए पीछे लीनो केवल ज्ञान ॥
तीस वर्ष उण विचरिया ते प्रणमूं वर्द्धमान ॥ ५ ॥
प्रथम अस्थि दूजो चम्पा पिष्ट चंपा दोय करियो ।
वाणिया नेशाला ग्राम विहुं मिली द्वादश लहिए ॥
चतुर्दश नालन्दे पाड़े छे मिथिला भणिए ।
भद्दल पुरी दोए सव मिलो अड़तीसज गणिए ॥
एक आलंभिया एक सावत्थीए एक अनारज जान ।
चरम चौमासा पावापुरी जठे प्रभु पंहुचा निर्वाण ॥६॥
मुनिवर चौदे सहस्त्र, सहस्त्र छतीस आरजका ।
एक लाख गुण सठ सहस्त्र श्रावक तीन लाख श्राविका ॥
अधिक अठोर सहस्त्र इग्यारे गणधर नी माला ।
गौतम स्वामी वड़ा शिष्य सती चन्दन बाला ॥
जिन के केवल ज्ञानी सात सौ ए प्रभु पहुंचा निर्वाण ।
शासन वरते श्री वीर जो इक्कीस सहस्त्र वर्ष प्रमाण ॥७॥
पूर्व तीन सौ धार तेरह सौ अवधि ज्ञानी ।
मन पर्यव पांच सौ जान सात सौ केवल ज्ञानी ॥
वैक्रिय लब्धिना धार सात सौ मुनिवर कहिए ।
वादी चार सौ जान भिन्न भिन्न चर्चा लहिए ॥

एका एक चरित्र लियोए प्रभु एका एक निर्वाण।
चौसठ वर्ष लग चालियो दर्शन केवल नाण ॥ ८॥

बारा नरवर वृषभ, वृषभ दशएक जिन हय वर।
बारा हयवर महिष, महिष पांच सो एक गयवर॥
पांचसौ गज हरी एक सहस्र दोय हरि अष्टापद ।
दश लाख बलदेव, दो वासुदेव और एक चक्रीपद॥
करोड़ चक्री इक सुर कहियो एक करोड़ सुरा एक इन्द्र।
इन्द्र अनन्ता सूं नहीं नमें चिटी अंगूली अग्र जिनन्द॥९॥

आप तणा प्रभु गुण अनन्त कोई न पावे पार।
लब्धि प्रभावे करोड़ काय कोई शिर करोड़ बणावे॥
शिर शिर करोड़ां करोड़ वदन, करोड़ां करोड़ सुवाणी।
जिभ्या जिभ्या सू करोड़ करोड़ गुण करे सुज्ञानी।
कई करोड़ा करोड़ सागर लग ए करे ज्ञान गुणसार।
तो पिण पार पावे नहीं प्रभु गुण अनन्त अपार॥ १०॥

चौदेही राजु लोक भरिया बालु ना कणिया।
एका एक बालु गुण करे, प्रभु अनन्त अनन्ता॥
पूज्य प्रसादे ऋषि लालचन्द कहे नहीं आवे अन्ता।
संवत अठारे बासठ ए मास मृग शिर चन्द॥
रामपुरे गुण गाविया धन्य धन्य वीर जिनन्द॥ ११॥

महावीर स्तोत्र (च)

उदय विमल जग यश कियो,
शासन-पति स्मरण सुख लियो।
सिद्धार्थ नंद आनन्द करो,
त्रिशला-सुत दुःख को दूर करो ॥ १ ॥

महावीर वरनाम धरं,
बल रूप अनूप अतुल वरं।
वृद्धि करणां वर्द्धमान दियो,
सुख सम्पत्ति यश विलास लियो ॥ २ ॥

काया कंचन-वरणी देह धारी,
निरामय गंध अति सुखकारी।
सप्तहस्त प्रमाणे अच कही,
एक सहस्त्र अष्ट गुण युक्त लही ॥ ३ ॥

इन्द्रादिक सुरनर सेव करे,
तुम अष्ट महा प्रतिहार धरे।
चौतीश अतिशय वाणी वर्ण,
मन वांछित काज सफल करणं ॥ ४ ॥

तुम स्मरण संकट सर्व मिटे,
जिन किया भय अष्ट हटे।
दिवाकर तेजसे तम घटे,
जिम पाप पुंजकी जाल फटे ॥ ५ ॥

चिंता को सागर दूर टले,
जिम जहाज़ समुद्र पार उतरे।
आपत्ति रूपी अग्नि कही,
तुम नाम को नीर उपशांत लही ॥ ६ ॥

जो चित्त चावे सो हित दीजे,
आशा अमर पूरी कीजे।
जन्म मरण मेटन स्वामी,
अरिहंत पद विश्वम्भर नामी ॥ ७ ॥

लब्धि पूर्ण गौतम गुणी,
सुख दायक नायक संघ धणी।
द्वादश अंगी चउनाणी,
पूछत प्रश्नोत्तर भगवाणी ॥ ८ ॥

मातंग देवा शासन-सेवा,
सुरी सिद्धाय का संपद-देवा।
अहोनिशा रक्षा करत गुणी,
सब संतन को सुख दायक भणी ॥ ६ ॥

प्रभु नाम को स्मरण हाथलियो,
मन वच काया से शुद्ध कियो।
इण अवसर वंछित आशा फले,
दुख पीड़ा सबै दूर टले ॥ १० ॥

जिन गुण माल स्तवन करी,
भव जीव प्रति हिये कंठ धरी।
हीरालाल हर्ष धरी मुख उचरे,
सर्व संघ में आनंद होवे सरवरे ॥ ११ ॥

महावीर स्तोत्र (छ)

(नवकार जपोरे मन रँगे-यह देशी)

श्रीमहावीर नमो वरनाणी,
शासन जांको जाण रे प्राणी ।
धन २ जनक सिद्धारथ राजा,
धन त्रिशला देवी मात रे प्राणी ॥ १ ॥

जिन सुत जायो गोद खिलाश्रो,
वर्द्धमान विख्यात रे प्राणी ।
प्रवचन सार विचार हृदयमें,
कीजे अर्थ प्रमाण रे प्राणी ॥ २ ॥

सूत्र विनय आचार तपस्या,
चार प्रकार समाधि रे प्राणी ।
ते करिये भव सागर तरिये,
आतम भाव आराधी रे प्राणी ॥ ३ ॥

ज्यों कंचन तिहूँ काल कहीजे,
भूषण नाम अनेक रे प्राणी ।
त्यों जग जीव चराचर योनी,
है चेतन गुण एक रे प्राणी ॥ ४ ॥

अपना आप विपे थिर,
आतम सोहं हंस कहाय रे प्राणी ।

केवल ब्रह्म पदार्थ परिचय,
पुद्गल भ्रम मिटाय रे प्राणी ॥ ५ ॥
शब्द रूप रूप गंध न जामे,
नाय फरस तप छाँह रे प्राणी।
तिमी उद्योत प्रभा कछु नाँहि,
आतम अनुभव माँहि रे प्राणी ॥ ६ ॥
सुख, दुःख जीवन मरण अवस्था,
ए दस प्राण संघात रे प्राणी।
इन थी भिन्न 'विनयचंद' रहिये,
ज्यों जल में जल जात रे प्राणी ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

चौविश तीरथ नाथ कीर्ति, गावता मन गह गहे।
कुंभट गोकलचंद नंदन, 'विनयचंद' इन पर कहें ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनि की, तत्त्व निज उर में धरी।
उगणीस सौः छः के छमच्छर महास्तुति पूरण करी॥

गौतम स्तोत्र (१)

(तर्ज-पनजी मूंडे बोल)

मंगल वरतेजी म्हारे गौतम गणधर हृदय वसते जी।
धन्ना शाली भद्र की ऋद्धि और अष्ट महासिद्धि जी ॥
गौतम नाम ते प्रगटे म्हारे नव विधि निधि जी मं० ॥ १ ॥

लब्धि के भण्डार ज्ञान के गौतम है गुण आगार जी।
आप नाम म्हारे सब सुख वरते मंगलाचार जी मं० ॥ २ ॥
आप नाम अति आनंद कारी चिंता दुःख झट भांजे जी।
सुख सम्पत का मंगल वाजा मुझ घर वाजे जी मं० ॥ ३ ॥
नाम कल्पतरू म्हारे आंगण दारिद्र भग जावे जी।
मनवांछित म्हारे ऋद्धि सम्पदा घर में आवे जी मं० ॥ ४ ॥
अमृत-कुंभ में पाया चिन्तामणि दुःख गया सब भागे जी।
अमृत सम तुम मीठे गौतम मनसा लागी जी मं० ॥ ५ ॥
मन कमल तुम नाम हंस है बैठा अति सुखकारी जी।
हर्षित प्राण हुए सब मेरे अपरम्पारी जी मंगल० ॥ ६ ॥
किसी बात की कमी न म्हारे, गौतम गणधर पाया जी।
तीन लोक की लक्ष्मी मुझ घर वास वसाया जी मं० ॥ ७ ॥
मोतीलाल मुनि पूज्य श्री जवाहरलाल मन भाया जी।
छट्ठे पाट पर आप विराज्या मंगल छाया जी मंगल० ॥ ८ ॥
सम्वत् उन्नीसौ साल सतत्तर शहर लितारे आया जी।
घासीलाल मुनि समसी श्रावण स्तवन बनाया जी मं० ॥ ९ ॥

गौतम स्तोत्र (२)

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिन।
जो किये गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥
गौतम नामे गिरिवर चढ़े, मनवांछित हेला सांपड़े।
गौतम नामे नाशे रोग, गौतम नामे सर्व सांजोग ॥ २ ॥

जे वैरी वीरुआ वंकड़ा, तस नामे नावे ढूंकड़ा ।
भूत प्रेत नवि मन्डे प्राणते, गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥
गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ।
गौतम जिणशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥४॥
शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवंछित कापड तंबोल ।
घर सु घरनी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
गौतम उग्यो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ।
म्होटा भीरु मंदिर समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥६॥
घर घर मंगल घोडानी जोड़, वार पहोंचे वंछित कोड ।
महियल माने म्होटा राय जो त्रुटे गौतमना पाय ॥ ७ ॥
गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नरनी संगत मिले ।
गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥
पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ।
कहे 'लावण्य समय' करजोड़, गौतम तूटे संपति कोड़ ॥९॥

गौतम स्तोत्र (३)

प्रणमूं श्री वर्धमान सहुंकर सद्गुरु शीश नमाऊं ।
ज्येष्ठ शिष्य श्री गौतम स्वामी शुद्ध भावे गुण गाऊं रे ॥
भविका गौतम गणधर वन्दो भव भव दुःख निकंदो रे ॥ १ ॥
गोवर गाम आराम मनोहर वसुभूति विप्र जाणो रे ।
तस घर पृथ्वी नारी सुलक्षणी शील गुणे मृदु वाणी रे ॥ २ ॥

एक दिन सुख शय्या मांहे सूती इन्द्र भवन झलकंतो रें ।
दीठो स्वप्न हर्ष अति पामी कंतसु कह्यो विरतंतो रे ॥ ३ ॥
सवा नव मास पूरण थया जनम्या दान मान बहु कीनो ।
इन्द्र भवन देख्यो तीन कारण इन्द्रभूति नाम दीनो रे ॥ ४ ॥
रूप अनुपम कनकसी काया झलक झलक तन चमके रे ।
पच धायें करी वध्या दिन दिन सो दुश्मन देखीने चमके रे ॥ ५ ॥
चार वेद षट भाषा भणिया अर्थ तर्क विधि सारी रे ।
चउदे विद्या निधान है भारी पण्डित महिमा भारी रे ॥ ६ ॥
मध्य पावापुर सोमल ब्राह्मण यज्ञ करण को वुलाया ।
अग्निभूति वायुभूति सवे अति आडंबरे आयो रे ॥ ७ ॥
विद्या पात्र छात्र नरसंगे एक एक के लारे ।
पांच पांच से आया विचक्षण यज्ञ मांड्यो तिण वारे रे ॥८॥
श्री महावीर अतिधीर गुणोत्तम तप कियो दुष्कर कारी रे ।
ऋजु वालिका नदीतीर छट तपस्या गो दुह आसन करारी रे ॥९॥
वैशाख शुदी दशमी दिन जानो ध्यान शुक्ल मन ध्यायो ।
परम नरमपणे करम भ्रम कूं टाली केवल पद पायो रे ॥१०॥
मध्य पावा पुर वाहिर पधारया केवल महोत्सव काजे रे ।
इन्द्र चोसठ मिल आया उमंगसु त्रिगड़ा तणी विधि साजे रे ११.
तिन अवसर चार जाति का आवे देवदेवी कई करोड़ी रे ।
अमर विमान सुं अंवर छायो सेवा करे कर जोड़ी रे ॥ १२ ॥
यक्ष ऊपर थई देवता जावे इन्द्रभूति तव वोले रे
यक्ष लगे आई किहां जावे किणे पाड्या सुर भोले रे

उसी समय कोई कहे पुर बाहरे आया छे दिन दयाला।
त्रिशलानन्द जिनन्द दिवाकर पद काया प्रतिपाला रे ॥ १४ ॥
तेहना दर्शन काजे असुर सुर आया छे यहां चलाई रे।
इन्द्रभूति इम सुनि जन वाणी आणे मन अकड़ाई रे ॥ १५ ॥
मुझ से कौन अधिक जग मांई विद्या गुण बलधारी रे।
इन्द्र जाल से सुर वश कीना आडम्बर रच्यो भारी रे ॥ १६ ॥
मुझ आगल यह कभी नहीं ठेरे इम सोची तिण वारे रे।
बैठा पालखी मान धरीने पाँच सौ छात्र परिवारे रे ॥ १७ ॥
समोसरण तणी देखी रचना मन मांही नाम विचारे।
ऐसी कला एक भी नहीं मुझ मांही वश किम आवशे म्हारे रे १८
पाछी फिरूं तो निन्दा थावे पग पग शोच घणेरा रे।
देख्या श्री जिन राज नयण से विस्मय हुआ बहुतेरा रे ॥१९॥
हरिहर ब्रह्मा नहीं रवि इन्द्र दीसे प्रताप सवायो।
इण सुं विवाद करी नहीं जितू नाहक मैं चल आयो रे ॥ २० ॥
स्तम्भ उभा अणबोला रह्या तब श्री जगदीश उच्चारे।
इन्द्रभूति सुखे आया चलाई तब मन मे ऐसे विचारे रे ॥२१॥
दिनकरने सब जाण जगत के तिम मुझ नाम ए जाणे रे।
पण मुझ मन शंका जो निवारे तो सभी भाव पिछाणे रे॥२२॥
परमेश्वर कहे तुझ चित्त शंका वेद में तीन दकारो रे।
दया दान दमन इन्द्रिय मन तत्व शुभ यह विचारो रे॥ २३॥
जीव छे निश्चय त्रिहु पद से वेद साक्षी इम न्यावे रे।
इम सुणी पंचशत परिवारे संयम को पद ठावे रे ॥ २४ ॥

अग्निभूति वायुभूति पण आया संयम लियो त्रिहुं भाई रे ।
त्रिपदी ज्ञान लब्धि थई प्रगट गणधर पदवी पाई रे ॥ २५ ॥
छठ छठ तप निरन्तर करणी वरणवी सूत्र मझारो रे ।
चार ज्ञान चउदे पूर्वधर उकुडु आसन धारो रे ॥ २६ ॥
रात दिवस प्रभु की सेवा किधी पूछया प्रश्न अपारो रे ।
चर्चा वाद विषे अति करड़ा कीनो अति उपकारो रे ॥ २७ ॥
एक दिवस श्री गौतम सोचे प्रथम मै दीक्षा धारी रे ।
मुझने केवल ज्ञान न उपज्यो थया चिंतातुर भारी रे ॥ २८ ॥
वीर प्रभु कहे गौतम सेती आगे आपना रहया भेला रे ।
लहुड़ वड़ाई की रीत ज होती इहां पण थया तुम चेला रे ॥२९॥
अब इण भव के अन्तर गौतम थास्यां बराबर दोई रे ।
मोहनी किल्लो जीत लेवो थें कमी रहे नहीं कोई रे ॥ ३० ॥
यह सुणी हिय हर्ष घणेरो इन्द्रभूति मन आयो रे ।
धन धन अतरयामी दयानिधि मुझ पर प्रेम सवायो रे ॥३१॥
लब्धि निधि श्री गौतम स्वामी गृहवासे रह्या वर्ष पंचासौ ।
तीस वर्ष छद्मस्थपणा में प्रभु सेव्या उल्लासो रे ॥ ३२ ॥
कार्तिक वदी अमावसनी राते श्री जिन मुक्ति सिधाया ।
गौतम स्वामी ने केवल उपन्यो इन्द्र महोत्सव भणी आयो रे ३३
बारां वर्ष केवल पदमांही श्री जिन धर्म दीपायो रे ।
होई अजोगी मुक्ति सिधाया परम मंगल पद पायो रे ॥ ३४ ॥
बाणुं वर्ष को सर्व आउखो जग में कीर्ति सवाई रे ।
गौतम नाम थी रोग न व्यापे शोक न आवे कदाई रे ॥ ३५ ॥

वध बंधन उच्चाटन कामन यंत्र मंत्र नहीं चले रे।
अरि करि हरि भय भागे नाम श्री दुश्मन को गर्व गाले रे॥३६॥
गौतम नाम से विघ्न विनाशे चोड़ चरड़ नहीं गंजे रे।
गौतम नाम से ताव तिजारी दुःख विभागी सहु भंजे रे॥३७॥
गौतम नाम से हिरि सिरि सम्पत्ति ऋद्धि सिद्धि बहु आवे।
पुत्र परिवार सज्जन सुख साता जो स्मरे शुद्ध भावे रे॥ ३८॥
गग्गा गौ कामधेनु सुखदायी तत्ता सुर तरु जाणो रे।
मम्मा मणि चिन्तामणि सेती गौतम नाम वखाणो रे॥ ३६॥
उगणीसौ अट्ठतीस मृगसिर सुद की पंचमी तिथि रविवारो।
त्रिलोक ऋषि कहे गौतम प्रभु ने होजो सदा नमस्कारो रे ४०

श्री मुनिगुण मंगल माला ॥

[चाल—आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥]

समरूँ श्री अरिहंत सिद्ध साधु,
धर्म जिण आणा मंझार जी।
चारों ही मंगल उत्तम सरणो,
हो जो सुखकार जी।
प्रणमूं ते गुणवन्त त्रिकाले,
त्रिकरण मन वच काय जी।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति साता,
नित नित देवो सवाय जी॥ १॥

अतीत अनंत चोवीसी वंदुं,
केवली अनन्त अपार जी ।
वर्तमान चोवीशी साहब,
नाम कहूं सुविचार जी ॥ २ ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन,
सुमति पद्म सुपास जी ।
चंद्र प्रभु जी ने सुविधि जिनेश्वर,
शीतल दो शिववास जी ॥ ३ ॥
श्री श्रेयांस वासुपूज्य वंदुं
विमल अनन्त धर्म देव जी ।
शांति, कुंथु, अरह, मल्लि, मुनिसुव्रत,
नमि, नेमि करूं सेव जी ॥ ४ ॥
पार्श्व और वर्द्धमान जिनेश्वर,
ए चौवीस जिनराय जी ।
कर्म खपाई केवल पाया,
मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ ५ ॥
जयवंता श्रीमन्दिर स्वामी,
युगमन्दर सुखकार जी ।
बाहु सुबाहु ए चउ विचरे,
जम्बुद्वीप मन्झार जी ॥ ६ ॥
सुजात स्वयं प्रभुने ऋषभानन,
अनन्त वीर्य जग भाण जी ।

सूर प्रभु विशाल वज्रधर,
चन्द्रानन गुणखान जी ॥ ७ ॥
पूरव पश्चिम चार चार जिन,
धात्री खंड मन्झार जी ।
विचरे ग्राम नगर पुर पाटण,
करता पर उपकार जी ॥ ८ ॥
चन्द्रबाहु भुजंग ईश्वर जी,
नेमिश्वर शिवकन्त जी ।
वीरसेन ने श्री महाभद्र जी,
देव जस श्री जसवन्त जी ॥ ९ ॥
वीसवां अजितवीर्य जग नायक,
चार चार जिनराय जी ।
पुष्करार्द्ध में विचरे साहब,
नामे नव निधि थाय जी ॥ १० ॥
उत्कृष्ट पदे एक सो सित्तर,
जघन्य केवली दोय कोड़ी जी ।
उत्कृष्ट पदे प्रत्येक क्रोड़ तिन में,
वर्त्तमान जे होय जी ॥ ११ ॥
अष्ट गुणोत्तम पन्द्रह भेदे,
सिद्ध सदा सुखकारी जी ।
अलख निरंजन भव दुःख भंजन,
समरता सुखकार जी ॥ १२ ॥

आचारज अष्ट सम्पदा धारक,
वारक मिथ्या भरम जी ।
गुण छत्रिश चउतीरथ,
दिपावे जैन धर्म जी ॥ १३ ॥
इन्द्रभूति अग्निभूति वंदुं,
वायुभूति गुणवन जी ।
चौथा व्यक्त सुधर्मास्वामी,
मण्डित पुत्र जसवंत जी ॥ १४ ॥
मौर्य पुत्र अकंपित अचल जी,
मेतारज गुणाधार जी ।
ग्यारवां प्रभास जी वंदुं,
चुम्मालीस से परिवार जी ॥ १५ ॥
चोवीश जिनना गणधर वंदु,
चउदशे बावन जाण जी ।
चउदा पूरव धारक सारा,
पहुंचा सहु निर्वाण जी ॥ १६ ॥
ऋषभ से आदिक सहस्र, चौरासी,
मुनिवर गुण भंडार जी ।
धीर वीर गंभीर गुणोत्तम,
जगतां जय जय कार जी ॥ १७ ॥
आरिसा भवन में श्री भरतेश्वरजी,
पाया केवल ज्ञान जी ।

अणुक्रमे आठ पाटोधर इण विध,
पाया पद निर्वाण जी ॥ १८ ॥
बाहुबल मुनिवर महा बलिया,
बारा मासी तप ध्यान जी ।
मान मेली ने पग उठायो,
पाया केवल ज्ञान जी ॥ १९ ॥
जुंज करतां पुत्र अठाणुं,
श्री आदीश्वर स्वामी जी ।
समझाई दियो संजम तेहने,
पहोंच्या ते शिवधाम जी ॥ २० ॥
सागर मघवा खट खंड त्यागी,
चक्री सनत्कुमार जी ।
रूप देखवा सुर छल कीनो,
लीधो संजम भार जी ॥ २१ ॥
पद्म हरिषेण जय नामे रिख,
चक्री दस ऋद्धि छोड़ जी ।
शम दम उपशम धीर गुणागर,
कर्म बन्धन दिया तोड़ जी ॥ २२ ॥
अचल विजय भद्ररिख वंदूं,
सुभद्र मुनि रिखी राय जी ।
सुदर्शन आनन्द नन्दन ।
राम गया शिव मांय जी ॥ २३ ॥

हलधर बलिभद्र जी पहुंचा,
पंचम स्वर्ग मझार जी ।
उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी,
वली कहूँ अग अनुसार जो ॥ २४ ॥
आर्द्र कुमार महा बुद्धिवंता,
जीत्या महा पंच वाद जी ।
संयम पाली शिवपद पाया,
जिन आज्ञा मर्याद जी ॥ २५ ॥
उदय पेढाल पुत्रे करी चर्चा,
गौतम स्वामी सु जाय जी ।
कुमारपुतिया नाम लेइ ने,
सूत्र सुयगडांग नी मांय जी ॥ २६ ॥
दशदशांग त्रीजे अग चालीया,
कहा तिहां मुनिवर नाम जी।
ते सहु शिव गामी गुणधामी,
कीना उत्तम काम जी ॥ २७ ॥
सूत्र समवायांग मांही प्रकाश्या,
नाम केई प्रसिद्ध जी ।
गणधर मुनिवर चउदे पूर्वधर,
नाम लिया रिद्धि सिद्धि जी ॥ २८ ॥
पिंगल नाम नियंठे पूछीया,
प्रश्न पंच रसाल जी ।

खन्दक संन्यासी सुन के तत्क्षण,
वीर पासे गया चाल जी ॥ २६ ॥
संशय निवर्त्या संयम लीनो,
कीनो तप अंकार जी।
अनशन धारी स्वर्ग बार में,
थया एका अवतार जी ॥ ३० ॥
वीर जिनेश्वर तान वखाणूं,
रिखभदत्त गुणाधार जी ।
सेठ सुदर्शन राज ऋषीश्वर,
धन गंगिया अणगार जी ॥ ३१ ॥
ए चार ऋषि सुगति पहोंच्या,
धन धन भगवन्त मात जी।
देवानन्दा धन सती जयवंती,
पूछया प्रश्न विख्यात जी ॥ ३२ ॥
वीर प्रभु जी नी नंदीनी वंदु,
सती सुदर्शना जाण जी ।
दीक्षाधारी कर्म निवारी,
पाई पद निर्वाण जी ॥ ३३ ॥
पंचमी पड़िमा कार्त्तिक शेठे,
धारी तिणसो वार जी ।
तापस खीर जम्यो मोरा पर,
जाण्यो अथिर संसार जी ॥ ३४ ॥

सहस्र अट्ठोत्तर गुमास्ता साथे,

आदरयो संयम-भार जी ।

सेठ भया शक्रेन्द्र सौधर्म,

जागे मोक्ष मन्झार जी ॥ ३५ ॥

सोला देश तजी संयम लीयो,

दिये भाणज ने राज जी ।

करी क्षमा धनराय राय जी,

उदाई सारया आतम काज जी ॥३६

गंगदत्त आनन्द व सिल रिखरोहा,

सुनक्षत्र नाम अणगार जी ।

श्रवणभूति आराधक थइने,

पहोंच्या स्वर्ग मन्झार जी ॥ ३७ ॥

तिहां थी चाली ने मुक्ति सिधाशे,

इत्यादिक अणगार जी ।

नाम ठाम तप जप को वर्णन,

व्यवहार पणत्ति मंझार जी ॥३८॥

धारणी सुत श्रेणिक नृपनन्दन,

धन धन मेघकुमार जी ।

आठ अंतेउर छिन में छोड़ी,

त्याग दियो संसार जी ॥ ३९ ॥

गुण रतन भिक्षु पडिमा तप,

अंते अणसण कीधा जी ।

विजय विमान में जाय विराज्या,
होशे विदेह में सिद्ध जी ॥ ४० ॥
बत्रिश नार तजी रंभा-सी,
धन थावर्चा कुमार जी ।
नेम प्रभु पें संयम लीधो,
सहस्र पुरुष परिवार जी ॥ ४१ ॥
थावर्चा मुनि सुं चर्चा किणी,
शुक देव सन्यासी जाण जी ।
एक सहस्र शिष्य साथे संयम,
लीधो गुणनिधि खान जी ॥ ४२ ॥
पंथकादिक परधान पांचसे,
सेलक रायनी लार जी ।
अढाई सहस्र पुण्डरिक गिरी सीझा,
धन जिणरो अवतार जी ॥ ४३ ॥
रेणा देवी की केण न कीधी,
रत्न दीपसूं आय जी ।
संयम लीनो चम्पा नगरी,
जिन पाल मुनि राय जी ॥ ४४ ॥
तीन धन्ना में धार्‌यो संयम,
सुगुरु स्थेवरनी पास जी ।
तीनों प्रथम स्वर्ग सिधाया,
महा विदेह शिवा वास जी ॥ ४५ ॥

छए मित्र मल्लि जिनवरना,

महाबलादिक गुणवंत जी।

गणधर पद ग्रही मुक्ति बिराज्या,

थया सिद्ध भगवंत जी ॥ ४६ ॥

सुबुद्धि प्रधानजी ने भलि विधे,

पाणी परचो बताय जी।

जितशत्रु नृप को भर्म मिटायो,

दोई गया शिव मांय जी ॥ ४७ ॥

तेतली मुनिवर गुणना दरिया,

पोट्टिला दियो प्रतिबोध जी।

केवल पामी मुक्ति बिराज्या,

तजियो सकल विरोध जी ॥ ४८ ॥

युधिष्ठिर अर्जुन अने भीम जी,

सहदेव नकुल अणगार जी।

मास मास तप अभिग्रह कीनो,

नेम वन्दन सुविचार जी ॥ ४९ ॥

हस्ति कल्पपुर गोचरी करता,

नेम तणुं निर्वाण जी।

सुणीने पांडव पंच शत्रुंजे,

संथारो लिया जाण जी ॥ ५० ॥

दोय मास संलेषणा सिद्धा,

रुक्मणी द्रोपदी सोय जी।

संयम पाली स्वर्ग पंच में,
एकावनारी होय जी ॥ ५१ ॥
धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी,
किड़ियां पर करुणा आण जी ।
कड़ुवा तुम्बानो आहार ज कीधो,
खीर खांड सम जाण जी ॥ ५२ ॥
क्षण अन्तर में वेदना प्रगटी,
रिख समता मन धार जी ।
सर्वार्थ सिद्ध में जाय विराज्या,
चवी गया मुक्ति मंझार जी ॥ ५३ ॥
कुंडरिक भाइने डगियो जाणी,
पुंडरिक संयम धार जी ।
सर्वार्थ सिद्ध लिया तीन दिवस में,
धन जिणरो अवतार जी ॥ ५४ ॥
सुव्रतादिक श्रमणी महासतियों,
पाली प्रभुनी आण जी ।
ते वर्णन भिन्न करि देखो,
ज्ञाता अंग प्रमाण जी ॥ ५५ ॥
गौतम समुद्र सागर अने गंभीर,
थिमितने अचल कुमार जी ।
कपिल अक्षोभ प्रश्न सेन ने,
विष्णु अक्षोभ सागर जस धार जी ॥५६॥

सागर समुद्र हेमवंत नामे,
अचल धरण गुणवंत जी।
पूरण अभिचंद्र एह अठारा,
भ्राता जाणो सहु संत जी ॥ ५७ ॥
अधक विष्णु सुत धारणी अगज,
आठ अतेउर मेल जी ।
नेम समिपे लीनों संयम,
करि मुगति में सहेल जी ॥ ५८ ॥
वसुदेव सुत देवकीजाया,
अणियसेण अनन्त सेण जी।
अजित सेण अणिहय रिपु नामे,
देव सेण शत्रुसेन जी ॥ ५६ ॥
सुलसा घर वधिया छे बंधव,
बत्तीश बत्तीश नारी जी।
तजिने नेम प्रभुपे संयम,
लेइने छठ छठ धार जी ॥ ६० ॥
पूरव धारी कर्म निवारो,
पहोंचा मोक्ष मंझार जी।
वसुदेव सुन धारणी अगज,
सारण भया अविकार जी ॥ ६१ ॥
गज-तालव जिम कोमल काया,
धन धन गजसुकुमाल जी।

वसुदेव सुत देवकी अगज,
छोडयो जग जंजाल जी ॥ ६२ ॥
एकाकी श्मशान में जाई,
उभा ध्यान-लगाय जी ।
सुसरो देखी रीस भराणो,
माटी की पाल बनाय जी ॥ ६३ ॥
धग धगता खेरना खीरा,
मेल्या रिखने शीश जी ।
महा वेदना सहि सम परिणामे,
मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ ६४ ॥
सुमुख दुर्मुख वली उवय कुंवर,
दारूण अनाधिष्ट जाण जी ।
जाली मयाली उवयाली ऋषि,
पुरुष सेन वखान जी ॥ ६५ ॥
वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि सब,
अनिरुद्ध वैदर्भिनंद जी ।
सत्यनेमि दृढनेमि ए सब,
पाम्या शिव सुखकंत जी ॥ ६६ ॥
पद्मावती, गौरी गांधारी,
लखमणी सुसमा नार जी ।
जांबुवती, सत्यभामा रुक्मिणी,
कृष्णरमा सुविचार जी ॥ ६७ ॥

मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी,
सांबकुंवरनी नार जी ।
ए दशे संयम केवल लेई,
पहूंची मुक्ति मन्झार जी ॥ ६८ ॥
मकाई किंकम रिख महोटा;
धन अर्जुन अणगार जी ।
संयम लेई क्षमा हृदय धारी,
छठ छठ तप लियो धार जी ॥ ६९ ॥
छः मास में कर्म खपाई,
मुक्ति गया गुणवंत जी ।
कासव खेम क्षितिधर हितकर,
कैलास हरिचंद संत जी ॥ ७० ॥
वारत सुंदसण पूरणभद्र,
सुमनभद्र सुप्रतिष्ठ जी ।
मेघ एवन्ता अलख ए सोला,
पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ ७१ ॥
नंदादिक तेरे पटरानी,
वीर जिनंद उपदेश जी ।
केवल पाई मुक्ति सिधाई,
पाई अविचल यश जी ॥ ७२ ॥
कालियादिक दश श्रेणिक रानी,
सुनियो पुत्र वियोग जी ।

महातप धारी कर्म निवारी,
मेट दिया सब रोग जी ॥ ७३ ॥
एनऊ सद्दु अंतगड़ सिद्धा,
अंत समय केवल पाया जी ।
अंतगड़ सूत्र वर्णन जाणो,
जपतां सुख सवाय जी ॥ ७४ ॥
श्रेणिक सुत धन जाली मयाली,
उवयाली पुरुष सेन जी ।
वारिसेण दीर्घ सेण लटदन्त जी,
गूढ़दन्त सब जग सेन जी ॥ ७५ ॥
विहलकुमर अभयादिय तेविश,
श्रेणिक सुत गुणधाम जी ।
अनुत्तर विमान गया बहु रिख जी,
चवि जासे शिवठाम जी ॥ ७६ ॥
बत्तीश रंभा तजि धन कोड़ि,
धन धन्नो अणगार जी ।
छठ छठ तप निरंतर करणी,
आयंबिल उझित आहार जी ॥ ७७ ॥
चौदह सहस्र मुनीश्वर मांही,
श्रेणिक आगे स्वामी जी ।
कहे दुक्कर दुक्कर तपधारी,
शम दम उपशम धाम जी ॥ ७८ ॥

सुनक्षत्र इसीदास जी पेढ़ग,
रामयुत चंद्रिमा नाम जी ।
मूढ़ माई टेढाल पुतर रिख,
पोटिल विहल अभिराम जी ॥ ७९ ॥
धन्नानी रीतें ए नव ही,
करि करणी श्रीकार जी ।
अनुत्तरोववाई सूत्र के मांहि,
राख्यो छे विस्तार जी ॥ ८० ॥
धन सुबाहु भद्र नन्दी रिख,
सुजात सुवासव धीर जी ।
जिनदास धनपति महाबल,
भद्र नन्दी गंभीर जी ॥ ८१ ॥
महचन्द वरदत्त ए दश मुनिवर,
पूरव दान प्रभाव जी ।
ऋद्धि सम्पत्ति पाया अति सुन्दर,
संयम लियो चित्त चाव जी ॥ ८२ ॥
केइक तिण भव मुगति सिधाया,
केइ पन्दरा भव धार जी ।
मुक्ति श्री वरशे बड़भागी,
सुख विपाक अधिकार जी ॥ ८३ ॥
पउमादिक दश श्रेणिक पोत्रा,
वीर जिनेश्वर पास जी ।

दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया,
पामशे अविचल वास जी ॥ ८४ ॥
निखेड़ादिक बलभद्र जी का नंदन,
बारा ही गुणवन्त जी ।
पांच पांच से त्यागी अंतेउर,
सर्वार्थसिद्ध पोहन्त जी ॥ ८५ ॥
सूत्र निरयावलिकानी मांहि,
भाख्या भाव जिनन्द जी ।
एकावतारी छे रिख सारा,
टालशे भव दुःख फन्द जी ॥ ८६ ॥
दो मासा सुवर्ण की इच्छा,
आई तृष्णा अपार जी ।
समताथी केवल पद पाया,
धन कपिल अणगार जी ॥ ८७ ॥
धन वली नमी राजऋषीश्वर,
त्यागी रमणी हजार जी ।
इन्द्र से प्रतिउत्तर कीना,
पाया भव जल पार जी ॥ ८८ ॥
हरिकेशी चित्तमुनि गुणसागर,
संजययति ऋषिराय जी ।
गर्दभाली क्षत्री राज ऋषिधन,
दशारणभद्र कहाय जी ॥ ८९ ॥

खंदक ऋषिनी खाल उतारी,
क्षमा करी भरपूर जी ॥ ६५ ॥
खंदक ऋषिना शिष्य पांचशे,
पील्या घाणी मांय जी ।
क्षमा करी केवल पद पाया,
मुगति गया मुनिराय जी ॥ ६६ ॥
स्थूलिभद्र अरणिक सिजंभव,
श्री जिन आज्ञा मांय जी ।
वरत्यां वरते ते सहु मुनिवर,
सुणतां पातक जाय जी ॥ ६७ ॥
मरुदेवी गजहोदे पाया,
निर्मल केवल ज्ञान जी ।
ब्राह्मी सुन्दरी चन्दन बाला,
ध्यायुं शुक्ल ध्यान जी ॥ ६८ ॥
राजीमती द्रोपदी सुभद्रा,
सीता कौशल्या जाण जी ।
मृगावती अजना मृगलेखा,
मलया शीलनी खाण जी ॥ ६९ ॥
चेलणा सुज्येष्ठा शिवा कुन्ती,
मयणरेहादिक जेह जी ।
संकट पड़िया शील ज राख्युं,
आण्यो संयम नेह जी ॥ १०० ॥

पाप पलावे संपत आवे,
कटे कर्म को खार जी ॥ १०६ ॥
यह जानी भवियण नित भणजो,
थावे शुद्ध परिणाम जी ।
उगणीसे सैंतीस महावदी,
आठम त्रिलोकरिख किया गुणग्राम जी ॥१०७॥
अधिको ओछो जो जोड़ाणो,
मिच्छामि दुक्कडं मोय जी ।
पंच परमेष्ठी शरणो मुझने,
मन वांछित फल जोय जी ॥ १०८ ॥

॥ कलश ॥

अरिहंत सिद्ध आचार्य त्रीजा,
उपाध्याय अणगार ए ।
मति श्रुतरिख अवधि ज्ञानी,
मनपर्यव सुखकार ए ।
केवल ज्ञानी लब्धि धारक,
चरित्र पंच प्रकार ए ।
त्रिलोख रिख कहे वर्त्या वर्ते,
वंदू वारम्बार ए ।
सदा दीजे शिवसुख सार ए ॥

साधु वन्दना (१)

प्रहर में उठिया भावसुं, सिमरो पंच नवकारो ए ।
सूत्र सिद्धान्त ज्यारा मुख वसे, चवदे पूरव धारो ए ॥ १ ॥
नित्य नित्य करूं साधु जी ने वंदना, आणी हरख उमेदो ए ।
सफल करूं भवनर तणो, मिट जावे दुखने खेदो ए ॥ २ ॥
बारे गुण करी दीपता, पहले पद जगदीशो ए ।
देव आराधुं एहवा, जीत्या राग ने रीसो ए ॥ ३ ॥
आठ गुण सिद्ध तणा, अतिशय छे इगतीसो ए ।
दोय पदारा भेला किया, गुण हुआ पूरा वीसो ए ॥ ४ ॥
आचारज तीजे पदे, दीपे गुण छत्तीसो ए ।
उपाध्यायजी ने म्हारी वन्दना, होजो अहनिशि दीसो ए ॥ ५ ॥
द्वादश सूत्र तणा, अर्थ भणेने भणावे ए ।
गुण पचवीस करी शोभता, ज्यारी सेवा किया सुख पावे ए ६
गुण सतावीस साधुना, विचरे छे वर्त्तमानो ए ।
ज्यांने होजो म्हारी वंदना, अठोत्तरसो करो ए ॥ ७ ॥
एकसो आठज गुण कह्या, नवकारावलीना पूरा ए ।
एकेको चित्त करी समरजो, आखर छे अतिरूड़ा ए ॥ ८ ॥
प्रथम जिनेश्वर समरिये, आदेश्वर जी ना पायो ए ।
शासन शुद्ध वरतावीने, मोक्षनगर सिधाया ए ॥ ९ ॥
प्रथम जिनेश्वर सुत हुआ, एक सोने पूरा ए ।
इण भव मोक्ष सिधाविया, करणी कर हुआ शूरा ए ॥ १० ॥

चउरासी गणधर हुआ, लब्धि तणा भण्डारो ए।
सहस्र चोरासी शिष्य हुआ, ज्यां लीधो संयम भारो ए ॥११॥
तीन लाख शिष्यणी हुई, जिन में सहस्र चालीस शिवपुर पहुंची
उन में हुई बाईस मोटकी, ज्यारी तो नाम ब्राह्मी हो ॥१२॥
कंपिल ब्राह्मण मोटको, सोनो लाऊं दोय मासो ए।
क्रोड़ ताईं पाछो पल्यो नहीं, तृष्णा रो बड़ो तमासो ए ॥१३॥
हुवे इच्छा थांरी मांग ले, बले राय नरेशो ए।
ममता पाछी मूकीने, लुच्यां शिरजा केसो ए ॥ १४ ॥
पांच सो भील प्रतिबोधाने, कहो जिनेश्वर एमो ए।
कर्म खपाई मुक्ति गय, पाम्या पदवी खेमो ए ॥ १५ ॥
नमिराय हुवा मोटका, प्रत्येक बुद्ध श्रीकारो ए।
छोड़ी घणी ऋद्धि साहबी, ए सहस्र आठ नारो ए ॥ १६ ॥
शक्रेन्द्र वहां आविया, करी ब्राह्मण को रूपो ए।
दस प्रश्न उससे पूछिया, सांभल जो तुमे भूपो ए ॥ १७ ॥
हेतु कारण कह्या घणा, न्यारा न्यारा भेदो ए।
उत्तर दीधा अच्छी तरह, न आया मन में खेदो ए ॥ १८ ॥
इन्द्र सुनी हर्षित हुवो, धन धन आपकी वाणी ए।
अठेइ आप उत्तम हुवा, आगे उत्तम निर्वाणो ए ॥ १९ ॥
वीर कहे गौतम भणी, सांभल जो तुमे साधु ए।
पंचे इन्द्रिय पायके, मत करो प्रमादो ए ॥ २० ॥
बहु साधा भणी, हो जो म्हारे नमस्कारो ए।
थारां तो गुण किया घणा, सोळे ओपमा श्रीकारो ए ॥ २१ ॥

हरके शी नामे जती, जात तणा चंडालो ए ।
जिस की सेवा करे देवता, धन छे कारतना प्र तेरा टो ए ॥ २२ ॥
यक्ष पाडे उठिया गोचरी, बोले अनारज तड़की ए ।
देवता भी चल आया वहां, छाती घणारी धड़की ए ॥ २३ ॥
डरया ब्राह्मण तीन सो, राय ऋषीश्वर रुटा ए ।
विनती प्रतिलाभिया, पांच द्रव्य तिहा तूठा ए ॥ २४ ॥
जातिरो कारण को नहीं, करणीरा फल सारो ए ।
हरिकेशी मोटा मुनि, पहोंच्या मुक्ति मझारो ए ॥ २५ ॥
चित उपदेश दियो आपने, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती आगे ए ।
पेली बंधन पड़ी गयो, अब शिक्षा कैसी लागी ए ॥ २६ ॥
हाथी दाड़ामें कलीरयो, तिम मुझ ने जाणो ए ।
चित्त उत्कृष्टी आदरी, पहोंच्या छे निर्वाणो ए ॥ २७ ॥
इखुकार राजा तिहां, घर कमलावती नारो ए ।
भृगु पुरोहित जसा भार्या, ब्राह्मणरा दोय कुमारी ए ॥ २८ ॥
छउ अनुक्रमे निसरियो, लीधो संयम भारो ए ।
करम खपावी मुक्ति गया, चउदमा अध्ययन विस्तारो ए ॥२९॥
संयति आहिडे निसरियो, मार्यो मृगने बाणो ए ।
गर्धभाली गुरु देखने, मन में घणो संकाणो ए ॥ ३० ॥
खमजो अपराध हमारो, हूं अति अवसर चूको ए ।
कृपा करो हो महामुने, हूं थारी वाणी का भूखो ए ॥ ३१ ॥
म्हांसु राजा थे डरपिया, थांसु डरपे घणा जीवो ए ।
सुन शूं राजा मोटका सती, दियो नरकारी नींवो ए ॥ ३२ ॥

...ात भय संसार में, मरण तणो भय भारी ए।
...ऋषीश्वर कोप्या पछे, कोड़ारी कर देवे धारी ए॥ ३३॥
अभय हो राजा तुम भणी, म्हांरो भय मती राखो ए।
ओछो जीतव कारणे, समता रस तुम चाखो ए॥ ३४॥
अस्थिर राजा थारो आउखो जीवाने घणा मत संतापो ए।
थारे तो राजा साथे चालसी, एक पूराय वीज पापे ए॥ ३५॥
विजळी का चमत्कार ज्यूं, जैसे संझारो भाणो ए।
दाव अग्णि जल विन्दुवो, जेसे कुंजररो कानो ए॥ ३६॥
हय गय रथ पायक दल, सेना चार प्रकारो ए।
थेह राजा छोड़ने, लेवोनी संयम भारो ए॥ ३७॥
इत्यादिक उपदेश दियो, खुली अभ्यन्तर नी गांठो ए।
संजति राजा संयम आदरियो, कोरे घड़ लागी छांटे ए॥ ३८॥
अनेक चक्रवर्ती नीसरिया, छोड़ी राज भण्डारो ए।
चौसठ सहस्र अंतेउरी, दो दो वीरांगना लारे ए॥ ३९॥
भरतेश्वर जी आददे, दसों ही चक्रवती सारो ए।
शुद्ध संयम पालने कर दियो, खेवो पारो ए॥ ४०॥
इण सर्पणी मांहि हुवा, आठ राम गया मोक्ष ए।
बलभद्र जी आगे होवसी, तीन लोकरा नाथो ए॥ ४१॥
करकंडु आददे, प्रत्येक बुद्ध श्रीकारो ए।
राय उदाई हुवा मोटका सोले देशना सिरदारो ए॥ ४२॥
मो मम किण ही न बांदिया, मन में धर्म विचारी ए।
इन्द्र जाणी ने कोपिया, दियो अहंकार उतारी ए॥ ४३॥

दशारणभद्र राजाजी नीसरिया, कीना मोच्छव भारी ए।
रथ सिणगारिया बाजणा, साथे पांच से नारी ए ॥ ४३ ॥
ऐरापतिने हुक्म हुवो, हाथी वैक्रिय लाट हजारो ए।
एकेका हाथी तणा, मुंडा पांचसे वारो ए ॥ ४४ ॥
देखी ऋद्धि इन्द्र तणी, चित्त पाम्यो चमत्कारो ए।
यहाँ तो मान रहे नहीं, हूं लेऊं संयम भारो ए ॥ ४५ ॥
इन्द्र आवे वन्दना करी, धन धन दशारणभद्र राजा ए।
थें तो संयम आदरयो, थारा अधिक गुण गाय ए ॥ ४७ ॥
श्रेणिक करे वाड़ी निसरियो, दीठो श्री अणगारो ए।
आपरी वय सुकुमार छे, उत्तर अति मीठो ए ॥ ४८ ॥
मृगापुत्र महेला बैठा, दीठा श्री अणगारो ए।
जाति स्मरण पामी ने, हेठा उतारिया ततकालो ए ॥ ४९ ॥
आय माता ने इम कहे, हु लेसु संयम भारो ए।
संयम छे बहु दोहिलो, जैसे खांडारी धारो ए ॥ ५० ॥
कायरने माता दोहिलो, सूराने सोहिलो ए।
उत्तर प्रति उत्तर किया घणा, लीनो संयम भारो ए ॥ ५१ ॥
कोई केसर गुलाब छीड़कने कोई कुहाड़ा सु छेदे ए।
मुनिवर समता आणने, राग द्वेष दोनुं भेदे ए ॥ ५२ ॥
लेई दीक्षा शुभमणी, हुआ सकल भारी अणगारो ए।
सिंह तणी परे विचरता, जारी वृत्ति छे अति भारी ए ॥५३॥
मुनि अनुक्रमे विचरता, भव्य जीवारे भागो ए।
मार्ग दिपायो मोक्षरो, हुआ बुद्धिरा भण्डारो ए ॥ ५४ ॥
संवत अठारे चोसठ 'फलोदी' गांव चौमासो ए।
पूज्य जेमलजी रा पाटवी, ऋषि रायचन्द्रजी हुलासो ए ५५

साधु-वन्दना (२)

साधु सुपातर बाड़े सौदागर जिनके पासे जाऊँगा।
अरिहन्त नाम का बड़ा खजाना ऊठ सवेरे लाऊँगा ॥ १ ॥

वह खजाना बड़ा काम का, धर्म की जागीरी बनाऊगा।
मन वश राख वचन वश राख, ज्ञान की ज्योति दीपाऊँगा ॥२॥

ज्ञान का घोड़ा चित्त का चाबुक, विना पलाण लगाम लगाऊँगा.
तप तलवार भाव का भाला, क्षमा खड्ग सजाऊँगा ॥ ३ ॥

हिंसा धर्मी महा अधर्मी, उसका वास छुड़ाऊंगा।
छःकाया का पीर साधु, वे गुरु साथे ध्याऊँगा ॥ ४ ॥

साधु साध्वी श्रावक श्राविका, धर्म तीर्थ गुण गाऊँगा।
अंतर गांठ खोल हिय की, समता धर्म समझ ऊंगा ॥ ५ ॥

विषय कषाय तोड़ तृष्णा, खरा अमल बरताऊँगा।
मोहराजा है बड़ा मेवाती, उसको पकड़ मंगाऊंगा ॥ ६ ॥

अष्ट कर्म चोर दौड़ा दौड़े, उनको कैद कराऊँगा।
बैठ शीलरथ व्रत सांची, इणविध मुक्ति जाऊंगा ॥ ७ ॥

कायानगर में बसे चिदानन्द, उसकी आण मनाऊँगा।
केवल ज्ञान पाय जासु, सिद्ध गतिमें गर्भवास न आऊँगा ॥८॥

धन धन होसी स्वामी नाथ, ऐसी मोज पाऊँगा।
ऋषि लालचंदजी कर जोड़ विनवे, हर्ष २ गुण गाऊँगा ॥ ९ ॥

आलोयणा

हवे रानी पद्मावती, जीवराशि खमावे।
जाण-पणुं जगने भलुं, पणी वेलाए आवे॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ १॥
अरिहन्तनी साख, जे मे विराधिया।
चौरासी लाख, ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ २॥
सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय।
सात लाख तेउकायना साते वली वाय॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ ३॥
दस लाख प्रत्येक वनस्पति, चौदह साधारण जान।
अरु विकलेन्द्रिय जीवना, बे बे लाख प्रमाण।
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ ४॥
देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी।
चौदह लाख मनुष्यना, ए लाख चौरासी॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ ५॥
इस भवे पर भवे सेविया, जे मैं पाप अढार।
त्रिविध त्रिविधे करी परिहरु दुर्गतिना दातार॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ ६॥
हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद।
दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं॥ ७॥

परिग्रह मेलव्यो कारमो, कीधा क्रोध विशेष ।
मान माया लोभ में, कीधा वली राग ने द्वेष ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ८ ॥

कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कुड़ा कलंक ।
निन्दा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ९ ॥

चाड़ी कीधी पार की, कीधी थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आणो भरोसा ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कड ॥१०॥

खटकी ने भव में किया, जीवना वध घात ।
चिड़ी मार भवे चड़कलां, मारयां दिन रात ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कड ॥ ११ ॥

काजी मुल्लाने भवे, पढिया मन्त्र कठोर ।
जीव अनेक जीब्हे किया, कीधा पाप अघोर ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १२ ॥

मच्छीने भव माछला, मार्या करी जल वास ।
धीवर भील कोली भवे, मृगने पकड्या पास ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १३ ॥

कोतवालना भव मैं किया, दिया आकरां दण्ड ।
बन्धी वान मराविया, कोरड़ा छड़ी दण्ड ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं । १४ ॥

खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्या ।
आरम्भ कीधा अति घणा, पोते पापज संच्या ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २२ ॥

अगार कर्म कीधा वली, वन में दव जो दीधा ।
कलन खाधा वीतरागना, कूडा दोप ज दीधा ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २३ ॥

बिल्ली भवे उंदर गलया, गिरोली हत्यारी ।
मूढ गँवार तणो भवे, मैं जू लीख मारी ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २४ ॥

भडभूँजा तणो भवे, विनास्या एगेन्द्रि जीव ।
जुवार चना गेहूँ सेकिया, पाडंता रीव ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २५ ॥

खांडन पीसन गारना, किना आरम्भ अनेक ।
रांधण ईन्धन अग्निना, कीधां पाप उद्वेग ।
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २६ ॥

विकथा चार कीधी वली, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वयोग पड़ाविया, रूदन विखवाद ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कड ॥ २८ ॥

साधु अने श्रावक तणा, व्रत लेइने भांग्या ।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ॥
ते मुझ मिच्छा मि दुक्कड ॥ २९ ॥

ज्वाला देखी दीपती जी, अग्निशिखा बहुतेज ।
इतने जाग्या पद्मनी जी, धर स्वप्नासु हेज ॥ ११ ॥
गज गति चाल्या मलकता जी, आया राजाजीके स्थान ।
भद्रासण आसण दियो जी, राय दियो सनमान ॥ १२ ॥
कहो रानी जी किम आविया जी, कहो थारा मनरी वात ।
चवदे स्वपना देखिया, जिणरा अर्थ करो स्वामीनाथ ॥१३॥
स्वप्ना सुनी राय हर्षियो जी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर तुमे जनमसीजी, हम कुलनो आधार ॥ १४ ॥
प्रभाते पंडित तेड़िया जी, कीनो स्वप्न विचार ।
तीर्थंकर चक्रवर्ती होसीजी, तीन लोक आधार ॥ १५ ॥
पडित ने बहुधन दियो जी, वस्त्र ने फूल माल ।
गर्भमास पूरण हुआ जब, जनम्या पुण्यवंत बाल ॥ १६ ॥
चौसठ इन्द्र आविया जी, छप्पन दिशाकुमार ।
अशुचि कर्म निवारने फिर, फिर गावे मंगलाचार ॥ १७ ॥
प्रतिबिंब घरमें धरयो जी, माताजीने विश्वास ।
शक्रेन्द्र लिया हाथ में जी, करी पंच रूप प्रकाश ॥ १८ ॥
मेरु शिखर न्हावण किया जी, तेतो बहु विस्तार ।
इन्द्रादिक सुर नाचिया जी, नाची अप्सरा नार ॥ १६ ॥
अट्ठाई महोत्सव सुर कियो जी, द्वीप नन्दीश्वर जाय ।
गुण गावे जिन राज का जी, हियड़े हर्ष उभराय ॥ २० ॥
प्रभाते स्वप्ना भणेजी, भणता ही आनन्द पूर ।
रोग सोग दूरा टले जी, अशुभ कर्म जावे दूर ॥
... जिनेन्द्र माय दीठा स्वप्ना हो सार ॥ २१ ॥

श्रीमन्दिर स्वामी जी का स्तोत्र ॥

महाविदेह में चौथा आरा, जहां विराजो आप ।
भरत क्षेत्र से करूं जो वन्दना, जपसुं थारो जाप ॥
मैं तो दरशन करसां जी, मै तो सेवा करसां जी ।
मेरा सतगुरू जी महाराज, मै तो सेवा करसां जी ॥ १ ॥
दरशन करसां सेवा करसां जिको दिहाड़ो धन ।
क्या तो जाने केवलज्ञानी, क्या जाने म्होरा मन ॥२॥
हौंश घणा दिनारी होती, मुझ हिवड़ा के हेज ।
आवन की मुझ शक्ति होती तो न करती झेज ॥ ३ ॥
स्वामी जीतो म्हारा साहिब, हूँ स्वामीरो दास ।
बस रहा म्हारे हिवड़े भीतर, ज्यूँ फूलां में वास ॥ ४ ॥
स्वामीजी की सूरत मूरत व्हाली लागी मोय ।
निरखंतारा नैण ना छापे, वाणी अमृत जोय ॥ ५ ॥
स्वामीजी तो शोवन वरण, दीपु दीपु करती देह ।
नेणां दीठा लागे मीठा, वाणी अमृत मेह ॥ ६ ॥
अतरजामी रा वारणा लेऊँ, दिहाड़ा में लखवार ।
करूणासागर कृपा कीजो, भवसागर से तार ॥ ७ ॥
स्वामीजी तो म्हारा मन में. व्याप्या सगली देह ।
रोम रोम में बस रया, ज्यां बादल में मेंह ॥ ८ ॥
दूर देशावर म्हारो साहब, मिलयो चावे मन ।
पपईयो पानी को तरसो, त्यों तरसे म्हारो तन ॥ ९ ॥

म्हारो मनड़ो आवे जावे, जहां बैठा जगन्नाथ ।
बाहर भीतर कछु नहीं गिणे, नहीं गिने दिन रात ॥१०॥
प्रभुजी तो मिलया पिछे, रंग में पड़ गियो पास ।
अंतरजामी रे आगल-कहतां, पुरो मन की आश ॥ ११ ॥
म्हारे रे जिनवर सरीखो, नहीं कोई जग में देव ।
जिनवरजी तो सांचा स्वामी, ज्यांरी करसां सेव ॥ १२ ॥
और देव म्हारे दाय न आवे, जीत्या राग ने द्वेष ।
ऋषि रायचन्दजी इम भणे, केवल ज्ञानी एक ॥ १३ ॥
संवत अठारे वरस छत्तीसे रीयां रह्या चार रात ।
श्री मन्दिर जिनवरजी आगल, जोड्ू दोंनो हाथ ॥ १४ ॥
मै तो दरशन करसां जी, मै तो सेवा करसां जी ।
मेरा सतगुरुजी महाराज, मै तो सेवा करसां जी ॥ १५ ॥

लघु साधु-वन्दना ॥

साधु जी ने वन्दना नित नित कीजे प्रातः उगमते सूर रे प्राणी ।
नीच गतिमां ते नहीं जावे पामे, रिद्धि भरपूर रे प्राणी ॥ १ ॥
मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छै कायरा प्रति पाल रे प्राणी ।
भ्रमर भिक्षा मुनि सूझति लेवे दोष बयालीस टाल रे प्राणी ॥२॥
रिद्धि सम्पदा मुनि कारमे जाणी दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी ।
एरे पुरुषारी वंदगी करतां आठे कर्म जाय तूट रे प्राणी ॥ ३ ॥
एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एकेका ज्ञान भंडार रे प्राणी ।
एक एक मुनिवरा वैयावच्च वैरागी एना गुणनो नावे पार रे ॥४.

गुण सत्तावीस करीने दीपे जीत्या परिसह बावीस रे प्राणी ।
बावन तो अनाचीरण टाले तेने नवासुं शिर रे प्राणी ॥५॥
जहाज समान ते संत मुनीश्वर भव्य जीव बसे आय रे प्राणी ।
पर उपकारी मुनि द म न मांगे, देवे ते मुक्ति पोंचाय रे प्राणी ॥६॥
ए चरणे प्राणी साता रे पावे, पावे ने लीला विलास रे प्राणी ।
जन्म ज़रा अने मरण सिटावे नावे करी गर्भावास रे प्राणी ॥७॥
एक वचन ए सत गुरु केरो जो बसे दिल मांय रे प्राणी ।
नर्क गति मां ते नहीं जावे एम कहे जिनराय रे प्राणी ॥८॥
प्रभाते उठीने उत्तम प्राणी सुनों साधों का व्याख्यान रे प्राणी ।
एरे पुरुषारी सेवा करतां पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥ ९ ॥
संवत अठार ने वर्ष अड़तीसे बुमी दे गाम चोमास रे प्राणी ।
मुनि आसकरण जी एणी पेरे जँपे हूं तो उत्तम साधारों का दास रे
साधु जी ने वंदना नित नित कीजो ॥ १० ॥

पार्श्व-स्तोत्र ॥ २५ ॥

भममत्त मंगल अतुल बलधर जास दरसण भज्जए ।
केसरीसिंह अवहि अति है मेहसम वड़ गज्जए ॥
विकराल काल कराल कोपें सिंहनाद विमुक्कए ।
सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेह सिंह न ढुकए ॥ १ ॥
गल लाट करतो मद भरतो कोप धरतो धावए ।
भय रोप रातो अधिक मातो अति उन्नातो आवए ॥
घर हाट फोड़े बन्ध तोड़े मानमोड़े नृप तणु ।
तुम नामे तेण गज अजा थावे वसे आवे अति घणुं ॥२॥

रिण मांही सूरा भीड़े पूरा लोह चूर चूर ए।
गज कुम्भ-रोदे शीप छेदे वहे लोहित पूर ए॥
दल देखी कम्पे दीन जम्पे करय प्रबल पुकार ए।
तुम स्वामी नामे तीने ठामे वरते जय जयकार ए॥ ३॥
भय आठ मोटा दुष्ट खोटा, जेम रोटा चूर ए।
अश्वसेन छोटा तुझ प्रसादे मन मनोरथ पूर ए॥
महिमांहि महिमा वधे दिन २ चन्द ने सूरिज समो।
जस जाप करता ध्यान धरता पार्श्व जिनवर ते नमो॥४॥

॥ पार्श्व–स्तोत्र ॥

जे रोग भयंकर दुष्ट भगन्दर कुष्ट खयन खसखास।
हरिखा अन्तर गलवलीमल ज्वर विषम ज्वर जायै नाश॥
दिसै अति माठा व्रण चांगा नाठा जाए तेह।
तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी चामीकर समदेह॥ १॥
जलनिधि जल गज्ज प्रवहण भज्ज वज्ज वाय कुवाय।
थर हर निहा धुज्ज हरिहर पूजे कीजे बहुल उपाय॥
मन मांही कंपे हे हे जंपे किण ही कंप न थाय।
इस अवसर भावे प्रभु ने ध्यावै पावै ते सुख ठाय॥ २॥
जड़ंक तम डाला पावक जाला काला धूम किल्लोल।
उछलता देखी जाय उवेखी पंखी पड़े दंदोल॥
पखी जन नाशे भरिया सासे त्राले धूजे तेह।
पड़िया तीन ठामे प्रभुने नामे कुशले पामे गेह॥ ३॥

फणि नै आटोपे मणिधर कोपे लोपे जेवली लीह ।
धस मसतो आवे देखी धावे लपकावे दोइ जीह ॥
वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ।
कीधे गुण ज्ञाने प्रभुने ध्याने अहियां इ विसराल ॥ ४ ॥
पापे पग भरता हिंडे फिरना करता अति उनमाद ।
घोटिक जिम छूटे अति आकुटे लूटे निपट निपाद ॥
वन में जे पड़िया चोर ने नड़िया अड़वड़ियां आधार ।
इस अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

विषापहार स्तोत्र ॥ २५ ॥

विश्वनाथ विमल गुण ईश विहरमान वंदुं जिनवीस ।
ब्रह्म विष्णु गणपति सुंदरी वर दीजो मोय वागेश्वरी ॥ १ ॥
सिद्ध साधक सद्गुरू आधार, करूं कवित्त आतम उपकार ।
विषापहार स्तवन आधार, सर्व औषध मांहि अमृत सार ॥२॥
मेरो मंत्र तुम्हारो नाम, तुम हो गिरवा गरूड़ समान ।
तुम सम वैद्य कोन संसार, तुम स्याणा तीन लोक मुझार ३.
तुम विषहरण अहो जगदीश, ॐ नमो नमो अनंत चौवीश ।
तुम गुण महिमा अपरंपार, सुर गुरु ते लहे नहीं पार ॥ ४ ॥
तुम परमातम परमानंद, कल्पवृक्ष शिव सुख के कंद ।
तुम मेरू महिमंडल धीर, विद्यासागर गुण गंभीर ॥ ५ ॥
तुम दधि मथन महाबल वीर संकट विकट भय भंजन धीर ।
तुम जगतारण तुम जगदीश, वंश उधारण विश्याविश ॥ ६ ॥

रत्न चिंतामणि तुम गुण रास, चित्रावेली चितहरण विलास।
उपसर्ग हरण तुम नाम अमोल, जंत्रमंत्र नहीं तुम तोल ॥७॥
जैसे वज्र पर्वत प्रहार, तुम नामे मंत्र विषापहार।
नाग दमन तुम नाम सहाय, विष हरे विपदमें छिन मांय ॥८॥
तुम स्मरण चिंते मन मांय, विष प्याला अमृत हो जाय।
नाम सुधारस वर्षे जिहां पाप पंक मल नवि रहे तिहां ॥९॥
जिस पार्श्व को परसे लोह, नीज गुण तज कंचन सम होय।
तुम स्मरण करे कोई भूंच नीच पदवी तज पावे ऊँच ॥१०॥
तुम नामे औषधि अनुकूल, शाहा मन्त्र सजीवन मूल।
मूर्ख मर्म न जाने भेद, कर्म कलंक दहे तुम देह ॥ ११ ॥
तुम नामे गारूड़ी गह गहे, कालभुंगम कैसे रहे।
तुम धनंतर सम जिनराय मरण न पावे तिण कोई ठाय ॥१२॥
तुम सूरज उदियो घट जास, सांसो सीत न व्यापे तास।
जीवन दादुर वर्षत तोय, सुनत वैन सजीवन होय ॥ १३ ॥
तुम विन कौन करे मुझ सार, तुम विन कौन उतारे पार।
दयावन्त तुम दीनदयाल, करता हरता के रखवाल ॥ १४ ॥
शरणे आयो श्री जिवराज, अब मुझ काज सुधारो आज।
मेरे पूंजी एक धनपूत, शाहा कहे घर राखो सूत ॥ १५ ॥
मैं करूँ विनती बारम्बार, तुम विन कौन करे मुझ सार।
तुम्ही पैगम्बर तुम ही पर, तुम विन कौन काटे पर पीर १६
विग्रह ग्रह विपत संयोग, भगंदर और जलन्दर रोग।
चरण-कमल रजह्न के तन लाय, कुष्ट व्याधि दुर्गंध मिट जाय,

मै अनाथ तूं त्रिभुवन नाथ, मात-पित सज्जन संघात।
तुम समदाता कोई न जग जान, और कहां याचुं भगवान् १८
प्रभु पतित उद्धारण आप, बांह ग्रहे की लाज निभाय।
जहां देखुं तहां तुम ही आय, घट घट ज्योति रही ठहराय १६
वाट घाट विषम भय जिहां, तुम बिन कौन सहाई तिहां।
विषम व्याधि व्यन्तर जलवाय, नाम लेता छिन में विरलाय।
आचारज मानतुंग अवसान, संकट व समरयो नामनिधान।
भक्तामर तुम भक्ति सहाय, प्राण राख्यो प्रगटया तीन ठाय २१।
चुगल एक पुनः विग्रह भयो बांधी राजा नृप देखन गयो।
एकल भाव कियो सह देह, कुष्ट गयो कंचन भई देह ॥२२॥
कल्याण मंदिर कुमुदचन्द्र कियो, राजा विक्रम विशमय भयो।
सेवक जानी तुम कीनो सहाय, पार्श्वनाथ प्रगटया तीन ठाय ॥
भस्म व्याधि समंतभद्र भई, स्वयंभू स्तोत्र जिन स्तुति कई।
गई व्याधि विमल मति भई, तिहां पण कृपा तुम्हारी थई ॥२४॥
भविस्मदत्त श्रीपाल नरेश, सायर जल संकट सुविशेष।
तिहां पण तुमही भय सहाय, आनंद से घर पहुँच आया २५
सभा दुशासन प्रखडयो चीर, द्रोपदी सत राख्यो कर भीर
सीता लक्ष्मण दोनों साथ, रावण जीत विभीषण राज ॥ २६ ॥
सेठ सुदर्शन को साज दियो, शूली को सिंहासन कियो।
आषाढ़भूति तुम धरियो ध्यान, नाटक नाचते केवलज्ञान २७.
सिंह सर्पादि जीव अनेक, जिन समरो तिहां राखी टेक।
ऐसी करनी जिनकी लाख, शाह कहे शरणागते राख ॥२८॥

इस अवसर जो जीमेवाज़, मेरा संदेह मिटे तत्काल ।
वैरी छोड़ विरुद्ध महाराज, अपनो विरद निवाहो राज २६.
और अवलम्बन मेरे नाहीं, मै निश्चय धारयो मन मांहि ।
चरण कमल छोड़ूं नहीं सेव, मेरे हो तुम सच्चे गुरु देव ॥३०॥
तुम ही सूरज तुम ही चद्र, मिथ्या मोह निकंदन कंद ।
धर्म चक्र तुम धारण धीरि, विग्रह चक्र विदारण वीर॥ ३१॥
चोर अगन जल भूत पिशाच, दुत जंगल अटवी अधवीच ।
वैरी दुश्मन राजा वश होय, तुम प्रसाद गंजे नहीं कोय ३२.
हय गय युद्ध सबल सहांवंत, सिंह शार्दूलो महाभयवंत ।
ऊंट वदन विग्रह विकराल, तुम समरया छूटे तत्काल ॥३३॥
पायनर्सी प्रणमूं मै आज, वक्षो सुख सम्पत्ति महाराज ।
तुम कृपा से धरे सुर ताज, नाम तुम्हारो गरीवनवाज ॥३४॥
पानी ही सब पैदासी करे, खाली अड़ान पूरण भरे ।
नहीं करता हरता तुम कृपाल, कीड़ी कुंजर सम निहाल ॥३५॥
गुण अनंत अल्प मोय ज्ञान, कहां लग प्रभु जी का करूं बखान ।
अगम पथ सूजे नहीं मोय, तेरा चरित वरणी नहीं आवे कोय३६
मन से प्रसन्न आप कियो, दयावत तुम आप दर्शन दियो ।
शाह को पूत सचेतन भयो, हँसतो हँसतो निज घर गयो ३७.
धन दर्शन देख्यो भगवंत, आज उगा सुख नैन पधन ।
प्रभुजी के चरण हूं नमयो, जन्म कृतारथ मेरो भयो ॥ ३८ ॥
पद पंकज नमाऊ शीश, मुझ अपराध क्षमो जगदीश ।
सत्तरे से पन्द्र शुभ स्थान, नारनोल शुद्ध चवदश जान ३९.

पढ़ें सुने जो परमानंद, कल्प वृक्ष शिव सुखके कन्द ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि लहे, अचल कीर्त्ति आचारज कहे ॥४०॥
दोहा—भय भंजन पूजन जगत, विषापहार जस नाम ।
संशय तज समरूं सदा, शान्ति जिनेश्वर नाम ॥ ४१ ॥

विधि—इस विषापहार स्तोत्र को १, ३, ७, ११, २१, ६५ वार (पूर्व या उत्तर दिशा सन्मुख बैठ कर) पढ़ने या सुनने से ज्वरादि विषम विष भी दूर हो सकता है ॥

चित्त समाधि स्तोत्र ॥ २५ ॥

चित्त समाधि हुवे दस बोला,
इम भाख्यो भगवान रे प्राणी ।
लील विलास सदा रहे चित्त में,
आनन्द में दिन जाय रे प्राणी ॥ १ ॥
अपूर्व पुण्य जीव जिन धर्म पायो,
उनके कमी न रहे काय रे प्राणी ।
कल्पवृक्ष जिनकी आशा पूरे,
मनवांछित फल पाय रे प्राणी ॥ २ ॥
दूजे बोले जाति स्मरण,
पामे पुण्य तणे प्रसाद रे प्राणी ।
पूर्व का भव देख भली परे,
समझे चतुर सुजान रे प्राणी ॥ ३ ॥

उत्कृष्ट नवशे भव लगता,
जाने सन्नी पंचेन्द्रिय ठीक रे प्राणी।
अपनो परायो आइखो जाने,
मति ज्ञान मंगलिक रे प्राणी ॥ ४ ॥
मृगापुत्रजी महला मे पाम्या,
वली मेघकुमार रे प्राणी।
मल्लीनाथ जी का छउ मित्र,
पाम्या समकित सार रे प्राणी ॥ ५ ॥
क्षत्रिय नाम का ऋषिश्वर,
वली सुदर्शन सेठ रे प्राणी।
नमिरायजी संयम लीनो,
तीनों ही पहुच्यां ठेठ रे प्राणी ॥ ६ ॥
भग्गु पुरोहित के दोनों बेटे,
वली तेतली प्रधान रे प्राणी।
जाति स्मरण अति सुख पाया,
पाम्या मोक्ष निधान रे प्राणी ॥ ७ ॥
तीजे बोले यथारथ स्वप्ना देख्या,
जीव अति हर्षाय रे प्राणी।
रिद्ध सिद्ध तो प्रबल पामे,
तिणरा अर्थ अनेक रे प्राणी ॥ ८ ॥
उस भव मांही मुगति सिधाया,
यो सुपनो श्रीकार रे प्राणी।

अरिहंत देव जी की माता देखे,
जिनका भगवती मे विस्तार रे प्राणी ९.
चौथे बोले देव जी को दर्शन,
दीठा ठरे निज नैन रे प्राणी ।
जगमग जगमग जोतज दीपे,
समदृष्टि प वेण रे प्राणी ॥ १० ॥
सोमल ब्राह्मण को समझाया,
देव समदृष्ट आय रे प्राणी ।
अरिहंत देव सु कर दियो भेटो,
भलियो निर्यावलिका माय रे प्राणी ११.
सकडाल कुमार कने आई;
देव ऊभा प्रत्यक्ष रे प्राणी ।
अरिहंत देव को कर दिया भेटा,
काट दियो मिथ्यात्व रे प्राणी ॥ १२ ॥
पांचमे बोले अवधज ज्ञानी,
जिनका नंदीसूत्र विस्तार रे प्राणी ।
आनन्द जी ने महाशतक जी,
वलि केशी श्रमण कुमार रे प्राणी ॥१३॥
अरिहंत देव जी दूनियां में आया,
माता जी का गर्भ मंझार रे प्राणी ।
पेट पडिया दूनियां देखे,
पूरा पुण्य संच्या जगन्नाथ रे प्राणी १४.

सरवार्थ सिद्धा देवता देखे,
वैठा थका लोकपाल रे प्राणी ।
अरिहंत देव जी प्रश्न पूछया,
उत्तर देवे दीन दयाल रे प्राणी ॥ १५ ॥
छटे बोले अवधिज्ञ दर्शन,
जिसका नंदी सूत्र विस्तार रे प्राणी ।
सातवें बोले सुनोए सुज्ञानी,
मन पर्य्यव विस्तार रे प्राणी ॥ १६ ॥
मन पर्य्यव मुनिराय के होवे,
लब्धिवत अणगार रे प्राणी ।
जिस पुरुष को सूत्र गुंथवा,
उत्तर देवे दीन दयाल रे प्राणी ॥ १७ ॥
दोय समुद्र द्वीप अढ़ाई,
जामें सज्ञी पंचेन्द्री होय रे प्राणी ।
जा जीवरी मन की वाता,
छानी न रहवे कोय रे प्राणी ॥ १८ ॥
आठवें बोले केवल ज्ञानी,
नवमें केवल दर्शन होय रे प्राणी ।
चवदे ही राज देखे भली परे,
कहता न पावे पार रे प्राणी ॥ १६ ॥
जवन्य तीर्थंकर वीस विराजे,
उत्कृष्टा एक सौ सित्तर रे प्राणी ।

गणधरजी ने केवल ज्ञानी,
हुआ छे पाटो पाट रे प्राणी ॥ २० ॥
लोक मांहे उद्योतज कीनो,
केवली प्रभु चौवीस रे प्राणी।
तीरथ थापी ने करमां ने कापी,
जगतारण जगदीश रे प्राणी ॥ २१ ॥
दशवें बोले केवल मरना,
पाम्या पहुँचे निर्वाण रे प्राणी।
यह दस बोल हुए सम्पूर्ण
वीर वचन परिमाण रे प्राणी ॥ २२ ॥
नेवु जणा रो नांमज चाल्यो,
अंतगड़ सूत्र के मांय रे प्राणी।
कर्म हणी ने केवल पाया,
हुआ सिद्ध भगवन्त रे प्राणी ॥ २३ ॥
दशाश्रुत स्कन्ध मे चालिया,
वली समवायांग की साख रे प्राणी।
इस अनुसार करणी करने,
रिखरायचन्द इम भाख रे प्राणी ॥२४॥
संवत अठार ने वरस तेतीस,
मेड़ते नगर चौमास रे प्राणी।
पूज्य जेमलजी प्रसादे,
कीनो ज्ञान अभ्यास रे प्राणी ॥ २५ ॥

मोक्ष स्थान वर्णन स्तोत्र ॥ २५ ॥

शिवपुर नगर सुहामणो—

गौतमस्वामी पूछा करी, विनय करी शीश नमाय प्रभुजी।
अविचल स्थान मैं सुणयो, कृपाकर मोय बताय प्रभुजी ॥ १ ॥

आठ करम अलगा करया, सारया आतम काज।
संसार ना दुःख थकी, रह्या छे ते सुण ठाम प्रभुजी ॥ २ ॥

वीर कहे उर्ध्व लोक में, मुक्ति शिला तिण ठाम हो गौतम।
स्वर्ग छाईं से ऊपरे, तिणरा छे बारा नाम हो गौतम ॥ ३ ॥

लाख पैंतालीस हो जोजन, लाम्बी ने पहुली जाण हो गौतम।
आठ जोजन जाड़ी बीच में, छेहड़े पतली अधिक बखान ॥४॥

उज्जल हार मोत्या तणा, गौ दूध शंख बखाण हो गौतम।
तिणसु अधिकी उजली, समाछत्र ने संठाण हो गौतम ॥ ५ ॥

अर्जुन सोना में दीपती घटारी, मठारी जाण हो गौतम।
स्फटिक यिचाले निर्मली, सुहाली अधिक बखान हो गौतम ६

शिला उल्लंघन ऊँचा गया, अधर रह्या विराज हो गौतम।
अलोक सु जाई अड्या, सारया है आतम काज हो गौतम ७

जठे जन्म नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा रोग हो गौतम।
वैरी नहीं मित्र नहीं, नहीं संयोग वियोग हो गौतम ॥ ८ ॥

भूख नहीं तृष्णा नहीं, नहीं हर्ष नहीं शोक हो गौतम।
कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषय रस भोग हो गौतम ॥ ९ ॥

शब्द रूप रस गन्ध नहीं, नहीं स्पर्श नहीं वेद हो गौतम।
बोले नहीं चाले नहीं, भूख न कोई खेद हो गौतम ॥ १० ॥
ग्राम नगर एकू नहीं, नही वस्ती नहीं उजाड हो गौतम।
काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिन तिथिवार हो गौतम ११
राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गौतम।
मुगति में गुरू चेला नहीं, नहीं लोक बड़ाई नाप हो गौतम १२.
अनंत सुखों मे झूल रहा, अरूपी ज्योती प्रकाश हो गौतम।
सघलारा सुख शाश्वता, सघला अविचल वास हो गौतम १३.
अनंत सिद्ध मुगति गया, चले अनंता जासो हो गौतम।
आगे जायगा रुकी नहीं, ज्योत में ज्योत समासी हो गौतम १४.
केवल ज्ञान करी सहित छे केवल दर्शन पास हो गौतम।
क्षायक समकित दीपता, कदेय न रहे उदास हो गौतम ॥१५॥
सिद्ध स्वरूप कोई ओलखे, आणे मन वैराग्य हो गौतम।
शिवरमणि वेगी वेर, पावे सुख अगाध हो गौतम ॥ १६ ॥

त्रेसठ सलाका पुरुषों का स्तोत्र ॥ २५ ॥

इस भारत में चौविश जिनवर, चक्रवर्त्त द्वादश भए।
नव राय केशव बल रिपु नव, मारते हरि यश लिए ॥
त्रेसठ पुरोत्तम लोक उत्तम प्रगट, श्री जिनवर हुए।
जिस भांत अनुक्रम मे हुवा जिह के सुणायां जीव शुद्ध लए ॥१॥
श्री ऋषभदेव जिनन्द प्रथमो भरत चक्रि शिव भए।
श्री अजित जिनन्द शासन सागर चक्रि ऋपि भए ॥

संभव प्रभु अभिनंदनोत्तम सुमति पद्म प्रभु नमो ।
जिनवर सुपार्श्व चंद्रा प्रभु जी सुबुद्धि शीतल पगरमो ॥ २ ॥
यह अष्ट जिनवारे न चक्रि राम केशव नहीं भए ।
जिन भक्ति भूपति मंडलीका सेव श्री जिन सुखलए ॥
श्रेयांश देव त्रिपिष्ट केशव अचलराम विराजियो ।
हयग्रीव रिपुहरण करम हारण हरष सो हरि राजियो ॥ ३ ॥
श्री वासुपूज्य जिनन्द प्रगटे, हरि दिपृष्ट विजेवलो ।
हरि शत्रु तारक अति वलोते मार हरि राजत भलो ॥
श्री विमलनाथ जिनन्द सोभत हरि सयंभुतव भरायो ।
बलभद्र सुनाम सुंदर, शत्रु मेरक हरि हणायो ॥ ४ ॥
देवाधिदेव अनन्त तव पुरुषोत्तम हरियश धरी ।
तिस भ्राता सो प्रवल धरो मधु केटभ भंजो हरि ॥
श्री धर्मनाथ जिनन्द केशव पुरूषसिंह वरवाणियो ।
हलधर सुदर्शन रिपु निशुभ हरिहरण इम जाणियो ॥ ५ ॥
पीछे तो श्री मधव चक्री आयु पण लक्ष वर्ष सही ।
सुख भोग तज ऋषि हो शिवलह जग महिमा सरसही ॥
कुछ काल बीते भये चक्री नाम सनतकुमार जी ।
अणगार पदवी पाय केवल सिद्ध कर्म निवार जी ॥ ६ ॥
यह दोनों चक्रपति जिनान्तर मांहि होय हैं सही ।
श्री शान्ति कुंथु जिनन्द अरजिन चक्रवर्त्ती जिन वही ॥
वरी शत्रु कुमार त्रिखंड स्वामी पुंडरीकाक्षीये ।
बलदेव नाम अनंत ऋषि होय शिव नप इम भाखिए ॥ ७ ॥

तीहते भये संभूम चक्री जलधी मर नरके गयो।
प्रह्लाद रिपुहरण दत्त केशव नन्दनो हल धर थयो॥
श्री मल्लीनाथ उन्नीसमों जिन कर्म क्षय करी शिव रमें।
मुनिसुव्रतोत्तम देव के पग महापद्मो ते नमें ॥ ८॥
जिन अन्तरे हरि शत्रु रावण मार लक्ष्मण यश लयो।
श्री रामचन्द्र सुभ्राननामी पद्मनाम तथा कयो॥
नमिनाथ जिन हरिसेन चक्रिपाल संयम शिव ग्रही।
जिन अन्तरे जय चक्रवरति मुनि पंचमी गति लही॥ ६॥
हरिवंश देव अरिष्टनेमि कृष्ण केशव सोभतो।
रिपु जरासंध पछाड़ श्री बलभद्र पुन धर्मरतो॥
जिन अतरे चक्रवर्त्ती ब्रह्मदत्त सुबारमो।
जिन देव पार्श्वनाथ स्वामी वर्द्धमान सदा नमो॥ १०॥
यह चक्रपति बलदेव केशव प्रति हरि पदवी वरं।
जिस देव के पद पूजते सेवा करें कर शिर धरं॥
जे सिहत सम्यक्त्व ज्ञान संयुक्त ध्यावनो जिन सेवको।
करजोड़ हरजस करत विनती श्री देवाधिदेव को॥११॥

मेरी भावना

(१)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥

(२)

विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।
निजपर के हित-साधनमें जो, निशदिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ त्यागकी कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं॥

(३)

रहे सदा सत्संग उन्हींका, ध्यान उन्हींका नित्य रहे।
उन्ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊं किसी जीवको, झूंठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर धन-वनिता पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूँ॥

(४)

अहंकारका भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षा-भाव धरूँ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥

(५)

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणास्रोत बहे॥
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे।
साम्य भाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥

(६)

गुणी जनों को देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँतक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥

(७)

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जाये।
लाखों वर्षो तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोइ कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥

(८)

होकर सुखमें मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत-नदी-स्मशान-भयानक, अटवीसे नहीं भय खावे॥
रहे अडोल-अकंप निरंतर, यह मन, दृढतर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे॥

(९)

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर-पाप-अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे॥
घरघर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे॥

(१०)

ईति-भीति व्यापे नहीं जगमें, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजाका किया करे॥
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे॥

(११)

फैले प्रेम परस्पर जगमें, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुखसे कहा करे॥
बनकर सब 'युग-वीर' हृदयसे, देशोन्नतिरत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करे॥

१६-सतियों के स्तवन (१)

शीतल जिनवर करूं प्रणाम, सोले सतियां का लेखुं नाम।
ब्राह्मी चन्दन राजमती द्रोपदी कौशल्या मृगावती॥ १॥
सुलसा सीता सुभद्रा जाण, शिवा कुन्ती शील गुणखाण।
दमयंती सती सती चेलना प्रभावती ने पद्मावती २

शियल गुणे सुहावे श्री ऋषभ देवनी धीया सुन्दरी।
सोले सतियां शील गुण भरी भवियण प्रणमो भावे करी ॥३॥
ए समरियां सब संकट टले मन चिन्ता मनोरथ फले।
इण नामे सब सीजे काम लइये मुक्ति पुरीनो राज ॥४॥
भूत प्रेत इण नामे टले ऋद्धि सिद्धि घर आई मिले।
इण नामे सहु होय जगीशए सतियां सिमरूं निशदिन ॥५॥

१६ सतियों के स्तोत्र (२)

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी सफल मनोरथ कीजिए।
प्रभाते उठी मंगलिक कामे सोले सतियों का नाम लीजिए १
बाल कुमारी जगहितकारी ब्राह्मी भरतनी बेनडी ए।
घट घट व्यापक अक्षर रूपे सोलै सतियों में जे वडी ए ॥ २ ॥
बाहुबल भगिनी सती य शिरोमणि सुन्दरी नामे ऋषभसुता ए
अक स्वरूपी त्रिभुवन मांहे जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥
चन्दन बाला बालपनेथी शीयलवती शुद्ध श्राविका ए।
उड़दना व्याकुला वीर प्रतिलाभ्या केवल लहि व्रत भाविका ए ४
उग्रसेन पुत्री धारिणी नन्दिनी राजीमती नेमवल्लभा ए।
जोवन वेशे काम ने जीत्यो संयम लइ देवे दुल्लभा ए ॥ ५ ॥
पंच भरतारी पांडव नारी द्रुपद तनया वखाणी ए ।
एक सौ आठों चीर पुराणा शीयल महिमा तस जाणिए ॥६॥
दशरथ नृपनी नारी निरूपम कौशल्या कुलचन्द्रिका ए।
शीयल सलोनी राम जनेता पुण्य तणी प्रणालीका ए ॥ ७ ॥

कौशम्बी ठामे शतानीक नामे राज्य करे रंग राजियो ए।
तस घर घरणी मृगावती सती सुर भूवने जश गाजियो ए ॥८॥
सुलसा सांची शीयल न कांची राची नहीं विषया रसे ए।
मुखडुं जोतां पाप पलाए नाम लेतां मन उल्लसे ए॥ ॥ ६॥
राम रघुवंशी तेहनी कामिनी जनक सुता सीता सती ए।
जग सहु जाणी धीज करंता अनल शीतल थयो शीयलथी ए
सुरनर वंदित शीयल अखंडित शिवा शिव पद गामनी ए।
जेहने नामे निर्मल थइए बलिहारी तस नामनी ए॥ ११॥
काचे तांतणे चालणी बांधी कुआ थकी जल काढ़ी ए।
कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा चम्पा बार उघाडीयुं ए॥१२॥
हस्तिनापुरे पाण्डु रायनी कुंता नामे कामनीए।
पाण्डव माता दसे दशारनी बहन पतिव्रता पद्मिनी ए॥१३॥
शीलवती नामे शीलव्रत धारिणी त्रिविधे तेहने वंदिय ए।
नाम जपता पातक जाय दर्शने दुरित निकन्दी ए॥ १४॥
निषिधानगरी नल नरेन्द्रनी दमयन्ती तस गेहनी ए।
संकट पडता शीयल जराख्यु त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए॥१५॥
अनंग अजीता जगजन पूजिता पुष्फचुला ने प्रभावती ए।
विश्वविख्यात कामित दाता सोलमी सती पद्मावती ए॥१६॥
वीरे भाखी शास्त्र साखी उदयरत्न भाखे मुदा ए।
पो उगंता जे नर भणशे ते लेशे सुख संपदा ए॥ १७॥

चौवीस तीर्थंकरों के स्तोत्र ॥

श्री ऋषभ अजित संभव स्वामी अभिनंदन जी अंतरयामी ।
राग द्वेष दो क्षय करना वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ १ ॥
सुमति जी ने सुणाम्भो प्रभु मुक्ति गया मेटया गर्भवासो ।
दूर किया जन्म मरना वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ २ ॥
शीतल श्रेयांस जिन दोई प्रभु चौदे राज रह्या जोई ।
विमल समत निर्मल वरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ३ ॥
अनंतनाथजी अनंत ज्ञानी, जासु मनरी वातों नहीं छानी ।
धर्मजी को ध्यान हृदे धरवा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ४
शांतिनाथजी शाताकारी कुंथुनाजी री जाऊं बलिहारी ।
अरनाथ-आत्म उद्धरना वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ५ ॥
महिमा घणी हो मल्लिनाथ तणी महावीरजी हुआ शासनना धनी
मैं झालया जिण चरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ६ ॥
प्रभु रो शरीर संपदा सुंदर सोहे निरखता नयन तुरत मोहे ।
चतरता तो चित्त हरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ७ ॥
प्रभुजी नी दीपदीप रही देही जेन को सुरनर निरख रह्या कोई ।
आंख्या तो हो अमी झरना वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ८ ॥
प्रभु जी के मस्तक से पगनख तांई जिन रो शरीर बखाणो सूत्र में
चारों ही संग लेवे शरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ ९ ॥
तीन लोक से रूप प्रभु जी पायो वीजा माता ने बेटो ऐसो नहीं जायो
चौसठ इन्द्र भेटे चरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा ॥ १० ॥
एक समुच्च अर्ज सुन जोसो ऋषि रायचंद्रजी आयो आदरे ओले
मेरी आवागमन दुःख दूर करसां वंदु सोले जिन सोवन वरणा ११
संवत् अठार सं तीसे वर्षे किये नागौर चौमासो भावसर से जारे
भजन किया भवसागर तरणा वंदु सोले जिन सोवन वरणा १२

श्री तीर्थंकर का स्तवन.

प्रह उठी प्रभाते वंदु, पद्म प्रभुजीना पाय रे प्राणी।
वासुपुज्यजी मारा मनमां वसिया, मारे कमी न रही कांय रे ॥
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥ १ ॥

ए दोए जिनवर अवल वीराजे, हिंगुल वरणां लाल रे प्राणी।
तीर्थ थापीने कर्मने कापी, प्रभु पाप कीया प्रेमाल रे प्राणी ॥
उपजे आनन्द आठे जिन जपतां ॥ २ ॥

शुभ भावना ए मन मेरे भावे, तो आठ कर्म जाये तुट रे प्राणी।
सुख संपदाने लील विलासो, भर्या भंडार अखुट रे प्राणी ॥
उपजे आनद आठे जिन जपतां ॥ ३ ॥

चंद्र प्रभुजीने सुविधि जिनेश्वर, ए दोये वर्ण सफेद रे प्राणी।
मोतीयां सरीखी जारी देहीज दीपे, मुज देखतां अधिक उमेद.
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥ ४ ॥

मुनिसुव्रतजी नेम जिणेश्वर, ए दोय शाम वर्ण शरीर रे प्राणी
इंद्रथकी पण अधिका दीपे, दीठे हरखे हैडानो हीर रे प्राणी ॥
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥ ५ ॥

मल्लीनाथ ने पार्श्वप्रभुजी, जाणे नीला ते मोरनी पांख रे प्राणी
नीरखता तो नयन धापे, अमीय ठरे दोय आंख रे प्राणी ॥
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥ ६ ॥

रुप अनोपम अवल वीराजे, जाणे हीरा जडीया हेम रे प्राणी
सरजथी जेम सवाया दीपे केणीमां आवे केम रे प्राणी ॥
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥ ७ ॥

शीवनगरी मांही बेठा, हुं नवी जाणुं दूर रे प्रा
मुज मनडामां वसीया वालेसर, हुं समरुं उगमते सूर
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥
ए आठे अरिहन्तने आगे, हुं तो करूं कर जोड रे प्रा
ऋषी रायचन्दजी कहे मारा मनना, पुरो सघला कोड़
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥
संवत अढारने वर्ष छत्रीशे, नागोर शहेर चोमासरे प्र
प्रसाद पूज्य जेमलजी केरे, मारे हैडे तो हर्ष उल्लास रे
उपजे आनंद आठे जिन जपतां ॥

॥ २४ तीर्थंकरों के नाम ॥

१ श्री ऋषभदेवजी,
२ ,, अजितनाथजी'
३ ,, संभवनाथजी,
४ ,, अभिनंदनजी,
५ ,, सुमतिनाथजी,
६ ,, पद्मप्रभुजी,
७ ,, सुपार्श्वनाथजी.
८ ,, चंद्रप्रभुजी,
९ ,, सुविधिनाथजी,
१० ,, शीतलनाथजी,
११ ,, श्रेयांसनाथजी,
१३ ,, विमलनाथजी,
१४ ,, अनंतनाथजी,
१५ ,, धर्मनाथजी,
१६ ,, शान्तिनाथजी,
१७ ,, कुन्थुनाथजी,
१८ ,, अरहनाथजी,
१९ ,, मल्लिनाथजी,
२० ,, मुनिसुव्रतजी
२१ ,, नमिनाथजी
२२ ,, अरिष्टनेमिजी
२२ ,, पार्श्वनाथजी

॥ २० श्री विहरमानों के नाम ॥

१ श्री सीमंधर स्वामी
२ ,, युगमंदिर स्वामी
३ ,, बाहुजी स्वामी
४ ,, सुबाहुजी स्वामी
५ ,, सुजात ,,
६ ,, स्वयंप्रभु ,,
७ ,, ऋषभानंदन ,,
८ ,, अनंतवीर ,,
९ ,, सुरप्रभु ,,
१० ,, विशालधर ,,
११ श्री वज्रधर स्वामी
१२ ,, चन्द्रानन स्वामी
१३ ,, चन्द्रबाहु स्वामी
१४ ,, भुजंग ,,
१५ ,, ईश्वर ,,
१६ ,, वीरसेन ,,
१७ ,, नेमप्रभु ,,
१८ ,, महाभद्र ,,
१९ ,, देवयश ,,
२० ,, अजितवीर्य ,,

॥ ११ गणधरों के नाम ॥

१ श्री इन्द्रभूतिजी
२ ,, अग्निभूतिजी
३ ,, वायुभूतिजी
४ ,, विगतभूतिजी
५ ,, सुधर्माभूतिजी
६ ,, मंडितपुत्रजी
७ श्री मौर्यपुत्रजी
८ ,, अकंपितजी
९ ,, अचलभूतिजी
१० ,, मेतार्यजी
११ ,, प्रभासजी

॥ ९ बलदेवों के नाम ॥

१ अचलजी
२ विजयजी
३ भद्रजी
४ सुप्रभजी
५ सुदर्शनजी
६ आनन्दजी
७ नन्दनजी
८ पद्मरथजी (राम)
९ बलभद्रजी

॥ ९ वासुदेवों के नाम ॥

१ त्रिपृष्ठ
२ द्विपृष्ठ
३ स्वयंभू
४ पुरुषोत्तम
५ पुरुषसिंह
६ पुरुषपुण्डरीक
७ दत्त
८ लक्ष्मण
९ कृष्ण

॥ ९ प्रतिवासुदेवों के नाम ॥

१ सुग्रीव
२ तारक
३ मेरक
४ मधुकीट
५ नसुम्भ
६ बल
७ प्रल्हाद
८ रावण
९ जरासिंध

॥ १६ सतियों के नाम ॥

१ श्री ब्राह्मीजी
२ ,, सुंदरीजी
३ ,, कौशल्याजी
४ ,, सीताजी
५ ,, राजमतीजी
६ ,, कुंतीजी
७ ,, द्रौपदीजी
८ ,, चन्दनाजी
९ श्री मृगावतीजी
१० ,, चेलनाजी
११ ,, प्रभावतीजी
१२ ,, सुभद्राजी
१३ ,, दमयंतीजी
१४ ,, सुलसाजी
१५ ,, शिवाजी
१६ ,, पद्मावतीजी

॥ १२ चक्रवर्तियों के नाम ॥

१ भरतजी	७ अरनाथजी
२ सागरजी	८ सम्भूमजी
३ माधवजी	९ महापद्मजी
४ सनत्कुमारजी	१० हरिसेणजी
५ शांतिनाथजी	११ जयसेनजी
६ कुन्थुनाथजी	१२ ब्रह्मदत्तजी

॥ आनुपूर्वी पढने की विधि ॥

जहां १ है वहां णमो अरिहंताणं बोलना चाहिए।
जहां २ है वहां णमो सिद्धाणं बोलना चाहिए।
जहां ३ है वहां णमो आयरियाणं बोलना चाहिए।
जहां ४ है वहां णमो उवज्झायाणं बोलना चाहिए।
जहां ५ है वहां णमो लोए सव्वसाहूणं बोलना चाहिए।

॥ आनुपूर्वी पढने का फल ॥

आनुपूर्वी गणज्यो जोय, छःमासी तपनो फल होय ।
संदेह मत आणो लगार, निर्मल मन जपो नवकार॥१॥
शुद्ध मन धरी विवेक से, जो प्राणी इसको भणे ।
सत्य भाख्या जिनेश्वर ने, पांच सौ सागरना पाप हणे ॥२॥
अशुभकर्म के हरण को, मन्त्र बड़ो नवकार ।
वाणी द्वादश अंग में, देख लियो तत्व सार ॥३॥

१	२	३	४	५	१	२	४	३	५
२	१	३	४	५	२	१	४	३	५
१	३	२	४	५	१	४	२	३	५
३	१	२	४	५	४	१	२	३	५
२	३	१	४	५	२	४	१	३	५
३	२	१	४	५	४	२	१	३	५
१	३	४	२	५	२	३	४	१	५
३	१	४	२	५	३	२	४	१	५
१	४	३	२	५	२	४	३	१	५
४	१	३	२	५	४	२	३	१	५
३	३	१	२	५	३	४	२	१	५
४	४	१	२	५	४	३	२	१	५

१	२	३	५	४	१	३	५	२	४
२	१	३	५	४	३	१	५	२	४
१	३	२	५	४	१	५	३	२	४
३	१	२	५	४	५	१	३	२	४
२	३	१	५	४	३	५	१	२	४
३	२	१	५	४	५	३	१	२	४
१	२	५	३	४	२	३	५	१	४
२	१	५	३	४	३	२	५	१	४
१	५	२	३	४	२	५	३	१	४
५	१	२	३	४	५	२	३	१	४
२	५	१	३	४	३	५	२	१	४
५	२	१	३	४	५	३	२	१	४

१	२	४	५	३	१	२	५	४	३
२	१	४	५	३	२	१	५	४	३
१	४	२	५	३	१	५	२	४	३
४	१	२	५	३	५	१	२	४	३
२	४	१	५	३	२	५	१	४	३
४	२	१	५	३	५	२	१	४	३
१	४	५	२	३	२	४	५	१	३
४	१	५	२	३	४	२	५	१	३
१	५	४	२	३	२	५	४	१	३
५	१	४	२	३	५	२	४	१	३
४	५	१	२	३	४	५	२	१	३
५	४	१	२	३	५	४	२	१	३

१	३	४	५	२	१	३	५	४	२
३	१	४	५	२	३	१	५	४	२
१	४	३	५	२	१	५	३	४	२
४	१	३	५	२	५	१	३	४	२
३	४	१	५	२	३	५	१	४	२
४	३	१	५	२	५	३	१	४	२
१	४	५	३	२	३	४	५	१	२
४	१	५	३	२	४	३	५	१	२
१	५	४	३	२	३	५	४	१	२
५	१	४	३	२	५	३	४	१	२
४	५	१	३	२	४	५	३	१	२
५	४	१	३	२	५	४	३	१	२

२	३	४	५	१	२	३	५	४	१
३	२	४	५	१	३	२	५	४	१
२	४	३	५	१	२	५	३	४	१
४	२	३	५	१	५	२	३	४	१
३	४	२	५	१	३	५	२	४	१
४	३	२	५	१	५	३	२	४	१
२	४	५	३	१	३	४	५	२	१
४	२	५	३	१	४	३	५	२	१
२	५	४	३	१	३	५	४	२	१
५	२	४	३	१	५	३	४	२	१
४	५	२	३	१	४	५	३	२	१
५	४	२	३	१	५	४	३	२	१

|| श्री वीतरागाय नम. ||

शांति-पाठ

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

पढ़ने की विधि

जहां १ का चिह्न है वहां नमो-अरिहन्ताणं २ पर-नमो-सिद्धाणं ३ पर-नमो आयरियाणं ४ पर-नमो उवज्झायाणं ५ पर-नमो लोए सव्व साहूणं। इस क्रम से कम से कम २१ बार इस का जाप प्रत्येक गृहस्थ को करना चाहिये, यह जाप परम शान्ति का देने वाला तथा कल्याण करने वाला है।

सामायिक पारने का पाठ

एयस्स नवमस्स सामाइयवयस्स-पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा-ते आलोऊँ मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स सइअकरणयाए सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए तस्स मिच्छा मि दुक्कड, सामाइयं सम्मं काएण न फासियं, न पालियं, न तिरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं न भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सामायिक समाप्ति का हिन्दी पाठ

सामायिक विधि से लेते, विधि से करते जो कुछ भी अविधि हुई हो तथा दश मन के, दश वचन के, बारह काया के-उक्त बत्तीस दोषों में से जो भी कोई पाप दोष लगा हो तो, वह सब मन, वचन, काया से मिच्छा मि दुक्कड ।

सामायिक लेने की विधि

शान्त तथा एकान्त स्थान, भूमिका अच्छी तरह प्रमार्जन, श्वेत तथा शुद्ध आसन, गृहस्थोचित पगड़ी या कोट आदि उतार कर शुद्ध वस्त्रों का उपयोग । मुखवस्त्रिका का मुख पर लगाना । पूर्व तथा उत्तर की ओर मुख रखना । बैठ कर या खड़े होकर गुरु वन्दना सूत्र-तिक्खुत्तो तीनबार, नमस्कार-सूत्र अरिहन्तो एक बार, फिर वन्दना कर आलोचना की आज्ञा लेना । आलोचना सूत्र-इच्छाकारेण संदिसह, उत्तरीकरण

सूत्र-तस्सउत्तरी, पद्मासन आदि से बैठकर या खड़े होकर कायोत्सर्ग-ध्यान में लोगस्स एक बार, णमो अरिहन्ताणं पढ़कर ध्यान खोलना। प्रकट रूप मे लोगस्स (एकबार) गुरु वन्दन सूत्र-तिक्खुत्तो तीन बार (गुरु से या वे नहीं हों तो भगवान् की साक्षी से सामायिक की आज्ञा लेना) सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र- करेमि भन्ते! (बायां घूटना भूमि पर टेक कर, दाहिना खड़ा कर, उस पर अजलिवद्ध दोनों हाथ रखकर) अरिहत-सिद्धगुण-स्तुति सूत्र-नमोत्थुणं दो बार (नोट) दो नमोत्थुणं मे पहला सिद्धों का, दूसरा अरिहंतों का है! अरिहन्तों के नमोत्थुणं में 'ठाणं संपाविउकामाणं' पढ़ना चाहिए। ४८ मिनिट तक स्वाध्याय, धर्म चर्चा, आत्मध्यान करना चाहिए।

सामायिक पालने की विधि

गुरु वन्दना सूत्र-तिक्खुत्तो तीनबार अलोचना सूत्र-इच्छाकारेणं संदिसह, उत्तरीकरण सूत्र-तस्सउत्तरी (पद्मासन आदि से बैठ कर या खड़े होकर) कायोत्सर्ग, ध्यान लोगस्स एक बार 'नमोअरिहन्ताणं' पढ़कर ध्यान खोलना। प्रकट रूप में लोगस्स। बाया घुटना टेक कर, दाहिना खड़ा कर उस पर अजलिवद्ध दोनों हाथ रखकर अरिहन्त-सिद्ध-गुण-स्तुति सूत्र-नमोत्थुणं दो बार बोलना चाहिये ॥इति॥

॥ अरिहन्त-वन्दना ॥

नमो श्री अरिहंत, कर्मों का किया अंत,
हुआ सो केवलवंत करुणा भंडारी है ।
अतिशय चौंतीस धार पैंतीस वाणी उचार,
समझावें नर नार पर उपकारी है ॥
शरीर सुन्दराकार सूर्य सो झलकार,
गुण है अनंतसार दोष परिहारी है ।
कहत हैं त्रिलोक ऋषि मन वचन काया करी,
झुक २ वारम्वार वन्दना हमारी है ॥१॥

॥ सिद्ध-वन्दना ॥

सकल कर्म टाल, वश कर लियो काल,
मुक्ति में रहा माल आत्मा को तारी है ।
देखत सकल भाव हुआ है जगत राव,
सदा ही क्षायिक भाव भय अविकारी है ॥
अचल अटल रूप आवे नहीं भव कूप,
अनूप स्वरूप ऊप ऐसे सिद्धधारी हैं ।
कहते हैं तिलोक ऋषि बताओ ए वास प्रभु,
सदा ही उगंत सूर वन्दना हमारी हैं ॥

॥ आचार्य-वन्दना ॥

गुण है छत्तीस पूर धारत धरम उर,
मारत कर्म क्रूर सुमति विचारी है ।

शुद्ध सो आचारवंत सुन्दर है रूपवंत,
भण्या सभी सिद्धांत वाचनी सुप्यारी है ॥
अधिक मधुर वचन कोई नहीं लोपे केन,
सकल जीवों का सयन कीर्ति अपारी है ।
कहते हैं तिलोक ऋषि हितकारी देत सीख,
ऐसे आचार्यताकुं वन्दना हमारी है ॥ ३ ॥

॥ उपाध्याय--वन्दना ॥

पढ़त इग्यारा अग कर्मो से करे जंग,
पाखडी का मान भंग करन हुशेयारी हैं ।
चउदे पूरव धार, जानत आगम सार,
भविनके सुखकार, भ्रमता निवारी हैं ।
पढावे भविक जन, स्थिर कर देत मन,
तप करी तावे तन, ममता निवारी है ॥
कहत तिलोकरिख, ज्ञानभानु परतिख,
ऐसे उपाध्याय ताकुं वंदना हमारी हैं ॥ ४ ॥

॥ मुनिराज--वन्दना ॥

आदरी संयम भार करणी करे अपार,
समिति गुपत्ति धार विकथा निवारी है ।
जयणा करें छ काय सावद्य न बोलें वाह,
बुझाई कषाय लाय किरिया भण्डारी हैं ॥

ज्ञान भरो आठूं याम लेवे भगवन्त नाम,
धरम को करें काम, ममता कूं मारी है।
कहत है तिलोक रिख करमां को टालें विख,
ऐसे मुनिराज ताकुं वन्दना हमारी हैं ॥५॥

॥ गुरु--महिमा ॥

जैसे कपड़ा को थान, दरजी वेतन आण।
खण्ड खण्ड करे जाण; देत सो सुधारी है॥
काटके ज्युं सूत्रधार हेम जैसे सुनियार ।
माटि के जो कुम्भकार, पात्र करे त्यारी है॥
धरती को किसान लोहे को लुहार जाण।
शिलावट शिला आण, घाट घडे भारी है॥
कहते हैं त्रिलोक ऋषि, सुधारे ज्युं गुरुशीश।
गुरु उपकारी, नित लीजे बलिहारी है॥ १॥
गुरु मित्र गुरु मात, गुरु सगा गुरु तात।
गुरु भूप गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है॥
गुरु रवि गुरु चन्द्र, गुरु पति गुरु इंद्र ।
गुरु देव दे आनंद, गुरुपद भारी है॥
गुरु देत ज्ञान ध्यान, गुरु देत दान मान।
गुरु देत मोक्ष स्थान, सदा उपकारी है॥
कहत है त्रिलोक ऋषि, भली भली दीनी सीख।
पल पल गुरुजी को वन्दना हमारी है॥

॥ श्रावक के तीन मनोरथ ॥

(१) पहले मनोरथ में-श्रमणोपासक (श्रावक) इस प्रकार चिन्तन करे कि मैं कब १४ प्रकार के बाह्य और ६ प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह से अथवा आरम्भ समारम्भ से निवृत्ति करूंगा. यह आरम्भ परिग्रह काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ विषय-कषाय का बढ़ाने वाला दुर्गतिको देने वाला मोह मत्सर राग द्वेष का मूल, धर्म, ज्ञान क्रिया, क्षमा, दया, सत्य, संतोष सम्यक्त्व संयम, तप, ब्रह्मचर्य और सुमति का नाश करने वाला, अठारह पाप को बढ़ाने वाला. अनन्त संसार में परि-भ्रमण कराने वाला, अनित्य, अशाश्वत, अशरण, निर्ग्रन्थ, मुनियों की निन्दा का कारण ऐसे अपवित्र आरम्भ परिग्रह का जिसदिन मैं त्याग करूंगा, वह दिन मेरे लिए परम कल्याण का होगा ॥ १ ॥

(२) दूसरे मनोरथ में-श्रावक इस प्रकार चिंतन करे कि कब मैं द्रव्य तथा भाव से मुण्डित होकर दस प्रकार का यति धर्म, नव प्रकार का विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महाव्रत, पांच समिति तीन गुप्ति सत्तरह प्रकार का संयम, बारह प्रकार के तप का आचरण करने वाला, छकाय का रक्षक अप्रतिबद्ध विहारी, सर्व संग रहित, वीतराग देवकी आज्ञा अनुसार चलने वाला बनूंगा अर्थात् जिस दिन निर्ग्रन्थ का मार्ग अङ्गी-कार करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा ॥ २ ॥

(३) तीसरे मनोरथ में श्रावक इस प्रकार चिन्तन करें कि किस समय में सब पापों की आलोचना निन्दा करके तथा निशल्य हो कर सब जीवों से क्षमा-याचना करूंगा। और मन वचन काया से अठारह पापों का त्याग कर शरीर के ममत्व से रहित हो कर अतिम श्वासोच्छवास तक प्रत्याख्यान द्वारा चारों ही आहार का त्याग तथा तीन आराधनाएं और चार शरण समाधि मरण प्राप्त करूंगा। तथा संलेखना के पांच अतिचार से रहित हो पण्डित भाव के द्वारा मृत्यु को प्राप्त करूंगा वह दिन मेरे लिए धन्य एवं परमकल्याण-मय होगा।

॥ चौदह नियम ॥

१ सचित्त—सजीव वस्तु।

२ द्रव्य-पदार्थ—अन्न, शाक आदि।

३ विगयं—दूध, दही, घी, तेल, मीठा आदि।

४ तांबूल—मुखवास, पान आदि।

५ वस्त्र—पहनने, ओढ़ने के कपड़े आदि।

६ पन्नी—जूता खड़ाऊं आदि।

७ कुसुम—सूंघने की वस्तु फूल इत्र आदि।

८ वाहन—घोड़ा, घोड़ी, जहाज, रेल, मोटर, गाड़ी आदि।

९ शयन—खाट, पलंग बिछौने आदि।

१० विलेपन—तेल, पीठी, शरीर के लगाने की वस्तु।

पांच संवर जिनेश्वर भाख्या दया धर्म प्रधान ।
जो शास्त्र नित्य सुनो भव्यजन आन शुद्ध मन ध्यान ॥
और कहां लग करूंजी वर्णन तीन लोक प्रमाण ।
सुनत पाप विनाश जायें पायें पद निर्वाण ॥
देव वैमानिक मांहे पदवी कहिए जी पच प्रधान ।
जो शास्त्र नित्य सुनो भव्यजन आन शुद्ध मन ध्यान ॥
विघ्न हरण मंगल करण धन्य श्री जैन धर्म ।
जिन सिमरिया पातक टले टूटे आठों कर्म ॥
धन्य साधु धन्य साध्वी धन्य श्री जैन धर्म ।
जिन सिमरियां संकट टले टूटे आठों कर्म ॥
जैन धर्म की जय हो ।
दया धर्म की जय हो ॥
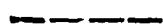
॥ मध्याह्न के व्याख्यान के पश्चात् ॥

॥ पठनीय स्तवन ॥

तीर्थ करना दुख हर्ता, इन्द्र सारे सेव हैं ।
त्रैलोक्य स्वामी मोक्षगामी, सो हमारे देव हैं ॥
महाव्रतधारी आत्मतारी, जीव षट् प्रतिपालना ।
गुरुदेव मोटा लिया जी ओटा दुख सगले टालना ॥
सब जीव रक्षा यही परीक्षा, धर्म जिनकी जानिये ।
जहां होत हिंसा नहीं संशय, अधर्म वोही पीछानिये ॥

ये तीन रत्ना कीजो यत्ना शुद्ध चित्त सुधारिये।
कहे वक्ता सुनो श्रोता, ग्रथनो छे सार ये ॥
सक्र सारूं त्याग धारूं, करोजी निज हित आणिये।
प्रभु शरण लेऊं, धर्म सेऊं, नाही सों कल्याण है ॥

॥ पौषधव्रत लेने का पाठ ॥

ग्यारवां पौषधव्रत-असणं पाणं खइयं साइयं चारों आहार का पच्चक्खाण, अबंभ सेवने का पच्चक्खाण माला वरणक विलेपन का पच्चक्खाण, अमुक मणि सुवर्ण का पच्चक्खाण, शस्त्र मुसलादिक सावज्ज योग का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ पोषधव्रत पारने का पाठ ॥

ग्यारहवां पौषधव्रत-विषय पंच आइयारा जाणियव्वा न समारियव्वा तंजहा ते आलोऊं अप्पडिलेहिए दुप्पडिलेहिए सेज्जा संथारए अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए सेज्जा संथारए अप्पडिलेहिए दुप्पडिलेहिए उच्चारपासवण-भूमी अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए उच्चारपासवण-भूमी पोसहोववासस्स समं अणणुपालणाए तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

॥ संवर करने का पाठ ॥

द्रव्य से पांच आस्रव सेवन का प्रत्याख्यान क्षेत्र× से......
काल* से ...... भाव से उपयोग सहित, गुण से निर्जरा
के कारण तथा जब तक पांच वार महामन्त्र नवकार न पढ
लूं तब तक दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा
वयसा कायसा तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ सप्त कुव्यसन निषेध ॥

१ शिकार खेलना, २ जुवा-सट्टा खेलना, ३ चोरी करना, ४ मांस भक्षण, ५ मदिरापान, ६ परस्त्रीगमन, ७ वेश्यागमन।

नोट-प्रत्येक मनुष्य को इन सातों कुव्यसनों का त्याग करना चाहिये। इनको त्याग करने से प्राणी मात्र को कल्याण का मार्ग प्राप्त हो सकता है, अन्यथा नहीं ॥

॥ सागारी संथारा करने का दोहा ॥

आहार शरीर उपधी पचक्खू पाप अठार।
मरन पाऊँ तो वोसिरे जीऊँ तो आगार ॥

नोट—संथारा ११ वार नवकार मन्त्र पढ़ कर पारन
चाहिए।

× जितने क्षेत्र की मर्यादा करनी हो उतने क्षेत्र का परिमाण
देना चाहिए।

*जितने समय का संवर करना चाहो उतने समय का परिमाण
के साथ ही कह डालना चाहिए ॥

पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार ।
तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ ११ ॥
त्रस स्थावर पीयर, लोक मांही जे साध ।
त्रिविधे ते प्रणमुं, परमारथ जिणे लाध ॥ १२ ॥
अरि करि हरि सायणी, डायणी भूत वैताल ।
सभी पाप पणा से, वरते मंगल माल ॥ १३ ॥
इण सिमरिया संकट, दूर टले तत्काल ।
इम जंपे जिन प्रभु सूरि शिष्य रसाल ॥ १४ ॥

॥ श्री पैंसठिया यन्त्र का छन्द ॥

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभव शाम, सुविधि धर्म शांति अभिराम।
अनंत सुव्रत नमीनाथ सुजाण, श्री जिन मुझ करो कल्याण ॥
अजितनाथ चंदा प्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर।
विमलनाथ विमल जग जाण, श्री जिनवर मुज करो ॥ २ ॥
मल्लीनाथ जिन मंगल रूप, धनुष पंचवीश सुन्दर स्वरूप।
श्री अरहनाथ नमु वर्द्धमान, श्री जिनवर मुझ करो ॥ ३ ॥
सुमति पद्म प्रभु अवतंस, वासुपूज्य शीतल श्रेयांस।
कुन्थु पार्श्व अभिनंदन भाण, श्री जिनवर मुज करो ॥ ४ ॥
इण पर जिनवर संभारिए, दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये।
पचीसे पांसठ परमाण, श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥५॥
इम भणतां दुःख न आवे, कदा जो निज पासे राखो सदा।
धरिए पंचतणु मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो ॥ ६ ॥
श्री जिनवर नामे वांछित मिले, मन वांछित सहु आशा फले.
धर्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुज करो० ॥ ७ ॥

भजन नं० १

जिनदेव तेरे चरण में मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास हो।
जीवन समर में हे प्रभो मुझे एक तेरी आश हो ॥
कर्तव्य पथ से जो डिगाने विघ्नगण आवें मुझे।
संतोष भक्ति और दयाका मंत्र मेरे पास हो ॥
संसार सागर में यहा ढूँ प्रेमकी मन्दाकिनी ॥
दिल में तड़प हो प्रेम की और प्रेम जल की प्यास हो ॥

निज भाव भाषा देशका गौरव मुझे दिन रात हो ।
निजधर्म हित यह प्राण हों और मन कभी न निराश हो ॥
संसार सागर में न भटके नाव मेरी बीच में ।
मैं खुद खवैया बन सकूं वह शक्ति मेरे पास हो ॥
मैं बालपन में ब्रह्मचारी रह सभी विद्या पढ़ूं ।
यौवन दशा में बन के श्रावक अन्त में संन्यास ॥
यह आत्मा ही बन सकी ए राम ! खुद परमात्मा ।
हे नाथ मेरी आत्मा को अन्त मोक्ष निवास हो ॥

भजन नं० २

बैठा अकेला दो घड़ी कभी तो प्रभु को ध्याया कर ।
मन मन्दिर में गाफिला ! झाड़ू रोज लगाया कर ॥
सोने में तो रैन गुजारी दिन भर करता पाप रहा ।
विषय भोग और खान पान में समय को कर-बरबाद रहा.
बिस्तर से उठ प्रेमियां सत्संग में भी आया कर ॥ १ ॥
बार बार नर जन्म का पाना बच्चोंवाला खेल नहीं ॥
जन्म जन्म के शुभकर्मों का होता जबतक मेल नहीं ।
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर ॥ २ ॥
पास तेरे है दुःखिया कोई तूने मौज उड़ाई क्या ।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी तूने रोटी खाई क्या ॥
पहले सब से पूछ कर पीछे से खुद खाया कर ॥ ३ ॥

धन दौलत का मान न करिये इसका कुछ इतबार नहीं।
दिया दान सत शील धर्म बिन मनुष्य जन्म का सार नहीं ॥
दिन दुखी बल हीन की सेवा रोज कमाया कर ॥ ४ ॥
वीर जिनेश्वर जन-हितकारी सत्य धर्म का ज्ञान दिया।
अंधकार में पड़े जगत का कर करुणा उद्धार किया ॥
वीर प्रभु का नाम तू प्रातः समय उठ ध्याया कर ॥ ५ ॥

भजन नं० ३

भारत की नैया के आधार, अय त्रिशला-नन्दन।
महिमा है तेरी अपरम्पार, अय त्रिशला-नन्दन ॥
हिंसा अत्याचार मिटाने, प्रेम का हर को पाठ पढ़ाने।
लिया था तूने अवतार, अय त्रिशला-नन्दन ॥ १ ॥
धन वैभव से नाता तोड़ा, राजकाज से मुखड़ा मोड़ा।
संयम व्रत लिया धार, अय त्रिशला-नन्दन ॥ २ ॥
पतित जनों को गले लगा के, जिन वाणी का ज्ञान सुना के।
लाखों का किया बेड़ा पार, अय त्रिशला-नंदन ॥ ३ ॥
चंदन बाला का कार्य सारा, अर्जुनमाली पार उतारा।
कष्टों का करके संहार, अय त्रिशला-नन्दन ॥ ४ ॥
अमृत को भी तेरा सहारा, दुःख सागर से होवे किनारा।
भावना यही बारम्बार, अय त्रिशला-नन्दन ॥ ५ ॥

भजन नं० ४

यह मीठा प्रेम प्याला, कोई पीएगा किस्मत वाला।
प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला॥
प्रेम की फेरो माला—कोई, प्रेम विन प्रभु भी नहीं मिलते।
मन के कष्ट कभी नहीं टलते; प्रेम करे उजियाला—कोई॥
प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म मरण का दुःख मिटावे।
कटे कर्म जंजाला—कोई, प्रेम ही सब के कष्ट मिटावे॥
प्रेम ही सारे रोग मिटावे, प्रेम में हो मतवाला—कोई।
मुक्ति का सुख प्रेमी पावे, नरकों में हरगिज न जावे॥
प्रेम है भोजन आला—कोई, पूज्य गुरू आतमाराम हमारे।
अमर मुनि के तारण हारे, प्रेम का पन्थ निराला—कोई॥

भजन नं० ५

पूज्य आतमाराम स्वामी, तुम को लाखों प्रणाम, तुमको०।
जन्म राहों नागरी में पाया, पुण्य उदय भारत का आया।
घर घर आनन्द छाया, तुमको लाखों प्रणाम॥१॥
परमेश्वरी देवी के जाए, मनशाराम पिता कहाए।
चाव से गोद खिलाए, तुमको लाखों प्रणाम॥२॥
जैन धर्म से प्रेम लगाया, समझ लिया जग स्वप्न की माया।
मोह को दूर हटाया, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको०॥३॥
श्री गुरु शालिग्राम प्यारे, अपने अपने गुरुवर धारे।
सारे पाप विसारे, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको०॥४॥

उन्नीस सौ ५१ में संयम धार, मोह माया से किया किनार।
यश गावे जग सारा, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ५ ॥
तद् संयम में सुरत लगाई, उपाध्याय की पदवी पाई।
जग में महिमा छाई, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ६ ॥
अमृत सा व्याख्यान सुनावे, भक्तजनों के मन में भावे।
शंका दूर हटावे, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ७ ॥
ज्ञान ध्यान में हो भण्डार, दुष्टजनों के तारण हार।
मैं जाऊँ बलिहारी, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ८ ॥
आचार्य पदवी आपने पाई, संगत सब दर्शन को आई।
सब के बने सहाई, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ९ ॥
झण्डा जिनमत का लहराया, पापियों का अज्ञान मिटाया।
दया धर्म फैलाया, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ १० ॥
अमर मुनि तुमरे गुण गावे, चरण कमल में शीश निवावें।
दरशन दर्शन पावे तुमको लाखों प्रणाम, तुमको० ॥ ११ ॥

॥ भक्तामर स्तोत्र भाषा ॥

दोहा

आदि पुरुष आदीश जिन, आदि सुविधि करतार।
धरम धुरंधर परम गुरु, नमों आदि अवतार ॥

चौपाई—

सुरनत मुकुट रतन छवि करें, अन्तर पाप तिमिर सब हरें।
जिनपद वन्दों मन वच काय, भव जल पतित उधारन सहाय।

श्रुतपारग इन्द्रादिक देव, जाकी श्रुति कीनी कर सेव ।
शब्द मनोहर अर्थ विशाल, तिस प्रभुकी वरनों गुनमाल ॥२॥
विबुधवंद्यपद मैं मतिहीन, होय निर्लज्ज श्रुति-मनसा कीन ।
जल प्रतिबिम्ब बुद्ध को गहै, शशि मण्डल बालक ही चहै ॥३॥
गुन समुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुरगुरु पावैं पार
प्रलय पवन उद्धत जलजन्तु, जलधि तिरै को भुजबलवन्तु ४
सो मैं शक्तिहीन श्रुति करूं, भक्तिभाव वश कछु नहीं डरूं ।
ज्यों मृग निज सुत पालन हेत, मृगपति सन्मुख जाय अचेत ५
मैं शठ सुधी हंसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावे राम ।
ज्यों पिक अबकली परभाव, मधुरितु मधुर करै आराव ॥६॥
तुम जस जंपत जिन छिनमाहिं. जन्म जन्म के पाप नसाहिं ।
ज्यों रवि उदय फटै ततकाल, अलिवत् नील निशातम जाल ७
तुम प्रभावतें कहूँ विचार, होसि यह श्रुति जनमनुहार ।
ज्यों जल कमल पत्रपे परै, मुक्ताफल की द्युति विस्तरै ॥ ८ ॥
तुम गुन महिमा हत दुखदोष, सो तो दूर रहो सुखपोष ।
पाप विनाशक है तुम नाम, कमल विकाशी ज्यों रविधाम ॥९॥
नहिं अचम्भ जो होहिं तुरन्त, तुमसे तुम गुण वरनत संत ।
जो धनी को आप समान, करै न सो निंदित धनवान ॥१०॥
इक टक जन तुमको अवलोय, अवर विषै रति करै न सोय ।
को करि खीर जलधि जलपान, क्षार नीर पीवै मतिमान ॥११॥
प्रभु तुम वीतराग गुनलीन, जिन परमाणु देह तुम कीन ।
हैं तितने ही ते परमाणु यातै तुम सम रूप न आन ॥ १२ ॥

कहां तुम मुख अनुपम अविकार, सुरनर नाग नयन मनहार।
कहां चन्द्रमण्डल सकलंक, दिन में ढाकपत्र-समरंक ॥ १३ ॥
पूरनचन्द्र जोति छविवन्त, तुम गुनु तीन जगत लंघन्त।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करे निवार १४
जो सुरतिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यौ तुम तौ न अचंभ
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरु शिखर डगमगे न धीर १५.
धूम रहित बाती गतनेह, परकाशै त्रिभुवन घर येह।
वातगम्य जाहिं परचंड, अपर दीप तुम वलो अखण्ड ॥ १६॥
छिपहु न लुपहु राहुकी छांहि, जग-प्रकाशक हो छिनमाहिं।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार, रवितै अधिक धरौ गुनसार १७
सदा उदित विदलित तमसोह, विघटित मेघ राहु अविरोह।
तुम मुख कमल अपूरवचंद, जगत विकाशी जोति अमद १८.
निशिदिन शशिरविको नहीं काम, तुम मुखचंद हरै तमधाम।
जो स्वभावतै उपजै नाज, सजल मेघतैं कौनहु काज ॥ १९ ॥
जो सुवोध सोहै तुममाहिं, हरि हर आदिक में सो नाहिं।
जो द्युति महारतनमें होय, काचखंड पावे नहिं सोय ॥ २० ॥

नाराच छन्द

सागर देच देख मै भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेखिया,
मनोग चित्तचोर और भूल हू न देखिय

अनेक पुत्रवन्तिनी नितंबिनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और माततें प्रसूत हैं ।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनैं,
दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनैं ॥ २२ ॥

पुरान हो पुमान हो पुनीत पुन्यवान हो,
कहैं मुनीश अधकारनाशको सुभान हो ।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके,
न और मोहि मोखपंथ देय तोहि टालके ॥ २३ ॥

अनंत नित्य चित्तके अगम्य रम्य आदि हो।
असंख्य सर्वव्यापी विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो॥
महेष कामकेतु जोग-ईश जोग-ज्ञान हो।
अनेक एक ज्ञान रूप शुद्ध संतमान हो॥ २४ ॥

तु ही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमान तैं।
तु ही जिनेश शंकरो जगत्त्रये विध नतैं ॥
तू ही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं ।
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतैं ॥ २५ ॥

नमो करूं जिनेश तोहि आपदा निवार हो।
नमो करूं सुभूरि भूमिलोक के सिंगार हो॥
नमो करूं भवाब्धि नीरराशि शोषहेतु हो।
नमो करूं महेश तोहि मोक्ष पंथ देतु हो॥ २६॥

चौपाई

तुम जिन पूरन गुनगन भरे, दोष गर्व करि तुम परिहरे।
और देवगन आश्रय पाय, सुपन न देखे तुम फिर आय ॥२७॥
तरु अशोकतर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निहनंत २८.
सिंहासन मणि किरण विचित्र, तापर कंचन वरन पवित्र।
तुम तनु शोभित किरन विथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार॥
कुंदपुहु पसित चमर दुरंत, कनक वरन तुम तनु शोभन्त।
ज्यों सुमेरुतट निर्मल कांति, झरना भरें नीर उमगांति ॥३०॥
ऊचे रहे सुर दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपै अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोति झालरसों छवि लहैं ॥३१॥
दुदुभि शब्द गहर गंभीर, चहुंदिश होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवन जन शिव संगम करै, मानो जयजय रव ऊचरै॥३२॥
मंद पवन गन्धोदक इष्ट. विविध कल्पतरु पुहुपसुवृष्ट।
देव करें विकसित दल सार, मानो द्विज पंकति अवतार॥३३॥
तुम तन भा-मण्डल जिनचन्द्र, सब दुतिवंत करत है मन्द।
कोटि शंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय ३४
स्वर्ग मोख मारग संकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरें अगाध, सब भाषा गर्भित हितसाध ३५

दोहा

विकसित सुवरन कमल दुति, नख दुति मिल चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहँ धरै, तहँ सुर कमल रचाहिं॥३६॥

ऐसी महिमा तुम विषैं, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो जोति है, नहिं तारागन होय ॥ ३७ ॥

छप्पय

मद्‌पद मदअवलिप्तकपोल मूल, अलिकुल झंकारैं।
तिन सुन शब्द प्रचण्ड, क्रोध उत अद्भुति धारैं॥
कालवरन भिकराल, कालवत् सनमुख आवै।
ऐरावत सो प्रबल, सकल जन भय उपजावै॥
देखि गयंद न भय करैं, तुम पद महिमा लीन।
विपति रहित सम्पत्ति सहित, वरतैं भक्त अधीन॥३८॥
अति मदमत्त गयंद कुम्भथल नखन विदारै।
मोती रक्त समेत, डारि भूतल सिंगारै॥
बाकी दाढ विशाल, वदन में रसना लोलै।
भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै॥
ऐसे मृगपति पग तलैं, जो नर आयो होय।
शरन गहे तुम चरन की, बाधा करै न सोय॥ ३९ ॥
प्रलय पवन कर उठी आग जो तास पटंतर।
वमैं फुलिंग शिखा उतंग पर जलै निरन्तर॥
जगत समस्त निगल्ल, भस्म कर देगी मानों।
तड़तड़ाट दव-अनल जोर चहुँ दिशा उठानों॥
सो इक छिन में उपशमै नाम नीर तुम लेत।
होय सरोवर परिनमैं विकसित कमल समेत॥ ४० ॥

कोकिल कंठ समान, श्यामतन क्रोध जलंता।
रक्त नयन फुंकार मार विषकरण उगलंता ॥
फण को ऊँचा करै वेग ही सन्मुख धाया।
तब जन होय निशंक, देख फणपति को आया ॥
जो चांपै निज पांवतैं, व्यापै विष न लगार।
नागदमनी तुम नाम की, है जिनके आधार ॥ ४१ ॥
जिस रनमाहीं भयानक, शब्द कर रहे तुरंगम।
घनसम गज गरजाहिं, मत्त मानों गिरि जंगम ॥
अति कोलाहलमाहिं, बात जहं नाहिं सुनीजै।
राजनको परचंड देख बल धीरज छीजै ॥
नाथ तिहारे नामतैं, सो छिनमाहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥ ४२ ॥
मारे जहां गयन्द, कुम्भ हथियार विदारे।
उमगे रुधिर-प्रवाह, वेग जलसे विस्तारे ॥
होय तिरण असमर्थ, महाजोधा बलपूरे।
तिस रनमे जिन तोय भक्त जे हैं नरसूरे ॥
दुर्जय अरिकुल जीतके, जय पावें निकलंक।
तुम पदपंकज मन बसें, ते नर सदा निशंक ॥ ४३ ॥
नक्र चक्र मगरादि, मच्छकरि भय उपजावै।
जामैं बड़वा अग्नि, दाहतैं नीर जलावै ॥
पार न पावै जास, थाह नहिं लहिये जाकी।
गरजे अतिगंभीर, लहरकी गिनती न ताकी ॥

सुखसों तिरै समुद्रको, जो तुम गुण सुमिराहि।
लोक कल्लोलनके शिखर, पार यान लेजाहिं ॥ ४४ ॥
महाजलोदर-रोग भार, पीडित नर जे हैं।
वात पित्त कफ कुष्ट, आदि जे रोग गहे हैं ॥
सोचत रहैं उदास, नाहिं जीवनकी आशा।
अति घिनावनी देह, धरें दुर्गंध निवासा ॥
तुम पद पंकज धूलको, जो लावैं निज अङ्ग।
ते निरोग शरीर लहिं, छिनमें होहिं अनङ्ग ॥ ४५ ॥
पांव कंठतैं जकर, बान्ध सांकल अतिभारी।
गाढ़ी बेड़ी पैर मांहि, जिन जांघ विदारी ॥
भूख-प्यास चिन्ता शरीर, दुःखते विललाने।
सरन नाहिं जिन कोय, भूप के बन्दी खाने ॥
तुम सुमरत स्वयमेव ही, बन्धन सब खुल जाहिं।
छिन में ते सम्पत्ति लहैं, चिन्ता भय विनसाहिं ॥४६॥
महामत्त गजराज, और मृगराज दावानल।
फनपति रन पर चन्ड, नीरनिधि रोग महाबल ॥
बन्धन ये भय आठ, डरपकर मानों नाशैं।
तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशैं ॥
इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तुम पद भक्त को, भक्ति सहाई होय ॥ ४७ ॥
यह गुणमाल विशाल नाथ तुम गुनन संवारी।
विविध वर्णमय पुहुप गूंथि मैं भक्ति विथारी ॥

जो नर पहरै कन्ठ भावना मन में भावैं।
मानतुंग ते निजाधीन, शिव लक्ष्मी पावै॥
भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत।
जे नर पढें सुभावसों, ते पावें शिव खेत ॥ ४८ ॥

अथ वीर-स्तुतिः ॥

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य,
अागारिणो या पर-तित्थिया य।
से केइ णेगं तहियं धम्ममाहु,
अणेलिसं साहु-समिक्खयाए ॥ १ ॥

कह च नाणं कह दंसणं से,
सीलं कहं नाय-सुतस्स आसी।
जाणासि णं भिक्खु! जहातहेणं,
अहासुतं बूहि जहा णिसंतं ॥ २ ॥

खेयन्नए से कुसले महेसी,
अणंतनाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खु-पहे ठियस्स,
जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥

उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु,
तसा य जे थावर जे य पाणा।

से णिच्च-णिच्चेहि समिक्ख पन्ने,
दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥
से सव्वदंसी अभिभूय नाणी,
निरामगन्धे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरं सव्व-जगंसि विज्जं,
गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
से भूइपण्णे अणिए अचारी,
ओहंतरे धीरे अणंत-चक्खु ।
अणुत्तरे तप्पइ सूरिए वा,
वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥ ६ ॥
अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं,
नेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इन्दे व देवाण महाणुभावे,
सहस्स णेता दिवि णं विसिट्ठे ॥ ७ ॥
से पन्नया अक्खय-सायरे वा,
महोदही वा वि अणंत-पारे ।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के,
सक्के व देवाहिवई जुइमं ॥ ८ ॥
से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए,
सुदंसणे वा नग-सव्व सेट्ठे ।
सुरालए वासि-मुदागरे से,
विरायए णेग गुणोववेए ॥ ९ ॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणं,
तिकंडसे पंडग-वेजयंते ।
से जोयणे णव-णवते सहस्से,
उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥
पुट्ठे नमे चिट्ठइ भूमि-वट्ठिए,
जं सूरिया अणु-परिवट्टयंति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य,
जंसी रतिं वेदयती महिंदा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्द-महप्पगासे,
विरायती कंचण-मट्ठ वण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्व-दुग्गे,
गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥ १२ ॥
महीइ मज्झमि ठिये णगिंदे,
पन्नायते सूरिय-सुद्ध लेसे ।
एवं सिरीए उस भूरि-वन्ने,
मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥
सुदंसणस्से व जसो गिरिस्स,
पवुच्चइ महतो-पव्वयस्स ।
एसोवमे समणे नाय-पुत्त,
जाई-जसो-दंसण-नाण-सीले ॥ १४ ॥
गिरीवरे वा निसहाययाणं,
रुयए व सेट्ठ वलयाययाणं ।

तओवमे से जग-भूइपन्ने,
मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता,
अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ।
सुसुक्क सुक्कं, अपगंड-सुक्कं,
संखिंदु-एगंतवदात-सुक्कं ॥ १६ ॥

अणुत्तरग्गं परमं महेसी,
असेस-कम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिगते साइमणंत पत्ते,
नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥

रुक्खेसु णाए जह सामली वा,
जंसी रतिं वेदयती सुवन्ना ।
वणेसु वा नन्दणमाहु सेट्ठं,
नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ,
चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं,
एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे,
नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठं ।
खोओदए वा रस-वेजयंते,
तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥ २० ॥

हत्थीसु एरावणमाहु णायं,
सीहो मियाणं सलिलाण गंगा.
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे,
निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥ २१ ॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे,
पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीण सेट्ठे जह दंत-वक्के,
इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥
दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं,
सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम-बंभचेरं,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा,
सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
निव्वाण-सेट्ठा जह सव्व-धम्मा,
न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेही,
न सन्निहिं कुव्वइ आसुपन्ने ।
तरिउं समुद्दं व महाभवोघं,
अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥
कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोभं चउत्थं अज्झत्थ-दोसा।

एआणि वंता अरहा महेसी,
न कुव्वइ पावं न कारवेइ ॥ २६ ॥

किरिया-किरियं वेणइयाण वायं,
अणाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्व-वाय इति वेयइत्ता,
उवट्ठिए संजम दीह-रायं ॥ २७ ॥

से वारिया इत्थि सराइभत्तं,
उवहाणवं दुक्ख खयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च.
सव्वं पभू वारिय सव्व वारं ॥ २८॥

सोच्चा य धम्मं अरिहंतभासियं,
समाहितं अट्ठपदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ,
इंदेव देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥

"णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स"

पच्चीस बोल का थोकडा

गइ, जाइ, कायेंदिय पज्ज पाणा,
तणु जोग उवओग कम्म च ठाणं।
इंदिय विसय मिच्छा तत्ता य चेव,
दंडय खलु लेस्सा ज्झाणं च दिट्ठि ॥ १ ॥
छ य दव्व रासि गिहत्थ वयाणि,
वण्णिवयं चेव भंगं चरित्तं ।
एयाणि पणवीसा पयाणि कहिओ,
सव्वन्नुणा भगवया नायपुत्तेण ॥ २ ॥
चउ पंच छय पंच छय दसगहं,
पंच पन्नर बारस अट्ठ च चउदस ।
तेवीस दस नव अट्ठ चउवीसं,
छय चउ तिण्हि छय दो वि चेवं ॥ ३ ॥
बारस वया समणोवासयाणं,
महव्वया पञ्चेव तहा मुणिंदस्स ।
एगोपन्नास भंग पंच-चरियं,
णायव्वा पर्दिस अणुक्कम्म भेया ॥ ४ ॥

१-इन दो गाथाओं में बोलों के नाम दिये गए हैं। जैसे पहिला बोले का नाम है गइ अर्थात् गति इसी तरह सब बोलों के नाम जानना चाहिए।

२-इन दो गाथामें अनुक्रम से बोल के भेद बतलाए हैं जैसे पहला शब्द है चउ अर्थात् गति चार है इसी अनुक्रम से सब जान लेना चाहिए।

१ पहिले बोले गति ४—नरकगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्य गति ३ देवगति ४।

२ दूसरे बोले जाति पांच—एकेन्द्रियजाति १ द्वीन्द्रियजाति २ त्रीन्द्रियजाति ३ चतुरिन्द्रियजाति ४ पंचेन्द्रियजाति ५।

३ तीसरे बोले काय छः—पृथ्विकाय १ अपकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६।

४ चोथे बोले इन्द्रिय पांच—श्रोतेन्द्रिय १ चक्षुरिन्द्रिय २ घ्राणेन्द्रिय ३ रसनेन्द्रिय ४ स्पर्शेन्द्रिय ५।

५ पांचवे बोले पर्याप्ति छः-आहारपर्याप्ति १ शरीरपर्याप्ति २ इन्द्रियपर्याप्ति ३ श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति ४ भाषापर्याप्ति ५ मनः पर्याप्ति ६।

---

१ गति-गति नामकर्म के उदय से उपलब्ध जीव की पर्याय (अवस्था) विशेष को 'गति' कहते हैं।

२ जाति-अनेक व्यक्तिओं में एकत्व की प्रतीति कराने वाले समान धर्म को 'जाति' कहते हैं।

३ त्रस स्थावर नाम कर्म के उदय से जीव जिस शरीर उत्पन्न हो उसे 'काय' कहते हैं।

४ तीन लोक के ऐश्वर्य से सम्पन्न होने से जीव इ[न्द्र] कहलाता है। उस इन्द्र (जीव) के भोगोपभोगों के साधन[भूत] चिन्ह को 'इन्द्रिय' कहते हैं।

५ आहार वर्गणा, शरीर वर्गणा, इन्द्रिय वर्गणा, श्वा[सोच्छ्वास] वर्गणा, भाषा वर्गणा और मनोवर्गणा के परमा[णुओं] को शरीर, इन्द्रिय आदि रूप में परिणमाने की शक्ति की प[ूर्णता] को 'पर्याप्ति' कहते हैं।

६ छट्ठे बोले प्राण दश-श्रोतेन्द्रिय बलप्राण १ चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण २ घ्राणेन्द्रिय बलप्राण ३ रसेन्द्रिय बलप्राण ४ स्पर्शेन्द्रिय बलप्राण ५ मन बलप्राण ६ वचन बलप्राण ७ काय बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आयुष्य बलप्राण १० ।

७ सातवें बोले शरीर पांच-औदारिक शरीर १ वैक्रिय शरीर २ आहारक शरीर ३ तैजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५ ।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह-सत्य मनोयोग १ असत्य मनोयोग २, मिश्र मनोयोग ३ व्यवहार मनोयोग ४, सत्यवचन ५, असत्य वचन ६, मिश्र वचन ७, व्यवहार वचन ८, औदारिक काय योग ९, औदारिक मिश्र काय योग १०, वैक्रिय काय योग ११, वैक्रिय मिश्र काय योग १२, आहारक काय योग १३, आहार मिश्र योग १४, कार्मण काय योग १५ ।

नववें बोले उपयोग बारह-५ ज्ञान (१ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनपर्यायज्ञान, ५ केवलज्ञान) अज्ञान ३ (१ मतिअज्ञान, २ श्रुतअज्ञान, ३ विभंगज्ञान) दर्शन ४ (१ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन ।

---

६ जिनके संयोग से यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो और वियोग से मरण अवस्था को प्राप्त हो उनको 'प्राण' कहते हैं।

७ जिस में प्रतिक्षण जीर्ण-शीर्ण होने का धर्म हो तथा जो शरीर नाम कर्म के उदय से उपलब्ध होता है उसे 'शरीर' कहते हैं

८ मन, वचन और काया के व्यापार से होने वाले आत्मा के परिणाम को 'योग' कहते हैं ।

९ सामान्य और विशेष रूप से वस्तु के जानने को उपयोग कहते हैं ।

१० दसवें बोले कर्म आठ-१ ज्ञानावरणीयकर्म, २दर्शनावरणीयकर्म, ३ वेदनीयकर्म, ४ मोहनीयकर्म, ५ आयुष्यकर्म, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म, ८ अंतरायकर्म ।

११ ग्यारहवें बोले गुणस्थान चौदह-१ मिथ्यात्व गुणस्थान, २ सास्वादन गुणस्थान, ३ मिश्र गुणस्थान, ४ अव्रती सम्यक्दृष्टि गुणस्थान, ५ देशविरती गुणस्थान, ६ प्रमादिसंयति गुणस्थान, ७ अप्रमादीसंयती गुणस्थान, ८ नियट्ट (निवर्ति) बादर गुणस्थान, ९ अनियट्टि (अनिवर्ति) गुणस्थान, १० सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान, ११ उपशांतमोहनीय गुणस्थान, १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान, १३ सयोगीकेवली गुणस्थान, १४ अयोगीकेवली गुणस्थान ।

१२ बारहवें बोले पांच इन्द्रियों के तेइस विषय । श्रोत्रेन्द्रिय के ३ विषय-१ जीव शब्द, २ अजीव शब्द, ३ मिश्र शब्द ।

---

१० राग द्वेष आदि परिणामों के निमित्त से जीव के साथ सम्बन्धित कार्मणवर्गणारूप पुद्गल स्कन्ध को कर्म कहते हैं।

११ गुणस्थान-मोह और योग के निमित्त से सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र रूप आत्मा के गुणों की हीनाधिकतारूप अवस्था विशेष को 'गुणस्थान' कहते हैं।

१२ विषय-इन्द्रियां जिनको ग्रहण करती है उन्हें इंद्रियों के विषय कहते है ।

नोट-पांच इंद्रियों के २३ विषय और २४० विकार हैं। २३ विषय उपर बतलाए हैं अब २४० विकार बतलाते हैं ।

श्रोतेंद्रिय के १२ विकार जीव शब्द-मनुष्य पशु की आवाज २ अजीव शब्द-रोडा कंकड आदि की आवाज ३ मिश्र शब्द हारमोनियम फोनोग्राफ आदि की आवाज। ये तीन शुभ और

तीन अशुभ कुल छ उपर राग द्वेष इन दोनों को छ से लगाने से श्रोतेंद्रिय के १२ विकार हुए।

चक्षुरिंद्रिय के ६० विकार—कृष्ण, नील, पीत, रक्त, श्वेत, पांच जीव पांच अजीव पांच मिश्र ये पंद्रह शुभ और पंद्रह अशुभ। इन तीस पर राग और तीस पर द्वेष। कुल ६० विकार हुए।

रसनेंद्रिय के ६० विकार—१ कड़वा २ कषाय ३ तिक्त ४ अम्ल ५ मृदु पांच जीव के पांच अजीव के पांच मिश्र के। पंद्रह शुभ और पंद्रह अशुभ। इन तीस पर राग तीस पर द्वेष ये ६० विकार रसनेंद्रिय के हुए।

स्पर्शेंद्रिय के ६६ विकार हैं-८ भेद-कर्कश-जहां कोमलता नहीं, सकोमल-जहां कर्कश नही, लघु-जहां गुरु नहीं, गुरु-जहां लघु नहीं, उष्ण-जहां शीत नहीं, शीत-जहां उष्ण नहीं, रूक्ष-जहां स्निग्ध नहीं, स्निग्ध-जहां रूक्ष नही।

संसार के विषय क्या ?-कर्कश-गाय की जिव्हा, सकोमल रेशम, लघु-आकतूल का डोडा, गुरु-पारा, उष्ण-तेउकाय, शीत-हिम, रूक्ष-भस्म, स्निग्ध-घृत।

शरीर के विषय क्या १ कर्कश-पांव के एडी, २ सकोमल-कान की लोल, ३-लघु-बाल, ४ गुरु-हाड, ५ उष्ण-कलेजा, ६ शीत-नासिका का अग्रभाग, ७ रूक्ष-जिह्वा, स्निग्ध-नेत्र। ये ८ जीव, ८ अजीव, ८ मिश्र कुल २४ शुभ २४ अशुभ ४८ पर राग ४८ पर द्वेष कुल ६६ विकार स्पर्शेंद्रिय के हुए। ये सब मिलाकर पांचो इंद्रिय के २४० विकार समाप्त हुए।

चक्षुन्द्रिय के ५ विषय-१ कृष्ण, २ नील, ३ पील, ४ रक्त, ५ श्वेत। घ्राणेन्द्रिय के २ विषय-१ सुगन्ध २ दुर्गन्ध। रसेन्द्रिय के ५ विषय--१ कटु, २ कषाय, ३ आम्ल (खट्टा), ४ मृदु (मीठा) ५ तीक्ष्ण। स्पर्शेन्द्रिय के ८ विषय-१ कर्कश, २ कोमल, ३ लघु, ४ गुरु, ५ उष्ण, ६ शीत, ७ रूक्ष, ८ स्निग्ध॥

१३ तेरहवें बोले मिथ्यात्व १०—१ जीव को अजीव कहे तो मिथ्यात्व, २ अजीव को जीव कहे तो मिथ्यात्व, ३ धर्म को अधर्म कहे तो मिथ्यात्व, ४ अधर्म को धर्म कहे तो मिथ्यात्व. ५ साधु को असाधु कहे तो मिथ्यात्व, ६ असाधु को साधु कहे तो मिथ्यात्व, ७ मोक्षमार्ग को संसार का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व, ८ संसार के मार्ग को मोक्ष का कहे तो मिथ्यात्व, ९ कर्म रहित को कर्म सहित कहे तो मिथ्यात्व, कर्म सहित को कर्म रहित कहे तो मिथ्यात्व।

१४ चौदहवें बोले छोटी नवतत्त्व के ११५ भेद.

नवतत्त्व के नाम—१ जीवतत्त्व, २ अजीवतत्त्व, ३ पुण्य-तत्त्व, ४ पापतत्त्व, ५ आश्रवतत्त्व, ६ संवरतत्त्व, ७ निर्जरातत्त्व ८ बन्धतत्त्व, ९ मोक्षतत्त्व।

---

१३ मिथ्यात्व-कुदेव, कुगुरु, कुधर्म और कुशास्त्र पर विश्वास करने को 'मिथ्यात्व' कहते हैं।

१४ जीवतत्त्व--चेतना लक्षण सहित, ४ पर्याप्ति, ४ प्राण तथा छ पर्याप्ति, १० प्राण सहित ८ कर्म का कर्त्ता, ८ कर्म का भोक्ता हो उसे 'जीव तत्त्व' कहते हैं।

जीव के १४ भेद

जीव का १ भेद-१ चेतना लक्षण।

जीव के दो भेद-१ त्रस, २ स्थावर।

जीव के ३ भेद-१ स्त्रीवेद २ पुरुषवेद ३ नपुंसकवेद।

जीव के ४ भेद-१ नारकी २ तिर्यंच ३ मनुष्य ४ देव।

जीव के ५ भेद-पांच जाति-१ एकेंद्रिय २ द्वींद्रिय ३ त्रींद्रिय ४ चतुरेंद्रिय ५ पंचेंद्रिय।

जीव के ६ भेद-छ काय-१ पृथ्वी २ अप ३ तेऊ ४ वायु ५ वनस्पति ६ त्रसकाय।

जीव के ७ भेद-१ नारकी २ तिर्यंच ३ तिर्यञ्ची ४ मनुष्य ५ मानुषी ६ देव ७ देवी।

जीव के ८ भेद-चार गति के जीवों का पर्याप्ता वा अपर्याप्ता कुल ८।

जीव के ९ भेद-पांच स्थावर और चार त्रस

जीव के १० भेद-पांच जाति के पर्याप्ता व अपर्याप्ता।

जीव के ११ भेद-दश ऊपर के और ११ वा अनिंदिया केवली

जीव के १२ भेद-छकाय के जीवों का पर्याप्त व अपर्याप्त।

जीव के १३भेद-१२ऊपर के १३वां अकाइया सिद्ध भगवान

जीव के १४ भेद-एकेंद्रिय के ४ भेद-(१ सूक्ष्म, २ बादर, ३ पर्याप्त, ४ अपर्याप्त। द्वींद्रिय के २ भेद-(१ पर्याप्ति, २अपर्याप्ति) त्रिन्द्रिय के २ भेद-(१ पर्याप्ति, २ अपर्याप्ति) चउरिंद्रिय के २ भेद-(१ पर्याप्ति, २ अपर्याप्ति) पंचेंद्रिय के ४ भेद-(१ संज्ञी, २ असंज्ञी, ३ पर्याप्ति, ४ अपर्याप्ति) इस प्रकार जीव के कुल १४ भेद हुए हैं।

अजीव तत्त्व के १४ भेद

१ धर्मास्तिकाय के ३ भेद-१ स्कन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। २ अधर्मास्तिकाय के ३ भेद-१ स्कन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। ३ आकाशस्तिकाय के ३ भेद—१ स्कन्ध, २ देश, प्रदेश। ये कुल ९ दसवां काल। पुद्गलास्तिकाय के चार भेद-१स्कन्ध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ परमाणु पुद्गल।

३-पुण्य तत्त्व के ९ भेद

१ अन्नपुण्य, २ पानपुण्य, ३ लयणपुण्य, ४ शयनपुण्य, ५ वस्त्रपुण्य, ६ मनपुण्य, ७ वचनपुण्य, ८ कामपुण्य और ९ नमस्कारपुण्य।

२अजीव तत्त्व-चेतना लक्षण से रहित,प्राण पर्याप्ति से रहित जो जड हो उसे 'अजीव तत्त्व' कहते हैं।

*स्कन्ध-पूरी वस्तु को स्कन्ध कहते है। उसके आधे भाग को देश कहते हैं। अनेक भागमें से किसी एक भाग को प्रदेश और जिसका हिस्सा न हो सके ऐसे सूक्ष्म पुद्गल को परमाणु कहते हैं। पानी में गले नहीं, अग्नि में जले नहीं, वायु में उडे नहीं, चरम चक्षु से नजर आवे नहीं उसे 'परमाणु' कहते हैं।

३ पुण्य तत्त्व-जिसका फल मीठा हो, बांधने में कठिनता, भोगना सुगम और जो धर्म करने में सहायक होवे उसे पुन्य कहते हैं। जैसे रोगी को पथ्य (परहेज) मुश्किल होता है पर पथ्य का सेवन करे तो सुखी होता है।

४-पाप तत्त्व के १८ भेद

१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति-अरति, १७ मायामृषा, १८ मिथ्यादर्शनशल्य।

आश्रव तत्त्व के २० भेद

१ मिथ्यात्व आश्रव, २ अव्रताश्रव, ३ प्रमादाश्रव, ४ कषाय-आश्रव, ५ योगाश्रव, ६ प्राणातिपाताश्रव, ७ मृषावादाश्रव, ८ अदत्तादानाश्रव, ९ मैथुनाश्रव, १० परिग्रहाश्रव, ११ श्रोत्र-इन्द्रियाश्रव, १२ चक्षुइन्द्रियाश्रव, १३ घ्राणेन्द्रियाश्रव, १४ रसनेन्द्रियाश्रव, १५ स्पर्शनेन्द्रियाश्रव, १६ मनोयोगाश्रव १७ वचनयोगाश्रव १८ काययोगाश्रव १९ भण्डोपकरण वस्त्रपात्र अयत्न से ग्रहण करे तो आश्रव २० सूची कुशाग्र मात्र पदार्थ अयत्न से लेवे तथा देवे तो आश्रव।

---

४ पाप-जिसका फल कड़वा लगे। बांधना सुगम भोगना कठिन। जैसे बीमार मनुष्य को कुपथ्य अच्छा लगता है पर कुपथ्य से अंतमें दुःखी होता है। उसे पाप तत्त्व कहते हैं।

५ आश्रव—जीवरूपी तालावमें आश्रवरूपी नालियों से कर्मरूपी पानी आवे उसे आश्रव कहते हैं।

६–संवर तत्त्व के २० भेद

१ सम्यक्त्वसंवर २ व्रतसंवर ३ अप्रमादसंवर ४ अकषायसंवर ५ अयोगसंवर ६ प्राणातिपात विरमणसंवर ७ मृषावाद विरमणसंवर ७ अदत्तादान विरमणसंवर ८ मैथुन विरमणसंवर ६ परिग्रह विरमणसंवर १० । १५ पांचो इन्द्रियों को वश करे तो संवर १६ मन वश करे तो संवर १७ वचन वश करे तो संवर १८ काया वश करे तो संवर १९ भंडोपकरण यत्न से लेवे तथा देवे तो संवर २० सूची कुशाग्रमात्र पदार्थ यत्न से लेवे तथा देवे तो संवर ।

७ निर्जरा तत्त्व के १२ भेद

१ अनशन तप २ ऊनोदरी तप ३ भिक्षाचरी तप ४ रस–परित्याग तप ५ कायक्लेश तप ६ प्रतिसंलीनता तप ७ प्रायश्चित्त तप ८ विनय तप ६ वैयावच्च तप १० स्वाध्याय तप ११ ध्यान तप १२ कायोत्सर्ग तप ।

---

६ संवर–जीवरूपी तालावमें आश्रवरूपी मोरी से कर्मरूपी पानीआवे उसे संवररूपी पट्टेसे रोके उसे संवर तत्त्व कहते हैं।

७ निर्जरा—आत्मा का कर्म वर्गणा से पृथक् होना–जैसे राजहंस पक्षी की चोंच–स्वभाव खट्टा होता है उस चोंचसे दूध और पानी अलग हो जाता है उसी प्रकार जीव रूपी राज-हंस ज्ञानरूपी चोंचसे कर्म को जुदा करे उसे निर्जरा कहते हैं।

८ बंध तत्त्व के ४ भेद

१ प्रकृतिबंध २ स्थितिबंध ३ अनुभागबंध और ४ प्रदेश-बंध।

९ मोक्ष तत्त्व के ४ भेद

१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ तप

१५-पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ

१ द्रव्यात्मा २ कषायात्मा ३ योगात्मा ४ उपयोगात्मा ५ ज्ञानात्मा ६ दर्शनात्मा ७ चारित्रात्मा ८ बल-वीर्यात्मा।

१६-सोलहवें बोले दण्डक २४

१ असुरकुमार २ नागकुमार ३ सुपर्णकुमार ४ विद्युत-कुमार ५ अग्निकुमार ६ द्वीपकुमार ७ दिक्कुमार ८ उदधिकुमार

८-कषाय वश कर्म पुद्गलों का ग्रहण बंध कहलाता है। आत्म-प्रदेशों और कर्म पुद्गलों का संबंध क्षीर-नीर तथा लोहाग्नि की तरह होता है उसे बंध कहते हैं। एक २ जीव के असंख्यात प्रदेश, एक २ प्रदेश पर समय २ अनन्त कर्म वर्गणा का बंध होता है।

मोक्ष-आत्मा का कर्म से सर्वथा छूटना, मोक्ष कहलाता है। ८ कर्म की १४८ प्रकृतियों को क्षय कर शाश्वत भाव को प्राप्त होवे उसे मोक्ष कहते हैं।

१५-आत्मा-जो ज्ञानादि पर्यायों में निरंतर रमण करे उसे आत्मा कहते हैं।

१६-दण्डक-जीवादि के स्वरूप को समझाने वाली वाक्य रचना का नाम दण्डक है।

६ वायुकुमार १० स्तनितकुमार इन दश व्यंतरों के दश दण्डक।
सात नारकियों का एक दण्डक ११; पृथ्वीकाय १ अपकाय १ तेऊकाय का १ वायुकाय का १ वनस्पतिकाय का १ ये पांच स्थावरों के पांच दण्डक, कुल १६। द्वीन्द्रिय १ त्रीन्द्रिय १ चउरिन्द्रिय इन तीन विकलेन्द्रियों के तीन दंडक, १६। पंचेंद्रिय तिर्यंच का एक दंडक, २०। मनुष्य का एक दंडक, २१। वाण व्यंतर का एक दंडक, २२। ज्योतिषी देवों का एक दंडक २३ और वैमानिक देवों का एक दण्डक, २४। कुल २४ दण्डक हुए।

१७–सत्तरहवें बोले लेश्या ६.

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८–अठारहवें बोले दृष्टिएँ ३.

१ सम्यग्दृष्टि २ मिथ्यादृष्टि ३ मिश्रदृष्टि।

१६–उन्नीसवें बोले ध्यान ४.

१ आर्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

१७-लेश्या–योग के और कषाय के संमिश्रण से होने वाले आत्मा और कर्म के बंधन को लेश्या कहते हैं। अथवा मन के शुभाशुभ परिणाम को लेश्या कहते हैं।

१८–दृष्टि–अन्तःकरण की प्रवृत्ति को दृष्टि कहते हैं।

१६–ध्यान-एक वस्तु पर मन आदि योगों को स्थिर करने को ध्यान कहते हैं। छद्मस्थ का मन अन्तर्मुहूर्त तक एक वस्तु पर स्थिर रह सकता है।

बीसवें बोले द्रव्य ६

१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ जीवास्तिकाय, ६ कालद्रव्य ।

१ धर्मास्तिकाय के ५ भेद

१ द्रव्य से एक, २ क्षेत्र से लोक प्रमाण, ३ काल से अनादि अनंत, ४ भाव से अरुपी, ५ गुण से गति लक्षण, चलन गुण सहाय। दृष्टान्त-जैसे पानी के मत्स्य को तैरने में सहायक होता है उसी तरह जीवाजीव को धर्मास्तिकाय चलने में सहायक होता है।

२ अधर्मास्तिकाय के ५ भेद

१ द्रव्य से एक, २ क्षेत्र से लोक प्रमाण, ३ काल से अनादि अनन्त, ४ भाव से अरूपी, ५ गुण से स्थिरगुण सहाय। दृष्टान्त जैसे पथिक को छाया का आधार।

३ आकाशास्तिकाय के ५ भेद

१ द्रव्य से एक, २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनंत, ४ भाव से अरूपी, ५ गुण से अवकाश देने का स्वभाव दृष्टांत जैसे दूध में मीठा मिल जाता है उसी तरह आकाश में अवकाश देने का गुण है।

२०-द्रव्य-उत्पन्न होना, नाश होना और स्थिर रहना ये तीनों वस्तु जिसमें हों उसे 'द्रव्य' कहते हैं। 'उत्पाद, व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्'

४ पुद्गलास्तिकाय के ५ भेद

१ द्रव्य से अनंत, २ क्षेत्र से लोक प्रमाण, ३ काल से अनादि अनंत, ४ भाव से रूपी, ५ गुण से सड़ना, मिलना, अलग होना, गलना, दृष्टांत–आकाश में पांचों वर्ण के बादल।

५ जीवास्तिकाय के ५ भेद

१ द्रव्य से जीव अनन्त, क्षेत्र से (चौदह राजु प्रमाण) लोक प्रमाण, ३ काल से अनादि अनन्त, ४ भाव से अरूपी, ५ गुण से चेतना लक्षण–जैसे मन्दिर में दीपक वैसे शरीर में जीव।

६ काल द्रव्य के ५ भेद

१ द्रव्य से अनन्त, २ क्षेत्र से अढ़ाईद्वीप प्रमाण, ३ काल से अनादि अनन्त, ४ भाव से अरूपी, ५ गुण से वर्तना लक्षण। काल द्रव्य–पदार्थों की अवस्थाएँ बदलती हैं। दृष्टांत-घटमाल तथा रात दिन।

२१ इक्कीसवें बोले राशि २

१ जीवराशि, २ अजीवराशि।

२२ बाईसवें बोले श्रावक के १२ व्रत

१ निरपराधी स्थूल-त्रस जीवों की हिंसा का त्याग,

२१–राशि–वस्तु के समूह को राशि कहते हैं।

२२–व्रत-मर्यादा में चलने का नाम व्रत है।

२ स्थूल मृषावाद का त्याग, ३ स्थूल अदत्तादान का त्याग, ४ स्वदारसंतोष तथा वेश्या और परस्त्री का सर्वथा त्याग ५ परिग्रह की मर्यादा, ६ छः दिशाओं में जाने का प्रमाण, ७-२६ बोलों की मर्यादा तथा कर्मादानों का त्याग, ८ अनर्थ-दण्ड का त्याग, ९ काल के काल सामायिक, १० संवर, ११ पर्व में पौषधोपवास, १२ अतिथि संविभाग।

२३ तेइसवें बोले साधु के ५ महाव्रत

१ प्राणातिपात-हिंसा करे नहीं, कराए नहीं, करते की अनुमोदना न करे मन वचन और काया से।

२ मृषावाद-असत्य बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलते की अनुमोदना न करे, मन वचन और काया से।

३ अदत्तादान-चोरी करे नहीं, करावे नहीं करते का अनुमोदना न करे मन वचन और काया से।

४ मैथुन-कुशील सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवन करने की अनुमोदना न करें मन, वचन और काया से।

५ परिग्रह-मूर्च्छा करे नहीं, कराए नहीं, करने की अनु-मोदना करे नहीं मन, वचन और काया से।

१३-महाव्रत-हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील और परिग्रह के सर्वथा त्याग को महाव्रत कहते है।

२४ वें बोले भागा ४९

अक ११ का भंग ९ एक करण एक योग से कहना। जैसे १ करूं नहीं मनसा, २ करूं नहीं वयसा, ३ करूं नहीं कायसा, ४ कराऊं नहीं मनसा. ५ कराऊं नहीं वयसा, ६ कराऊं नहीं कायसा, ७ अनुमोदूं नहीं मनसा, ८ अनुमोदूं नहीं वयसा, ९ अनुमोदूं नहीं कायसा।

इन नव भंगो की ८१ सेरियें (भेद) होते हैं। जिसमें प्रत्याख्यान करने वाले की नव सेरी बन्ध हो जाती है। ७२ खुली रहती है। इसका वोध इस दिए हुए यन्त्र से कीजिए:–

करण १	योग १से	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं	मनसा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं	मनसा	०	०	०	१	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं	वयसा	०	०	०	०	१	०	०	०	०
कराऊं नहीं	कायसा	०	०	०	०	०	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं	मनसा	०	०	०	०	०	०	१	०	०
अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	०	०	०	०	०	०	१	०
अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	०	०	०	०	०	०	१

२४–विभागरूप रचना का नाम 'भंग' है।

१ करण ३ योग से	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	०	०	०
कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ,,	०	०	०	०	०	०	१	१	१

अक एक २१ का भांगे ९। दो करण एक योग से कहने चाहिए जैसे कि १ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा, ३ करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, ४ करूं, नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा, ६ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, ७ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा, ९ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा।

इसकी ८१ सेरिएं हैं जिसमें १८ रुक जाती हैं और ६३ खुली रहती हैं।

२ करण १ योग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं कराऊ नहीं मनसा	१	०	०	१	०	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा	०	१	०	०	१	०	०	०	०
करू नहीं कराऊं नहीं कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा	१	०	०	०	०	०	१	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा	०	१	०	०	०	०	०	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा	०	०	१	०	०	०	०	०	१
कराऊ नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा	०	०	०	१	०	०	१	०	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा	०	०	०	०	१	०	०	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा	०	०	०	०	०	१	०	०	१

अक एक २२ का भांगे ६। दो करण दो योग से कहने चाहिए। १ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा ३ करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा कायसा ४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ६ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ७ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ८ कराऊं नहीं अनुमोदूं नही मनसा कायसा ९ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा।

एक भंग की ६ सेरीयों में से ४ रुकी और ५ खुली रहती है। इस गणना अनुसार नव भांगों की ३६ रुक जाती है और ४५ खुली रहती हैं।

दो करण	दो योग	१	२	३	४	५	६	७	८	६
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा वयसा	१	१	०	१	१	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा कायसा	१	०	१	१	०	१	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	वयसा कायसा	०	१	१	०	१	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा	१	१	०	०	०	०	१	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा कायसा	१	०	१	०	०	०	१	०	१
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा कायसा	०	१	१	०	०	०	०	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा	०	०	०	१	१	०	१	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा कायसा	०	०	०	१	०	१	१	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा कायसा	०	०	०	०	१	१	०	१	१

अक एक २२ का दो करण ३ योग से करना चाहिए। १ करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा २ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा ३ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा।

इसकी कुल सेरियां २७ हैं जिनमें ६ खुली है १८ रुकी हुई हैं।

२ करण	३ योग से	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	१	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नही	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	१	१	१

अंक एक ३१ का भांगे ३-तीन करण एक योग से कहना। १ करूं पहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नही मनसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा ३ करुं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा।

कुल २७ सेरियां हैं। रुकी हुई ९ हैं खुली १८ है।

तीन करण	एक योग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं	नही मनसा	१	०	०	१	●	०	१	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं	नही वयसा	०	१	०	०	१	०	०	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं	नहीं कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	१

अक १ ३२ का भांगे ३। तीन करण दो योग से कहना चाहिए। १ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा। २ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नही मनसा कायसा। ३ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा।

इसकी कुल ३ भंग की २७ सेरियां है। १८ रुकी हुई है और ६ खुली है।

तीन करण	दो योग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा	१	१	०	१	१	०	१	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा कायसा	१	०	१	१	०	१	१	०	१
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा कायसा	०	१	१	०	१	१	०	१	१

अंक ३३ का भंग १। तीन करण तीन योग से कहना चाहिए। १ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा।

इसकी ९ सेरियां हैं, सब की सब रुकी हुई हैं। खुली १ भी नहीं है।

तीन करण	तीन योग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	१	१	१

२५- पच्चीसवें बोले चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

चारित्रमोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाले विरति परिणाम को तथा कर्मों के नाश करने वाले को चारित्र कहते हैं।

श्री साधु--वन्दना

नमु अनंत चोवीशी, ऋषभादिक महावीर,

आर्य क्षेत्रमां घाली धर्मनी मीर ॥ १ ॥

महा अतुल्य बलि नर, शूरवीर ने धीर,

तीर्थ प्रवर्त्तावी पहोंच्या भवजल तीर ॥ २ ॥

श्रीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीश,

छे अढी द्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥

एक सो ने सीतेर, उत्कृष्ट पदे जगीश,

धन्य म्होटा प्रभुजी, जेहने नमावुं शीश ॥ ४ ॥

केवली दोय कोडी, उत्कृष्ट नव क्रोड.

मुनि दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट नवसहस्र क्रोड ५

विचरे विदेहे, म्होटा तपस्वी घोर,

भावे करी वंदु, टाले भवनी खोड ॥ ६ ॥

चोवीशे जिनना सघला ए गणधार,

चउदसें ने बावन, ते प्रणमु सुखकार ॥ ७ ॥

जिनशासन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद,

गौतमादिक गणधर वर्त्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥

श्री ऋषभदेवना भरतादिक सो पूत,

वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भूत ॥ ९ ॥

केवल उपराजी, करि करणी करतूत,

जिनमत दिपावी, सघला मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥

श्री भरतेश्वरना, हुआ पटोधर आठ,
आदित्य जशादिक, पहोंच्या शिवपुर वाट ११.
श्री जिन अतरना हुआ पाट असंख्य,
मुनि मुक्ति पहोंच्या, टाली कर्मनो वक ॥ १२ ॥
धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमुं अणगार,
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार १३
मुनिवर हरिकेशी, चित्त मुनीश्वर सार,
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥
वली इखुकार राजा, घेर कमलावती नार,
भृगु ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥
छये छती रिद्धि छांडीने, लीधो संयम भार,
इम अल्पकालमां: पाम्या मोक्षद्वार ॥ १६ ॥
वली संयति राजा, हरण आहिडे जाय,
मुनिवर गर्दभाली, आणयो मारग ठाय ॥ १७ ॥
चारित्र लइने, भेट्या गुरुना पाय,
क्षत्रीराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय १८
वली दशे चक्रवर्ति, राज्य रमणी ऋद्धि छोड,
दशे मुक्ति पहोंच्या, कुल ने शोभा चहोड ॥ १६ ॥
इण अवसर्पिणी मां आठ राम गया मोक्ष,
बलभद्र मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक ॥ २० ॥
दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरी मान,
पछे इंद्र हटायो, दियो छकाय अभेदान ॥ २१ ॥

करकंडु प्रमुख चारे प्रत्येक बोध,
मुनि मुक्ति पहोंच्या जीत्या कर्म महाजोध ॥२२॥
धन्य म्होटा मुनिवर मृगापुत्र जगीश,
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश ॥ २३ ॥
वली समुद्रपाल मुनि राजिमती रहनेम,
केशी ने गौतम पाम्या शिवपुर चेम ॥ २४ ॥
धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वली जाण,
श्री गर्गाचार्य पहोंच्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥
श्री उत्तराध्ययन मां जिनवरे कर्या वखाण,
शुद्ध मनसे ध्यावो, मनमें धीरज आण ॥ २६ ॥
वली खंधक संन्यासी राख्यो गौतम स्नेह,
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥
तप कठिन करीने झौंशी आपणी देह,
गया अच्युत देवलोके चवी लेशे भव छेह २८.
वली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार,
शिवराज ऋषीश्वर धन्य गांगेय अणगार ॥२९॥
शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार,
ए चारे मुनिवर, पहोंच्या मोक्ष मोझार ॥ ३० ॥
भगवंत नी माता, धन्य धन्य सती देवानंदा,
वली सती जयंति छोडी दिया घर फंदा ॥३१॥
सती मुक्ति पहोंच्या, वली ते वीरनी नंद,
महासती सुदर्शना घणी सतियो ना वृंद ॥३२॥

वली कार्तिक सेठ, पडिमा वही शुरवीर,

जम्यो महोरा उपर, तापस बलती खीर ॥ ३३ ॥

पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्त्र आठ धीर,

मरी हुआ शक्रेन्द्र, चवी लेशे भव तीर ॥ ३४ ॥

वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज,

पछी चारित्र लइने, सार्या आतम काज ॥ ३५ ॥

गंगदत्त मुनि आनंद तरण तारण जहाज,

कुशल मुनि रोहो दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥

धन्य सुनक्षत्र मुनिवर सर्वानुभूति अणगार,

आराधिक हुइने गया देवलोक मोझार ॥ ३७ ॥

चवि मुक्ति जाशे, वली सिंह मुनीश्वर सार,

बीजा पण मुनिवर भगवती मां अधिकार ॥ ३८ ॥

श्रेणिक ना बेटा मरोटा मुनिवर मेघ,

तजी आठ अतेउरी आण्यो मन संवेग ॥ ३९ ॥

वीर पें व्रत लइने, बांधी तपनी तेग,

गया विजय विमाने, चवि लेशे शिव वेग ॥ ४० ॥

धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रीसे नार,

तेनी साथे निकल्या पुरुष एक हजार ॥ ४१ ॥

शुकदेव संन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार,

पंचशयसु सेलक, लिधो संजम भार ॥ ४२ ॥

सर्व [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] नार,

पुंडरगिर उपर, किधो पादोपगमन संथार ४३.

आराधिक हुइने, किधो खेवो पार,
हुवा मोटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार ॥ ४४ ॥
धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धनावा साध,
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जाशे आराध ॥४५॥
श्री मल्लिनाथना छ मित्र महाबल प्रमुख मुनिराय,
सर्व मुक्ति सीधाव्या, म्होटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥
वली जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान,
पोते चारित्र लइने पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥
धन्य तेतलि मुनिवर, दियो छकाय अभेदान,
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान ॥ ४८ ॥
धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी नार,
स्थिवरनी पासे, लीधो संयम भार ॥ ४९ ॥
श्री नेमि वदननो, एहवो अभिग्रह कीध,
मास मास खमण तप, शेत्रुंजय जई सिद्ध ५०.
धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार,
किडियोनी करुणा, आणी दया अपार ॥ ५१ ॥
कडवा तुंबानो कीधो सघलो आहार,
सर्वार्थसिद्ध पहोंच्या चवि लेशे भवपार ॥ ५२ ॥
वली पुंडरिक राजा कुंडरीक डगीयो आज,
पोते चारित्र लइने, न घाली धर्ममां जाण ॥५३॥
सर्वार्थसिद्ध पहोंच्या चवि लेशे निर्वाण,
श्री ज्ञातासूत्रमां जिनवरे कर्या वखाण ॥ ५४ ॥

गौतमादिक कुमार सगा अठारे भ्रात,
सर्वे अधक विष्णु सुत धारणी ज्यारी मात ५५.
तजी आठ अंतेउरी काढी दीक्षानी वात,
चारित्र लइने, कीधो मुक्तिनो साथ ॥ ५६ ॥
श्री अनेक सेनादिक, छये सहोदर भाय,
वसुदेवना नंदन, देवकी ज्यारी माय ॥ ५७ ॥
भद्दीलपुर नगरी नाग गाहावइ जाण,
सुलसा घेर वधिया सांभली नेमिनी वाण ॥५८॥
तजी बत्रीस २ अंतेउरी निकलिया छट्काय,
नल कुबेर समाणा, भेट्या श्री नेमिना पाय ॥५९॥
करी छठ छठ पारणां मनमें वैराग्य लाय,
एक मास संथारे मुक्ति बीराज्या जाय ॥ ६० ॥
वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराज,
वली कुमर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय ॥६१॥
वसुदेव ना नंदन धन्य धन्य गजसुकुमाल,
रूपे अति सुंदर कलावंत वय बाल ॥ ६२ ॥
श्री नेमि समीपे छोड्यो मोह जंजाल,
भिखुनी पडिमा, गया मसाण महाकाल ॥ ६३ ॥
देखी सोमिल कोप्यो मस्तके बांधी पाल,
खेरना खीरा, सीर ठविया असराल ॥ ६४ ॥
मुनि नजर न खंडी मेटी मननी झाल,
परीसह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ॥ ६५ ॥

धन्य जाली मयाली उवयालादिक साध,
सांव ने प्रद्युमन अनिरुद्ध साधु अगाध ॥ ६६ ॥
वली सच्चनेमी दृढनेमी करणी कीधी वाद,
दशे मुनि सुगते पहोंच्या, जिनवर वचन आराध६७
धन्य अर्जुनमाली कर्यो कदाग्रह दूर,
वीर पे व्रत लइने, सत्यवादी हुआ शूर ॥ ६८ ॥
करी छठ छठ पारणां क्षमा करी भरपूर,
छमास मांहि कर्म किया चकचूर ॥ ६९ ॥
कुमार अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम,
सुणी वीरनी वाणी, कीधां उत्तम काम ॥ ७० ॥
चारित्र लइने पहोंच्या शिवपुर ठाम,
धूर आदि मकाइ, अंत अलक्ष मुनि नाम ॥७१॥
वली कृष्णरायनी अग्रमहिषी आठ,
पुत्र वहु दोये संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥
यादव कुल सतियां टाली दुःख उचाट
पहोंच्या शिवपुर में ए छे सूत्रनो पाठ ॥ ७३॥
श्रेणिकनी राणी कालियादिक दश जाण,
दशे पुत्रवियोगे सांभली वीर नी वाण ॥ ७४ ॥
चंदनवाला पे संजम लेइ हुआ जाण,
तप करी देह झोशी पहोंत्या छे निर्वाण ॥ ७५ ॥
नंदादिक तेरे श्रेणिक नृप नी नार
सघली चंदनवाला पे लीधो संजम भार ॥ ७६ ॥

एक मास संथारे, पहोंच्या मुक्ति मोझार

ए नेहुं जणानो, अंतगड मां अधिकार ॥ ७७ ॥

श्रेणिकना बेटा जालियादिक तेवीस,

वीर पें व्रत लेइने पाल्यो विश्वावीश ॥ ७८ ॥

तप कठण करीने पूरी मन जगीश,

देवलोके पहोंच्या, मोक्ष जाशे तजी रीस ॥७९॥

काकंदीनो धन्नो तजी बत्रीसे नार,

महावीर समीपे लीधो संजम भार ॥ ८० ॥

करी छठ छठ पारणा आयंबिल उछीत्त आहार,

श्री वीरे वखाण्या धन्य धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥

एक मास संथारे सर्वार्थसिद्ध पहोंत,

महाविदेह क्षेत्रमां करशे भवनो अंत ॥ ८२ ॥

धन्नानी रीते हुआ नवे संत,

श्री अनुत्तरोववाइमां भाखी गया भगवंत ॥८३॥

सुबाहु प्रमुख, पांच पांचसे नार,

तजी वीरपै लीधां पंच महाव्रत सार ॥ ८४ ॥

चारित्र लेइने, पाल्यो निरतिचार.

देवलोके पहोंच्या सुखविपाके अधिकार ॥ ८४ ॥

श्रेणिकना पौत्रा पद्मादिक हुआ दस.

वीर पे व्रत लेइने काढ्यो देहनो कस । ८६ ॥

संयम आराधी देवलोक मां ऊपना दश,

महाविदेह क्षेत्रमां मोक्ष जाशे लेइ जश । ८७ ॥

बलभद्रना नंदन निषधादिक हुआ बार,
तजी पचास अंतेउरी, त्याग दियो संसार ।।८८।।
एह नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध,
सर्वार्थसिद्ध पहोंत्या, होशे विदेह सिद्ध ॥ ८९ ॥
धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरो नी जोड़,
नारी ना बन्धन, तत्क्षण नांख्या तोड़ ॥ ९० ॥
घर कुटुम्ब कबीलो धन कंचननी क्रोड़,
मास मासखमण तप, टालशे भवनी खोड ।।९१।।
श्री सुधर्मा स्वामीना शिष्य, धन्य २ जंबु स्वाम,
तजी आठ अंतेउरी, माता-पिता धनधाम ।।९२।।
प्रभवादिक तारी पहोंच्या शिवपुर ठाम ।
सूत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥ ९३ ॥
धन्य ढंढण मुनिवर कृष्णरायना नंद,
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ।।९४।।
वली खन्धक ऋषिनी देह उतारी खाल,
परीसह सहीने भव फेरा दिया टाल ॥ ९५ ॥
वली खन्धक ऋषिना हुआ पांचसे शिष्य,
घाणीमां पील्या मुक्ति गया तजी रीस ।। ९६ ।।
संभूति विजय शिष्य भद्रबाहु मुनिराय,
चउद पूर्वधारी चन्द्रगुप्त आणयो ठाय ।। ९७ ।।
वली आर्द्रकुमार मुनि स्थूलिभद्र नंदिषेण,
अरणिक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी श्रेण ॥ ९८ ॥

चौवीसे जिननां मुनिवर संख्या अठावीस लाख,

ऊपर सहस्र अड़तालीस सूत्र परंपरा भाख ॥९९॥

कोइ उत्तम वांचो मोढे जयणा राख,

उघाडे मुख बोल्यां, पाप लागे इम भाख ॥१००॥

धन्य मरुदेवी माता ध्यायुं निर्मल ध्यान,

गज होदे पायुं निर्मल केवलज्ञान ॥ १०१ ॥

धन्य आदेश्वरनी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी दोय,

चारित्र लेइने मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥ १०२ ॥

चोवीस जिननी वडी शिष्यणी चोवीस,

सती मुक्ति पहोंच्या पूरी मन जगीश ॥ १०३ ॥

चोवीसे जिननी सर्वे साध्वी सार,

अड़तालीस लाख ने आठसें सीत्तेर हजार ॥१०४॥

चेडानी पुत्री राखी धर्मशुं प्रीत,

राजिमती विजया, मृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥

पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयंती सीत,

इत्यादिक सतियों गई जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥

चोवीसे जिनना साधु साध्वी सार,

गया मोक्ष देवलोके हृदय राखो धार ॥ १०७ ॥

इण अढाई द्वीपमां घरडा तपसी बाल,

शुद्ध पंच महाव्रत धारी नमो ने तिहुं काल ॥१०८॥

ए जतियों सतियों ना लीजे नित प्रति नाम,

शुद्ध मने ध्यावो एह तरण नो ठाम ॥ १०९ ॥

ए जतियो सतियो शुं राखो उज्ज्वल भाव
एम कहे रषि जेमलजी एह ज तरणनो दाव ॥११०॥
संवत अठार ने वरस सातो शिरदार
गढ जालोर मां एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥
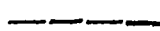
श्री बृहच्छान्ति स्मरण

भो भो भव्याः। शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि—प्रभावा—
दारोग्य-श्री-धृति- मतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥

भो भो भव्य लोकाः। इह हि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः, सुघोषाघण्टा चालनान्तरं सकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा,गत्वा कनकाद्रि-शृंगे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं कृतानुकार मिति कृत्वा 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति, भव्यजनैः सह समेत्य, कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोके-श्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ।

ॐ ऋषभ-अजित-सम्भव-अभिनंदन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि शीतल-श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत धर्म-शांति-कुंथु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि पार्श्व-वर्द्ध-मानान्ता जिनाः शान्ताः शांतिकरा भवंतु स्वाहा।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-दुर्भिक्ष-कांतारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-मति-कीर्ति-कांति-बुद्धि-लक्ष्मी मेधा विद्या-साधन-प्रवेशन-निवेशनेषु सुगृहीत नामान्ते जयतु ते जिनेंद्राः।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृङ्खला-वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता काली-महाकाली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा महाज्वाला, मानवी-वैरोट्या-अच्युता-मानसी-महामानसी षोडश विद्या देव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसङ्घस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।

ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर राहु केतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवा-ऽऽदित्य स्कन्द-विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्राम नगर-क्षेत्र-देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां, अक्षीण कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत्-स्वजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग-सहिता नित्यं चाऽऽमोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डलाय-

तत्र निवासि साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु।

ॐ तुष्टि पुष्टि-ऋद्धि वृद्धि-माङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्याऽमराधीशमुकुटाभ्यर्चितांङ्घ्रये॥१॥
शान्तिः शांतिकरः श्रीमान्,शांति दिशतु मे गुरुः।
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे॥२॥
उन्मृष्ट रिष्ट-दुष्टग्रहगति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि।
सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः॥३॥
श्री सङ्घजगज्जनपद-राजाधिप-राजसन्निवेशानाम्।
गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ४

श्री श्रमणसङ्घस्य शांतिर्भवतु, श्री पौरजनस्य शांतिर्भवतु श्री जनपदानां शांतिर्भवतु, श्री राजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्री राजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्री गोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्री पौरमुख्याणां शांतिर्भवतु, श्री ब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्,कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके॥
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः॥२॥

अहं तित्थयर माया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥ ३ ॥
स्वाहा उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥

सर्व मङ्गल-माङ्गल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

मंगलाचरण

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥ १ ॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः ।
वीरे श्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः श्री वीर! भद्रं दिश ॥

ब्राह्मी चन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ।
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मावत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥ ३ ॥

संसार दावानल दाहनीरं, संमोह धूलीहरणे समीरम् ।
मायारसा दारण सार सीरं, नमामि वीरं गिरि सार धीरम् ॥ ४

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।

तिजयपहुत्त–स्मरण स्तोत्रम्

तिजयपहुत्तपयासय, अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं ।
समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो।
नासेउ सयलदुरिअ, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥
वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअरक्खसाइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥
सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलण हरिकरि—चोरारि महाभयं हरउ ॥४॥
पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥
ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः।
आलिहिय नामगब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ॥ ६ ॥
ॐ रोहिणि पन्नत्ति, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ।
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गौरी ॥ ७ ॥
गंधारि महजाला, माणवी वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता ।
माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥
पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्न सत्तरि जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो—वसोहिअ हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥
चउतीस अइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं।
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥स्वाहा॥११॥
ॐ भवणवइवाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥१२॥
चन्दणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं।
एगंतराइगहभूअ,—साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥
इअ सत्तरिसयजंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं।
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथस्य मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः।
नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥
सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः।
सर्वसत्त्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥
देवदेवः स्वयंसिद्धः, चिदानन्दमयः शिवः।
परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥
जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥
सर्वज्ञः सर्वदेवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः।
सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥
तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः।
परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥

अजः सनातनः शंभु—रीश्वरश्च सदाशिवः ।
विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥
साकारश्च निराकारः सकलो निष्कलोऽव्ययः ।
निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥
अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः ।
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥
ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ।
ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥
दिव्यतेजोमयः शान्तः, परमामृतमयोऽच्युतः ।
आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥
शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयम्भूः परमाच्युतः ।
सोमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनः स्थितिः ।
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ।
भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्री-सौख्यदायकः १४.
इतिश्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ।
दिव्यमष्टोत्तरं नाम, शतमत्रप्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥
पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ।
मुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मंगलप्रदम् ॥ १६ ॥
श्रीमत्परमकल्याण-सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तु वः ।
पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः १७.

ऋद्धि-सिद्धि-महाबुद्धि-धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ।
मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपन्नानन्दितो जनः ॥ २९ ॥
सर्वकल्याणपूर्णः स्या-ज्जरामृत्युविवर्जितः ।
अणिमादि महासिद्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥३०॥
प्राणायाममनोमंत्र, योगादमृतमात्मनि ।
त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा,स्वामिन्! सिध्यंति जन्तवः३१
हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ।
पातु वः परमानन्द, लक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥
तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं,—सर्वमंगलसिद्धिदम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्य प्राप्नोति स श्रियम् ३३.

सदना--कसाई

दोहा

सोमवार उस साहिबनूं, ते हरदम करिए याद ।
ज्ञान जिदा प्रकाश है, सभी जगत में आद ॥ १ ॥
अनेक जीव और जानवर, पैदा हुए इन्सान ।
सबको तेरी पहचान है, ए गल निश्चय जान ॥ २ ॥

कवित्त

सुनो इक जो कहानी, जेडी मन मेरे आनी ।
कहना अपनी जबानी, जरा धरके कयास को ॥
है सी सदना-कसाई, किसे शहर रहंदा सांई ।
जिस भक्ति उसने पाई, रख मन बीच मासको ॥

हुक्म जो बदले राजा दा मारे विना कसूर ।
टुर चल मेरे नाल तूं पेश करूं हजूर ॥ २ ॥

कवित्त

नौकर जो दबकान्दा, सदना बहुत लज्जा पांदा।
दिलों फिकर नूं दौड़ांदा हुन करांकी तदबीर जी।
प्यारे कित्थो मांस आवे, तब नौकर घरों जावे।
जान मेरी फुर्सत पावे, बहुत होगया दलगीर जी॥
कदे कहंदा हो लाचार, चला रूबरु सरकार ।
ओत्थे करूंगा पुकार, बख्शो मेरी तकसीर जी ॥
कदे कहंदा नौकर ताईं, मेरे पास मांस नाहीं ।
सचो सच तूं सुनाईं, चाहिए कितना आखीर जी ॥

दोहा

वीरवार फिर नफर ने कहा कसाई पास ।
राजा गया शिकार नूं होई न दिल की आस ॥ १ ॥
ात आधी स गुजरगई आया महलीं खास ।
हुक्म दिया फिर मुझको, पाव भर ल्यावो मांस २.

कवित्त

गल सदना विचारे, कि दलील दिलों धारे ।
केहड़ा बकरे नूं मारे, कि पतालू लेवां कड्डके ॥
मनों सोची ए तदबीर, फड़्या नकरा आखीर।
कहे पतालू लेवां चीर, मुश्कावन्ध नीचे सिटके ॥

एहों समझ के खयाल दिने करांगा हलाल ।
हुन तां राजा दा सवाल, पूरा करूं झटपट के ॥
लगा छुरी वो चलान, ओमी बकरा हैवान ।
बोली उसदी ज़बान, जेहड़ी वसे घट २ में ॥

दोहा

हंसकर बोले बकरा सुनो कसाई यार ।
अब मुझपर माफी करो हो गए जन्म हज़ार ॥
इतनी कहकर बकरा रोवे ज़ारो ज़ार ।
एस कसाई पास तो बख्श लई करतार ॥

कवित

आया शुक्रवार होया सदना हैरान अते फिर दर ध्यान ।
लगा अकल नु दौड़ान, एथे केहड़ा पशु बोलदा ॥
करे दलीलां हज़ार, कहन्दा कौन है तूं यार ।
दई सामने दीदार, क्यों नहीं सारा भेद खोलदा ॥
फिर फिरया ए खयाल, ए जो बकरा है पास ।
एहो बोलदा है खास, होर कोई नहीं बोलदा ॥
कहन्दा रखके निशान, ए जो पशु है हैवान ।
एदी बोलदी जबान, हुण सुण सारे खोलदा ॥

दोहा

[illegible] कसाई फेर ।
दोनों जगा न दूसरे [illegible] नाई देर [illegible]

पहले हस्यो फिर रोओ, इसदा दई जवाब।
भेद क्या है विच गलदे कह देर रत्नतान॥

कवित्त

बकरा बोले उसदम, हस्या देख तेरे कम्म।
लगा लाहन मेरा चम्म, रोया अपने में दुःखनूं॥
जीउन्दा मिट्टी निच गड्डु ते, पतालूं मेरे वड्डुं।
रात तडफ रेनूं छड्डु, लोग लभदे ने सुखनूं॥
मैनूं कोहदा आयो याद, मैं भी कोहया कई वार।
जन्म हो ए हैं हजार, देव जरा मांदी कुखनूं॥
भाजी नवीं लाग्यो पान, अक्सर मैं भी इस जहान।
बदला लेवूं दूना आन, वुकल पाक देख मुखनूं॥

दोहा

ऐत अल्लानूं याद कर सदन कसाई जान।
रो २ विच दरगाहदे लगा गुनाह वक्सान॥
नक जमीं पे रगड़दा तोवा तोवा करे।
या रब आगे मेरे से कोई न जीव मेरे॥

कवित्त

यह कसाई लिआ धार दिलों करके विचार
एह तो मंदी वहुत कार दीना छोड़ घरवार जी
उदासी कीता ऐसा जिच्च जाके जंगलाने विच्च
दिल अपनेनु खिच्च छोड़े अग साक यारजी

प्रेम-प्याला

सुबह शाम जिस को तेरा ध्यान होगा,
बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा ।
उसी को तो हरदम लगन तेरी होगी,
जिसका कि पुण्य उदयमान होगा ॥
जिसने भी हृदय में तुझ को टटोला,
लगा खाक तन पर क्यों हैरान होगा ।
तेरे नाम से जो भी गाफ़िल रहेगा,
समझ तो बड़ाही वह नादान होगा ॥
जिस जा भजन हर घड़ी तेरा होगा,
वैकुण्ठ साही वह अस्थान होगा ।
तू बेचैन मत हो यह पी प्रेम प्याला,
इसे वह पीए जो कद्रदान होगा ॥

जय हो

जय हो, जय हो, सदा भगवान महावीर प्यारे,
जय हो श्री मातेश्वरी त्रिशला के दुलारे ।
जब देश में अन्याय अत्याचार बढ़ गये,
अवतार लेकर नाथ तभी आप पधारे ॥ जय हो ॥
कुण्डलपुरी की खेतियां सब लह लहा उठी,
भूतल पै उतर आए फिर स्वर्गों के नज़ारे ॥जय हो॥

सिद्धार्थ राजा के मनोरथ हो गए पूरे,
और जाग उठे एकदम फिर भाग्य हमारे ॥जय हो॥
रह करके तीस वर्ष तक आदर्श गृहस्थी,
बिगडे हुए संसार के सब काज संवारे ॥ जय हो॥
देखा दुःखी जो देश तो दिल तिलमिला उठा,
त्यागी बने और धार लिये नेम करारे ॥ जय हो ॥
उत्कृष्ट तपक्रिया से ब्रह्म—ज्ञान पा लिया,
सह २ के कष्ट देश के सब कष्ट निवारे ॥ जय हो ॥
यज्ञों के हिंसा—काण्ड की हिंसा को मिटाया,
फिर बज उठे दुनियामें अहिंसा के नक्कारे ॥जय हो॥
ब्यालीस (४२) वर्ष संयमी व्रत पालके श्रमण,
पावापुरी में नाथ जा निर्वाण सिधारे ॥ जय हो ॥

प्रभु-गीत गा ले

[illegible] अरे ओ [illegible], पास [illegible] के [illegible],
दिल [illegible], आजा, प्रभु गीत गा ले।
तू ने मुश्किल से नर-जन्म पाया,
फिर भी बदियों में तू क्यों लुभाया
मिथ्या अभिमान के, पाप [illegible] तजके, [illegible] आजा।
दीन दुखिया कोई दर पे [illegible],
[illegible]
[illegible] धर्म में [illegible], [illegible] आजा।

अपने जीवन का मैल हटाले,
ज्ञान—गंगा में गोते लगाले,
कष्ट कट जावेंगे पाप छूट जावेंगे नाम ध्याले ॥ आ जा ॥
कर सके कर तू सब की भलाई,
कर न अमृत किसी बुराई,
सत्य के नेम के, पुण्य के प्रेम के, पीले प्याले ॥ आ जा ॥

जीवन सफल बनाले

पल २ वीते उमरिया, मस्त जवानी जाए,
प्रभु-गीत गाले, गाले, प्रभु गीत गाले ।
प्यारा २ बचपन पीछे खो गया, खो गया,
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया, हो गया ।
बार २ नहीं पावेरे, गंगा है बहती प्यारे,
मौका है न्हाले २ प्रभु—गीत गाले ॥ १ ॥
कैसे कैसे बांके जगके हो गए, होगए,
खेल २ कर अन्त यहीं पर सोगए सोगए ।
कोई नज़र नहीं आवे रे पंछी रे फूल रंगीले,
मुर्झाने वाले गाले प्रभु गीत-गाले ॥ २ ॥
तेरे घर में माल मसाले होते है, होते हैं,
भूखके मारे कई विचारे रोते है, रोते हैं ।
उनकी कौन खबर ले रे, जिनके नहीं तन पे कपड़ा,
रोटियों के लाले लाले, प्रभुगीत गाले ॥ ३ ॥

परिशिष्ट—भाग

सुख प्राप्ति के लिए निम्नोक्त पंचपरमेष्ठी का मंत्र पूर्व दिशा सम्मुख बैठकर कमसे कम एक दिन में १०८ बार अवश्य जपे।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व—साहूणं ॥

इच्छित कार्यसिद्धि करने के लिए निम्नोक्त चंद्रप्रज्ञप्ति का चमत्कार पूर्ण मन्त्र पांच बार नित्य जपे।

नमिऊण असुर सुर, गुरुल—भुयंग परिवंदिए ।
गयकिलमे अरिहे.सिद्धायरिय उवज्झायं सव्वसाहूणं॥

महान् सुख प्राप्ति के लिए निम्नोक्त महान् मंत्र नवपदजी उत्तर दिशा सम्मुख बैठकर १२१ बार सोते वक्त जपे।

ॐ ह्रीं श्रीं णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं श्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्री श्री णमो उवज्झायाणं ॐ ह्री श्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्री श्रीं णमो णाणस्स ॐ ह्री श्रीं णमो दंसणस्स ॐ ह्री श्रीं णमो चरित्तस्स ॐ ह्रीं श्रीं णमो तवस्स ॥

॥ सारस्वती महाविद्या ॥

ॐ ह्रीं चउदसपुव्विणं ॐ ह्री पयाणुसारिणं ॐ ह्रीं

एगारसंगधारिणं ॐ ह्रीं उज्जुमइणं ॐ ह्रीं विपुलमइणं स्वाहा ॥

यह महाविद्या 'तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात् एषो योगः फलतु' ऐसा एक बार बोलकर सदा जपें, छ महिने तक १०८ बार पढ़ते रहे तो अक्ल तेज हो, याददाश्त बढ़े, जो जो विद्या सीखना चाहे जल्दि सीख सके और सभा में व्याख्यान दे सके।

श्री संपादन महा-विद्या

ॐ ह्रीं बीय बुद्धिणं ॐ ह्रीं कुट्ठ बुद्धिणं ॐ ह्रीं संभिण्णसोयाणं । ॐ ह्रीं अक्खीण महाणस लद्धिणं सव्व लद्धिणं नमः स्वाहा ॥

यह महा-विद्या अष्टम-तप (तेला) करके बारह हजार बार जप, जाप पूर्ण होने के बाद १०८ बार नित्य जपना रहे, जाप पीली माला से जपने का है।

॥ रोगापहारिणी महाविद्या ॥

ॐ णमो [illegible] ॐ णमो [illegible] ॐ णमो [illegible] ॐ णमो [illegible] ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं ।

'[illegible] ([illegible]) रोगों [illegible] यह महाविद्या [illegible] १०८ [illegible]

तोला दूध मंत्रित करके सात या चौदह दिन तक बीमार पीवे या पीलावे तो रोग शांत होता है।

॥ दोष--निर्नाशिनी विद्या ॥

ॐ तीर्थंकर गणधर प्रसादात् एष योगःफलतु। ॐ ॐ नमो उग्गतव-चरण परिणं, ॐ नमो हिततवाणं, ॐ नमो तत तवाणं ॐ नमो पडिमा--पडिवन्नाणं. एएसि पर विज्झापहारणे पसिज्जउ स्वाहा।

यह महाविद्या १०८ वार सदा पढते रहे, किसी तरह के देव दोष का दिल में शक हो तो इस विद्या के पढने से दूर हो जाता है।

॥ ग्रह--शान्ति ॥

ग्रह दशाओं में जिसको सूर्यग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख वैठ कर ७००० जाप जपे, लाल रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मप्रभवे मम ग्रह-शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ग्रह दिशाओं में जिसको चन्द्रग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख वैठ १६००० जाप जपे, सफेद रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमश्चन्द्रप्रभवे मम ग्रहाशांतिं कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको मंगलग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ ८००० जाप जपे, लाल रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यप्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा॥

ग्रहदशाओं में जिसको बुध ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ १००० जाप जपे, पीले रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्री नमः शांतिनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा॥

ग्रहदशाओं में जिसको गुरु (बृहस्पति) ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख बैठ १९००० जाप जपे, पीले रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो महावीर प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको शुक्र ग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ १९००० जाप जपे सफेद रंग की माला से

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सुविधिनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा॥

ग्रहदशाओं में जिसको शनि ग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख बैठकर २३००० जाप जपे श्याम रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो मुनिसुव्रत प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको राहु ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठकर १८००० जाप जपे श्याम रंग की माला से।

तोला दूध मंत्रित करके सात या चौदह दिन तक बीमार पीवे या पीलावे तो रोग शांत होता है।

॥ दोष--निर्नाशिनी विद्या ॥

ॐ तीर्थंकर गणधर प्रसादात् एष योगःफलतु। ॐ ॐ नमो उग्गतव-चरण परिणं, ॐ नमो हिततवाणं, ॐ नमो तत तवाणं ॐ नमो पडिमा--पडिवन्नाणं, एएसि पर विज्झापहारणे पसिज्जउ स्वाहा।

यह महाविद्या १०८ बार सदा पढते रहे, किसी तरह के देव दोष का दिल में शक हो तो इस विद्या के पढने से दूर हो जाता है।

॥ ग्रह--शान्ति ॥

ग्रह दशाओं में जिसको सूर्यग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ कर ७००० जाप जपे, लाल रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मप्रभवे मम ग्रह-शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ग्रह दिशाओं में जिसको चन्द्रग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख बैठ १६००० जाप जपे, सफेद रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमश्चन्द्रप्रभवे मम ग्रहाशांतिं कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको मंगलग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ ८००० जाप जपे, लाला रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं वासुपूज्यप्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।।

ग्रहदशाओं में जिसको बुध ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ १००० जाप जपे, पीले रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमः शांतिनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।।

ग्रहदशाओं में जिसको गुरु (बृहस्पति) ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख बैठ १९००० जाप जपे, पीले रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो महावीर प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको शुक्र ग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठ ११००० जाप जपे, सफेद रंग की माला से

ॐ ह्रीं श्रीं नमः सुविधिनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।।

ग्रहदशाओं में जिसको शनि ग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र उत्तर दिशा सन्मुख बैठकर २३००० जाप जपे श्याम रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो मुनिसुव्रत प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं में जिसको राहु ग्रह हो वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठकर १८००० जाप जपे श्याम रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो ऽरिष्टनेमिनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांतिं कुरु २ स्वाहा।

ग्रहदशाओं जिसको केतुग्रह हो, वह निम्नोक्त मंत्र पूर्व दिशा सन्मुख बैठकर १७००० जाप जपे पीले रंग की माला से।

ॐ ह्रीं श्रीं नमः पार्श्वनाथ प्रभवे मम ग्रह-शांति कुरु २ स्वाहा ॥

नोट—जो नवग्रह के जाप बतलाए हैं वे सब जपे ५ तथा ७ दिन में ज्यादा से ज्यादा ६ दिन मे पूर्ण कर लेना चाहिए।

लोगस्स का कल्प

ऐं ओं ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहन्ते कित्तइसं, चउविसं पि केवली ममं मनस्तुष्टिं कुरु २ ॐ स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को पूर्व-दिशा की ओर खडे हो कर १०८ वार काउसग्ग करे। यह काउसग्ग (कायोत्सर्ग-ध्यान) १४ दीनों तक होता रहना चाहिये। १४ दिनों में एक वार भोजन ग्रहण करना चाहिये। भूमि पर शयन करे। ब्रह्मचारि रहे। ऐसा करने से मान माहात्म्य में वृद्धि हो चोरादि का भय नष्ट हो तथा सिद्धि सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं, उसभमजियं च वन्दे, संभवमभिनन्दणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं चन्दप्पहं वन्दे स्वाहा ।

विधि–इस मंत्र को १०८ वार पद्मासन से जपे । उत्तरदिशा में मुख रक्खे। सोमवार से आरंभ हो । मौन भी हो । ७ दिन तक जाप करे । एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य-पालन भूमि शयन करे । सफेद पदार्थ का भोजन में ग्रहण करे। ऐसा करने से मित्रता में वृद्धि संभव है ।

ॐ ऐं ह्रों सं् क्ष्मीं सुविहिं च पुप्फदन्तं सियलसिज्झंस-वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं धम्मं सन्ति च वंदामि कुंथु अरं च मल्लि वन्दे मुणिसुव्वयं च स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को १०८ वार जपे। जाप लाल माला से होना चाहिये। ऐसा करने से शत्रु का दवाव कम होता है, संग्राम में विजय प्राप्त होती है ।

ॐ ह्रीं श्री मम नमि–जिणं च वंदामि, रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च मनोवञ्छित पुण्य २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि—इस मंत्र का जाप १२००० पीली माला से पूर्व की ओर मुंह करके करना चाहिये। ऐसा करने से परि प्रतिष्ठा का लाभ, डाकिनी शाकिनी का भयनाश

लिखकर गले में डालने से सर्व विघ्न ज्वरों का नाश होता है।

ॐ ह्रीं ह्रूं एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीण-जरमरणा। चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु स्वाहा।

विधि—इस मंत्र को ऊर्ध्व-दिशा में मुख करके, पूर्वदिशा की तरफ हाथ जोड़कर ४५०० बार जाप करे। तीन बार वन्दना करे, ऐसा करने से सर्व देवता प्रसन्न रहते हैं। सर्व विधि सुखों की प्राप्ति होवे।

ॐ ॐ अंबराय कित्तिय वंदिय-महिमा जे लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिन्तु स्वाहा।

विधि-इस मंत्र को उत्तरदिशा की ओर मुंह करके १५००० जाप जपने से समाधि मरण की प्राप्ति हो, देवताओं का नम-स्करणीय हो। सर्व प्रकार से जय जयकार की प्राप्ति करें।

ॐ ह्रीं ऐं औं जीं जीं चन्देसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु मम मनोवाञ्छित पूरय २ स्वाहा।

विधि—इस मंत्र का १००० बार पूर्वदिशा की ओर मुंह करके पाठ करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। पाठक सर्व-पूज्य हो जाता है।

———

गृह-शांति-स्तोत्र

गुरुदेवं नमस्कृत्य ग्रह-शान्ति वदाम्यहम् ।
विधिवज्जपमात्रेण, समाधि लभते नर ॥ १ ॥
जन्मस्थानेऽथवा राशौ, ग्रसन्ति ग्रहराशयः ।
तदैक-भक्त जपतः समाराध्यतु खेचरान् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं हुं ऋषभादि-वर्द्धमान-जिनेश्वराः ।
रक्षन्तु मां सदा देवाः, मन्दादिग्रह-विघ्नतः ॥ ३ ॥
शनिराहुश्च कुतुश्च, कुस्थानं भजते यदा ।
मुनिसुव्रतनेमिनां, सुखं वीजाक्षरैर्जपात् ॥ ४ ॥
मंगले विमलं ध्यायेत् गुरौ ध्यायेच्च पार्श्वकम् ।
शुक्रे सुमति देवं च, चन्द्रे चन्द्रप्रभं मुदा ॥ ५ ॥
बुद्धे सुविधिनाथं च सूर्येऽरं मनसा जपेत् ।
शेषा जिनवराः सर्वे, रक्षन्तु मम गात्रकम् ॥ ६ ॥
भाले वाम-भुजे नाभौ, दक्षिणे करयोः पुनः ।
पश्चादष्टदले चित्रे, ध्यायेत वीजजिनेश्वरम् ॥ ७ ॥
रोग शोकौ च दारिद्रयं, चित्त विक्षेप-कारकम् ।
आधि-व्याधि-उपाधिश्च क्षयं यांति न संशयः ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीं हुं ह्रां चैतानि संयोज्य प्रभु नामतः ।
जपेत् त्रिसंध्यं संगोप्य, चाष्टोत्तरं शतं मुदा ॥ ९ ॥
डाकिनी शाकिनी त्याद्वी, दुष्ट-सर्पाश्च सर्वथा ।
ग्रहैः कृतानि विघ्नानि नश्यति ध्यानतो जिनै ॥१०॥

चक्रेश्वर्यादि देवश्च नित्यं स्थिर्यंतु मेऽनिशम् ।
देवी काली महाकाली सानुकूला जिनाख्यतः ११.
गृहश्रेणि प्रभुध्याना—दनुगृह्णाति सर्वथा ।
स्वप्रतिज्ञं ब्रवीति चासिलालो मुनिर्व्रती ॥ १२ ॥
शनि-रवि-शशि-भौमः, सोम्य-जीवौच-शुक्रः ।
गगन-चर-गणोऽयं सिद्धि-सौभाग्य-सौख्यम् ॥ १३ ॥
जिनपति—जपनान्मे तुष्टिं पुष्टिं ददातु ।
मम जयविजयं स्वाहान्तमों ह्रीं पुनः श्रीं ॥ १४ ॥